श्री सम्यक्त्व मूल बार व्रतनी टीप.

हिंदुस्थानी भाषामां

पंडित श्री उद्योतसागरगणिविरचित,

तेहु

गुर्जरभाषामा भाषांतर करीने

समस्त सम्यकदृष्टि शुद्ध श्रद्धायुक्त सुज्ञजनोने
भणवा वाचवाने योग्य जाणी

शा० केशवजी रामजीये

श्री मुंबापुरीमध्ये

निर्णयसागराभिध मुद्रायंत्रमा मुद्रित करावी छे

संवत् १९३६ ना आषाढ शुद्ध प्रतिपदा गुरुवासर

सने १८८०

॥ श्री ॥

जैनधर्मो जयतितराम्.

॥ श्रीकच्छदेशस्य कोठारेति नाम्ना प्र
सिद्धग्रामनिवासी सुवणिकुलोत्पन्न शा०
"नागशी शिवजी" तत्पत्नी बाई
"वाल बाई" प्रसिद्ध नाम "प्रेमा बाई"
तेठथें चतुर्विध श्रीसंघने पठनपाठनार्थे
आ पुस्तक, अर्पण कर्युं छे ॥

॥ श्री गौतम गुरु भ्योनमः ॥

अथ

श्री श्रावकना बार व्रतनी टीप प्रारभ्यते

॥ दोहरा ॥

सदा सिद्ध भगवानके, चरण नमुं चित लाय,
श्रुतदेवीपुनी समरिये, पूजुं ताके पाय ॥ १ ॥
करुं सुगम भाषा सही, बारह व्रत विस्तार,
भिन्न भिन्न भेदे करी, भव्य जीव उपगार ॥ २ ॥
पंचाणु व्रत प्रथमते, तीन गुण व्रत जाण,
शिक्षा व्रत चारु मिली, बारह व्रत ज्यु वखाण ॥३॥
शास्त्र सुगुरु उपदेश सुनि, धारे व्रत शुभ चाल,
ता घरि जश सुख संपदा, होवे मंगल माल ॥ ४ ॥
बुध उद्योत सागर गणी, अपनी मति अनुसार,
विधिश्रावकके व्रततणी, टीपलिखुं निरधार. ॥ ५ ॥

त्यां प्रथम सम्यक्त्वरूप लिखेछे ते समकितना बे भेदछे एक व्यवहार समकित अने बीजो निश्चय समकित अंहीसम्यक्त्व शब्द नुं अर्थ लखेछे (*तत्वार्थ श्रद्धान सम्यक्त्वं*) तत्व एटले जे यथार्थ स्वरूप विज्ञान पूर्वक श्रद्धा तेने सम्यक्त कहीए, ते तत्व त्रण प्रकारनु छे एक देव तत्व, बीजुं गुरु तत्व, त्रीजुं धर्म तत्व, अने वली ए त्रणे तत्वनी सदहणा एटले जे साची प्रतित तेना बे भेदछे एक व्यवहारथी अने बीजी निश्चयथी तेमा प्रथम व्यवहारथी शुद्ध देव तत्वनी सदहणा देखाडे छे

एमां देवतो श्री अरिहंतजी जेमना अढारे दोष क्षय पाम्या छे. ते अढार दोषना नाम नीचे प्रमाणेछे.

प्रथम अज्ञान दोष, बीजो क्रोध दोष, त्रीजो मान दोष, चोथो मा या दोष, पांचमो लोज दोष, बठो अविरति दोष, सातमो हास्य दोष, आठमो रति दोष, नवमो अरति दोष, दशमो जय दोष, अगीआर मो शोक दोष, बारमो डुगंबा दोष, तेरमो निंदा दोष, चउदमो काम दोष, पन्नरमो अंतराय दोष, सोलमो मोह दोष, सत्तरमो मि थ्यात्व दोष तथा अढारमो निद्रा दोष. ए अढार दोष जेना मटी ग या बे, अने ए अढार दोषनो नाश थवाथी अढार गुण प्रगट थ याबे, जेमने रत्नत्रयी जे ज्ञान दर्शन चारित्र ते क्षायक जावे थ ईबे, जेमने अनंत चतुष्टयी संपूर्ण प्रगटीबे, जेनाथी घनघाती कर्म नी सत्ता विघटी बे, जे जिन चारे निकायना देवताउने अने चो सठ देवेंद्र तथा नरेंद्र जे चक्रवर्त्यादिक तेने पूजनीक बे, तथा जे चोत्रीश अतिशयेकरी युक्तबे, अने पांत्रीश गुण युक्त वाणीवडे देश नादेबे, जेमना आठ महाप्रातीहार्य शोजायुक्त सदा विराजेबे, त था जेमनी एवी प्रजुता जगत्रयातिशयरूप, बल, ऐश्वर्य, रु द्धि, सिद्धि, बुद्धि, जाति तथा कुलादि जावे उत्कृष्टबे. तो पण मददोष नो जेमने स्पर्श नथी वली जे अगिलाण पणे यथार्थ अने निर्दो ष एवी सकल जगत जीवने उपकारी देशना देबे, वली ज्यां श्री अरिहंतजी विचरे त्यां फरती सवासो योजनमां इति उपद्रव नि वर्त्ते, ते इति उपद्रव सात प्रकारनाबे. पहेलो वर्षानी अतिवृष्टि, बीजो अनावृष्टि, त्रीजो उंदर प्रमुख जीवादिकनी बहुज उत्पत्ती थाय, चोथो पतंग पक्षी तोता तीड प्रमुख घणा थाय, पांचमो मरकी जेनाथी वमनादिक विकारेकरी घणा मनुष्यादिक मरण पामे, बठो स्वचक्र ते पोताना देशसंबंधी राजाउनुं सैन्य विग्रह करे अने सातमो परचक्र एटले अन्यदेशनुं आवेलुं कटक युद्ध हेतुए परस्पर लढाइथी विग्रह उपद्रव करे. ए प्रमाणेनी साते इति जे मना आगमनेकरी नाश पामेबे एवा श्रीअरिहंतजीबे. वली कृत

कृत्य थयाथी जेमने कोइ साधननी न्यूनता रही नथी, जे मनी निर्विकारी शान्त मुद्रा जोवाथी काम, क्रोध, लोभ अने मोहादिक अनादिना दोष मटे, अंतरमा संवरनी शैली प्रगटे, जेना वचन सांभलतांज अनादिनी मिथ्या भ्रम भूल मटे जे श्रीअरिहंतजी चारे निक्षेपे सकल जीवने हितकारीछे.

चार निक्षेपा ते आ प्रमाणेछे.

प्रथम नाम निक्षेपो एटले श्रीअरिहंतजीनुं नाम जाणवुं.जेम नमो अरिहंताण एटलुं नाम मात्र आराधवाथी अनंतजीव मुक्ति पाम्या

बीजो स्थापना निक्षेपो एटले जे श्री अरिहतजी सकल दोषना चिन्होए रहित, निरुपम, सहज सुभग, समचतुरस्र संस्थानीय एवुं जे पद्मासन काउस्सग मुद्राते जिन बिंबछे, तेने श्रीअरिहंतजीनो स्थापना निक्षेपो कहिए ते निःकामी लोकोत्तर स्थापनारूप जिन मुद्रानां दर्शने करी सेवा अर्चाए करी अनत जीव मुक्ति पाम्या.

त्रीजो द्रव्य निक्षेपो ते आवीरीते के, जेणे जिन पद निकाचत कर्युं, पण पाम्यानथी, अने आगल जिनेश्वर थशे एवो जे जीवछे तेने द्रव्य अरिहंत कहिए एना भावी गुणनु भूत काले उपचार करीने वदन, नमन, स्मरण, पूजन अने स्तवन करता पण अनेक जीव मुक्ति पाम्या.

चोथो भाव निक्षेपो एटले आप जगत उद्धरण समर्थ, चवन जन्मादि कल्याणक महोत्सव पूर्वक उत्तम कुलमा अवतार पामीने, भोग कर्म सीम उदय अव्यापक रीते भोग विघ्न मटाडीने लोकांतिक देवकृत संकेत अवसरे वरसीदान सवा पहोरसुधी नित्ये देइ करीने, सयम ग्रहीने सम्यक्ज्ञान क्रियावडे चारे घनघाती कर्म क्षय करीने केवल ज्ञान पामे. ए वखत चलितासन, चोसठे इंद्र सपरिवार आवी करीने अष्ट महाप्रातिहार्य युक्त समवसरण बनावे अहींया रत्नमय सिंहासन उपर बेसीने निरवद्य देशनावडे

भव्य जीवने प्रतिबोध करी चतुर्विध संघनी स्थापना करीने तीर्थप्र वर्त्तावे. सकल जीवने देशनावडे अनुग्रह करे. एवा जे समोसरणमां विराजमान श्री सीमंधरादि विहरमान परमेश्वर तेने भाव अरिहंत कहिए, एमना चर्णाविंदनी सेवाथी पण अनंत जीव मुक्ति पाम्या.

एवा जे श्री अरिहंत देवाधिदेव, महा गोप, महा माहण, महा निर्यामक, महा सार्थवाह, महावैद्य इत्यादि बिरूदधारी, सकल स मकेति जीवना प्राणाधारक, सकल मुनि मनमोहन एवा जे श्री जिनेश्वर अरिहंत देव तेमने हुं देवकरी सरदहुं, एमनी सेवा करुं, एमनी आज्ञा शिरधरुं, इतिश्री व्यवहार शुद्ध देवतत्व. समाप्त.

हवे निश्चय देव तत्व कहेछे.

शुद्धात्म स्वरूप वस्तुगते वस्तुरूप प्रतीतिवडे शुद्ध तत्व श्रद्धा प्रगटे, ते निश्चय देव तत्वछे. एटले वरण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द, रूप, क्रियादिथी रहित, शरीरथी भिन्न, योगथी भिन्न, अतिंद्रिय, अविनाशी, अनुपाधी, अबंधी, अक्लेशी, अमूर्ति, शुद्ध चैतन्य, ज्ञा न, दर्शन, चारित्रादि अनंतगुण भाजन, सच्चिदानंद स्वरूपी एवुं मारुं आत्मतत्वछे, एम जे जाणवुं तेने निश्चे देवतत्व कहेछे.

हवे बीजा गुरुतत्वमां प्रथम व्यवहारथी शुद्ध गुरु कहेछे.

जे पांच समिते समिता, त्रण गुप्तेकरी गुप्ता, समतात्मरमणे रमता, पंचेंद्रिय दमता, अनेक दुःक्कर परीसह उपसर्ग सर्व क्ष माथी खमता, अनेक स्तुति निंदा सांभलवानुं तजीने समतारूप शुभ ध्यानाग्निवडे कर्मरूपी काष्ठने बालता, अनादि परचित विभाव परिणतिने वमता, जेने नहिं माया नहिं ममता, प्रतिक्षणे गुरु चर्णाविंदे नमता, प्रतिक्षणे नव नव संयम स्थाने चढता, प्रति क्षणे ज्ञान दर्शनादि गुण पर्याये वधता, पोतपोतानी शक्ति प्रमा णे नवीन नवीन तप क्रिया करता, प्रतिदिन आत्मवीर्योल्लासयुक्त ज्ञान क्रियाभ्यास वडे लब्धि प्रमुख गुणे वर्त्तता, पंचांगी प्रमाण शु

द्रव्यादिकथी अनुसरीने शुद्ध चारित्राचार पालनरूप प्रवहणे क
रीने संसार समुद्र तरता, सकल आशंसा दोष त्यागी एक मुक्ति
पद साध्य मन धरता, त्रिकरण शुद्धे एक विध श्री जिनाज्ञाना प्रति
पालक, द्विविध धर्मना प्रकाशक,त्रिविध रत्न त्रयीना धारक, चतुर्वि
ध कषायना जीपक, पंचविध शुभभावनाये युक्त थका पाच महाव्र
तना धुरंधर धोरी, ठविध ठकायना परम रक्षक, सप्तविध नय
स्थानथी रहित, अष्टविध मदस्थानकना जीपक, नवविध ब्रह्मगु
प्तिना धारक, दशविध यतिधर्म प्रतिपालवामां सावधान एकाद
शांग सूत्रना अर्थ विस्तारे पठन करवामा रसिक, इत्यादि उत्तरो
त्तर अगणित गुण गणालंकृत गात्र, परम पात्र, परमोपकारी, अ
ष्टादश सहस्र शीलांगरथधारी,नव कोटी विशुद्ध प्रत्याख्यान धारी,
अनियत नव कल्पविहारी, सडतालीश दोषरहित शुद्धाहार आ
हारी, जेनी परीक्षा कसोटीए कस्या जात्यवत सोनानी परे अ
धिक अधिक गुणना रंगधारी, शत्रु मित्र समचित्तदृष्टि, जे कुक्षि पू
रक संबलथी नहीं अधिक वित्त, परमगुणी,परमदयाल, जगतबंधु,
जगहितकारी, भारन्ड पंखीनी पेरे अप्रमत्तचारी, पृथ्वीनी पेरे सर्व
सहन करनारा, मधुकरी वृत्तिनीपेरे मुधा जीवी, आकाशनीपेरे निरा
धार गतप्रतिबंधी, अंतरमा अने बाह्यमा, सुता तेम जागता, दिवश
मा तेम रात्रीमां, एकाकीमा तेम महोटी परखदामा जेमने एकज प्र
वृत्तिछे. एवा मुनिराज भविक जीवोने ससार समुद्र तारवाने जेमना
चरण बउसफरी वहाण समान स्वपरोपकारी छे. एवा आजना वख
तमा पण पंदर कर्म भूमिमा सर्व मलीने बे हजार कोडी साधु व
र्त्तेछे. तेमने हुं गुरुतत्व करी सर्दहुं, एमनी आज्ञा मागु, एमने पर
मपात्र बुद्धिए पडिलाभुं, एमनी क्रियानी अनुमोदना करुं, एवा शुद्ध
साधु मारा गुरुतत्वछे इति व्यवहार शुद्ध गुरुतत्व समाप्त

जव्य जीवने प्रतिबोध करी चतुर्विध संघनी स्थापना करीने तीर्थप्र वर्त्तावे. सकल जीवने देशनावडे अनुग्रह करे. एवा जे समोसरणमां विराजमान श्री सीमंधरादि विहरमान परमेश्वर तेने जाव अरिहंत कहिए, एमना चर्णारविंदनी शेवाथी पण अनंत जीव मुक्ति पाम्या.

एवा जे श्री अरिहंत देवाधिदेव, महा गोप, महा माहण, महा नियामक, महा सार्थवाह, महावैद्य इत्यादि बिरूदधारी, सकल स मकेति जीवना प्राणाधारक, सकल मुनि मनमोहन एवा जे श्री जिनेश्वर अरिहंत देव तेमने हुं देवकरी सरदहुं, एमनी सेवा करुं, एमनी आज्ञा शिरधरुं, इतिश्री व्यवहार शुद्ध देवतत्व. समाप्त.

हवे निश्चय देव तत्व कहेछे.

शुद्धात्म स्वरूप वस्तुगते वस्तुरूप प्रतीतिवडे शुद्ध तत्व श्रद्धा प्रगटे, ते निश्चय देव तत्वछे. एटले वरण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द, रूप, क्रियादिथी रहित, शरीरथी जिन्न, योगथी जिन्न, अतिंद्रिय, अविनाशी, अनुपाधी, अबंधी, अक्लेशी, अमूर्ति, शुद्ध चैतन्य, ज्ञा न, दर्शन, चारित्रादि अनंतगुण जाजन, सच्चिदानंद स्वरूपी एवुं मारुं आत्मतत्वछे, एम जे जाणवुं तेने निश्चें देवतत्व कहेछे.

हवे बीजा गुरुतत्वमां प्रथम व्यवहारथी शुद्ध गुरु कहेछे.

जे पांच समिते समिता, त्रण गुप्तेकरी गुप्ता, समतात्मरमणे रमता, पंचेंद्रिय दमता, अनेक डुःक्कर परीसह उपसर्ग सर्व क्ष माथी खमता, अनेक स्तुति निंदा सांजलवानुं तजीने समतारूप शुज ध्यानाग्निवडे कर्मरूपी काष्ठने बालता, अनादि परचित विजाव परिणतिने वमता, जेने नहिं माया नहिं ममता, प्रतिक्षणे गुरु चर्णारविंदे नमता, प्रतिक्षणे नव नव संयम स्थाने चढता, प्रति क्षणे ज्ञान दर्शनादि गुण पर्याये वधता, पोतपोतानी शक्ति प्रमा णे नवीन नवीन तप क्रिया करता, प्रतिदिन आत्मवीर्योल्लासयुक्त ज्ञान क्रियाजास वडे लब्धि प्रमुख गुणे वर्त्तता, पंचांगी प्रमाण शु

छस्या छादर्थी अनुसरीने शुद्ध चारित्राचार पालनरूप प्रवहणे क
रीने संसार समुद्र तरता, सकल आशंसा दोष त्यागी एक मुक्ति
पद साध्य मन धरता, त्रिकरण शुद्धि एक विध श्री जिनाज्ञाना प्रति
पालक, द्विविध धर्मना प्रकाशक,त्रिविध रत्न त्रयीना धारक, चतुर्वि
ध कषायना जीपक, पंचविध शुजनावनाये युक्त थका पाच महाव्र
तना धुरधर धोरी, छविध छकायना परम रक्षक, सप्तविध नय
स्थानथी रहित, अष्टविध मदस्थानकना जीपक, नवविध ब्रह्मगु
प्तिना धारक, दशविध यतिधर्म प्रतिपालवामा सावधान एकाद
शाग सूत्रना अर्थ विस्तारे पठन करवामा रसिक, इत्यादि उत्तरो
त्तर अगणित गुण गणालकृत गात्र, परम पात्र, परमोपकारी, अ
ष्टादश सहस्र शीलागरथधारी,नव कोटी विशुद्ध प्रत्याख्यान धारी,
अनियत नव कल्पविहारी, सडतालीश दोषरहित शुद्धाहार आ
हारी, जेनी परीक्षा कसोटीए कस्या जात्यवत सोनानी परे अ
धिक अधिक गुणना रगधारी, शत्रु मित्र समचित्तदृष्टि, जे कुक्षि पू
रक संबलथी नहीं अधिक वित्त, परमगुणी,परमदयाल, जगतबंधु,
जगद्दितकारी, जारुम्ड पंखीनी पेरे अप्रमत्तचारी, पृथ्वीनी पेरे सर्व
सहन करनारा, मधुकरी वृत्तिनीपेरे मुधा जीवी, आकाशनीपेरे निरा
धार. गतप्रतिबंधी, अंतरमां अने बाह्यमा, सुता तेम जागतां, दिवश
मां तेम रात्रीमा, एकाकीमां तेम महोटी परखदामां जेमने एकज प्र
वृत्तिने एवा मुनिराज जविक जीवोने संसार समुद्र तारवाने जेमना
चरण वउसफरी वहाण समान स्वपरोपकारी छे, एवा आजना वख
तमा पण पंदर कर्म जूमिमा सर्व मलीने बे हजार कोडी साधु व
र्त्तेछे. तेमने हुं गुरुतत्व करी सईहुं, एमनी आज्ञा मागुं, एमने पर
मपात्र बुद्धिए पडिलाजुं, एमनी क्रियानी अनुमोदना करुं, एवा शुद्ध
साधु मारा गुरुत्वछे. इति व्यवहार शुद्ध गुरुतत्व समाप्त

हवे निश्चयथी गुरुतत्व कहेछे.

निश्चय गुरुतत्व ते शुद्धात्म विज्ञान पूर्वक छे. जे हेयोपादेय उपयोगयुक्त परिहार प्रवृत्तिज्ञान तेने निश्चे गुरुतत्व कहीए.

हवे त्रीजा धर्मतत्वमां प्रथम व्यवहार धर्म कहेछे.

श्रीअरिहंत देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमां बेसी करीने बार पर्षदानी वचमां श्रीगणधर पद धारीने त्रिपदी दान पूर्वक द्वादशांगीनी रचना करी, त्यां यथार्थ अर्थना कर्त्ता श्रीअरिहंतजी अने ते अर्थानुयायी सूत्रना कर्त्ता श्रीगणधर तेने आगम कहिए ते आगममां प्रकाश्या जे भाव सकल जीवोने हितकारी दुर्गति पडतां जीवने राखे तेने धर्म कहिए ते धर्म स्वरूपना बे भेद छे एक शुद्ध व्यवहार धर्म, बीजो शुद्ध निश्चय धर्म. त्यां प्रथम व्यवहार धर्म ते श्रीजिनागामोक्त शुद्ध दया स्वरूप विज्ञान पूर्वक जे धर्म प्रवृत्तिनु करवुं तेने कहिए छैए.

अहिंयां वली दयानुं स्वरूप लखीए छैए.

दयाना आठ प्रकार छे. द्रव्यदया, भावदया, स्वदया, परदया, स्वरूपदया. अनुबंधदया, व्यवहारदया तथा निश्चयदया. हवे अनुक्रमे ए आठे प्रकारनी दयानुं संक्षेप वर्णन करीये छीये.

प्रथम द्रव्य दया एटले जयण पूर्वक प्रवृत्तिए करी जे जीवरक्षा करवी ते जैनमार्गिनो कुलधर्मछे. एने द्रव्यदया कहिए.

बीजी भाव दया एटले बीजा जीवने गुण प्राप्तिनी बुद्धे तथा दुर्गतिनो पतनोद्धारण अंतर अनुकंपाबुद्धि सहित उपदेशादिक करवो तेने भाव दया कहिए.

त्रीजी स्वदया एटले आपणो आत्मा अनादि कालनो मिथ्यात्व अशुद्ध उपयोगथी अशुद्ध श्रद्धान पूर्वक अशुद्ध प्रवर्त्तिए करीने कषायादिक भाव शस्त्रथी प्रतिसमये ज्ञानादिक गुणघात रूप भाव प्राण हणायछे; एवुं श्री जिनवचनना उपकारे जाणी करीने

स्वसत्ता जे परसत्ता प्रवृत्ति परिहाररूप, शुद्धोपयोगधारी, विषय क पायथी दूर रहे. शुभाशुभ उदये अव्यापक रहे. अहींयां चेतना स्व रूप सन्मुखछे, तेने सुख दुःखनी प्राप्ति ते कर्मोदयिक छे, पण मन मां हर्ष विषाद नरहे, प्रतिक्षण कर्मबंधनी चिंता रहे ते स्वदया. ए स्वदया वाळो जीव पोतानी चेतना समारवाने जिन पूजा, तीर्थ यात्रा, रथ यात्रा, प्रमुख शुभाश्रव प्रवृत्ति करीने जिनगुण गान ब हुमान पूर्वक पोतानी चेतन तत्वावलंबी करे, पुद्गलावलंबी पणुं मटाडे, जोके ए शुभाश्रवमा बाहेरथी जोतां तो हिंसाछे, पण ए नि मित्तथी अनादिनी विभाव चाल मटे, गुणी जे श्री अरिहंतादिक तेना बहुमाने करीने आत्मा गुणग्राही थाय, अने ज्यारे गुण ग्राही थाय त्यारे ते ज्ञानी पण थाय, ते माटे सर्व साधकोने ए स्वदया ते परम साधन छे साधु पण नवकल्पी विहार करे, उपदेशआपे, चर्चा करे, पूंजन प्रमार्जन करे ते स्वदयानी पुष्टिने वास्ते करे. अहींयां योगनी चपलताए करीने आश्रव थाय खरो, पण चेतना स्वरूपानुयायी रहे, जिनाज्ञापळे, कषाय स्थान मंद पडे, उच्छकता मटे, यथा छंदी पणुं मटे, धर्म प्रवृत्ति चढे तेथी स्वदया निमित्त जे शुभाश्रव तेने साधु पण पोतानी दशा माफक आदरे

चोथी परदया ते ए के, छए कायना जीवोनी रक्षा करवी जे का रणे सर्व जीव जीव्युं चहायछे, सुखना अर्थी सर्व छे, जेम आपणो जीव दुःखथी फरे छे तेम सर्व जीव दुःखथी भय पामेछे, एवुं जा णीने जीवनी दया करे तेने परदया कहीए. वळी ज्यां स्वदयाछे त्यां परदया नियमा छे, अने ज्या परदयाछे त्यां स्वदयानी भजना छे

पांचमी स्वरूपदया ते ए के आ लोक तथा परलोकना पुद्गलीक सुखनी आशामा तथा देखा देखीये करीने जीव रक्षा करे तेने स्व रूपदया कहीए. आ दयावडे करीने तरत तो पुद्गलीक सुख पामेछे

पण पछी मेडकाना चूर्णनी पेरे संसार वधे आ स्वरूप दया विषे देखवामां दयाछे पण ज्ञावथी हिंसाछे.

छठी अनुबंध दया एटले श्रावक बहु आमंबर करीने मुनि वंदनने माटे जाय, उपकार बुद्धिवडे बीजा जीवोने आक्रोश ताडनादिक करीने शिक्षा आपे, सुमार्गे लावे कुमार्ग तजावे आमां उपरथी जोतां हिंसाछे पण आगल पोताना अने पारका जीवने लाज्ञ थाय तेथी अनुबंधनुं फल दयाने पामे. साधु तथा आचार्य पण पोताना शिष्य शिष्यणिने सारणा, वायणा, चोयणा तथा पडिचोयणादिक करे शासनना प्रत्यनीकने पोतानी लब्धिए करी शिक्षा आपे कदापि पंचेंद्रि जीवने पण शुद्ध मार्गे प्रवर्त्तावववाने अर्थे शिक्षा करे, शासन स्थिर करे, ते अनुबंध दया कहिए.

सातमी व्यवहार दया एटले विधि मार्गानुयायी जयणा पाले, कम वेस नकरे, ज्ञुले नहीं ते व्यवहार दया कहिए.

आठमी निश्चय दया एटले शुद्ध साध्य उपयोगमां एकी ज्ञाव अज्ञेदोपयोग होय, साध्य ज्ञावमां एकता ज्ञान तेने निश्चय दया कहीए ए दया गुण गणे चढावे तेणे करी उत्कृष्टछे.

इत्यादिक अनेक प्रकार दया स्वरूप विज्ञान पूर्वक सूत्र, निर्युक्ति ज्ञाष्य, चूर्णि अने वृत्ति ए पंचांगी संमत्त प्रत्यक्षादि प्रमाण पूर्वक नैगमादिक नय शैली पूर्वक नामादि निक्षेप रचना पूर्वक स्यादस्ति नास्तिप्रमुख सप्तज्ञंगी स्वरूप रूप, यथार्थ विज्ञान पूर्वक ज्ञान क्रिया, तथा निश्चय व्यवहार, तथा द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक इत्यादिक उज्ञय ज्ञावमां यथावसरे अर्पितानर्पित नय निपुणताथी मुख्य गौणज्ञावे, उज्ञय नय सम्मत एवी शुद्धस्याद्वाद शैली विज्ञान पूर्वक श्री सिद्धांतोक्त दान, शील, तप, ज्ञावना, रूप शुज्ञ प्रवर्त्ति प्रवर्त्तन तेने व्यवहारथी शुद्ध धर्म कहीए.

हवे शुद्ध निश्चय धर्म कहेछे

शुद्ध निश्चय धर्म ते आत्मानी आत्मता जाणे, वस्तु स्वभाव ओलखे, जे आत्म द्रव्यछे ते शुद्ध चैतन्यतारूप असंख्यात प्रदेशी अमूर्त लोक प्रमाण, सर्व पुद्गलथी भिन्न, अखंड, अलिप्त, अनंत ज्ञान दर्शन चारित्र सुख वीर्य अव्याबाधादि अनंत गुणमयी, स्व गुण भोगी, अविनाशी, अनुपायी, अविकारी एवो मारो आत्म द्रव्य स्वभाव तेज उपादेयछे, एनाथी जे विलक्षण परपुद्गलादिक ते मारुं नथी; हुं तेनो नथी, ते पुद्गल जे वर्ण, गंध, रस फरसरूप ते ना पाच विकारछे. शब्द, रुप, रस, गंध, स्पर्श, ए पांचेना उत्तर भेद अनेकछे ए शब्दादि एकेक भेद वर्णादि चार चार भेद लइ रह्या छे आ लोकाकाशमा जे अजवाळुं छे; तथा अंधारुछे, शब्द जे उठेछे, सर्व रूपी वस्तुनो परछायो पडेछे, रत्नादिकनी काति पडेछे, शित पडेछे. छाया पडेछे, धूम्र पडेछे, ताप पडेछे, नानाप्रकारना रूप, रग, सस्थानना घाटनो नमुनो दीठामां आवेछे तथा नाना प्रकारना रूप, रग, संस्थाननी सुगंध तथा दुर्गंध आवेछे, नानाप्र कारना रसनी मजा छे, सर्व संसारी जीवोनी देह, भाषा, मननी कल्पना तथा प्राणना दश भेद छे, तथा पर्याप्तिना छ भेदछे, हा स्य, रति अरति, भय, शोक, दुगंछा. खुशवख्ती, उदासी, कदाग्र ह, द्वेष, लढाइ, कषाय, क्रोधादिक चार, साता, असाता, उंचपणुं, नीचपणुं, निद्रा, विकथा, सर्व पुन्य प्रकृति, सर्व पाप प्रकृति, रीझ, मोज, खीज, खेद छ लेश्या, लाभालाभ, यश, अपयश, मूर्खपणुं, चतुरता, स्त्री, पुरुष, अने नपुसक वेद, कामचेष्टा, गति, जाति इत्यादिक जे आठ कर्मना विपाकछे. ते सर्व जीवने अनुभव सिद्धछे.

बीजा पण सुक्ष्मपुद्गल जे इद्रिओथी अगोचर परमाणु आदि लइने अनेक भेदना अग्रहित एवा छुटा पुद्गल छे ए पुद्गलना सयोग थी चारे गतिमां जीव भटके छे, ए पुद्गलनो सग तेज संसारछे.

एना संयोगथी जीवना अनंत ज्ञान दर्शन चारित्रादिक अनंत गुण बगडे; एवी जे पुद्गल द्रव्यनी रचना छे ते मारो स्वभाव नथी, ए पुद्गल मारी जाती नथी, ए पुद्गलथी मारो संबंध नथी ए पुद्गल मारे त्यागवा योग्यछे पण आदरवा योग्यनथी. तथा जे धर्मास्तिकाय द्रव्यछे ते पण जीवनें तथा पुद्गलने गति सहायकारीछे; अने अधर्मास्तिकाय द्रव्य ते जीव पुद्गलने स्थिति सहायकारीछे; आकाश द्रव्य सर्वनुं भाजन अवगाहना दाइछे; काल द्रव्य नवपुरातनकारी वर्त्तना लक्षण वंतछे; एम ए चारद्रव्य जे छे ते मारे ज्ञेयरूपछे; एनाथी पण मारुं स्वरूप न्यारुंछे. तथा बीजापण संसारी जीव जे छे; ते पण पोत पोताना स्वभाव सत्ताना धणीछे. ए पण मारा ज्ञेयरूपछे. ए सर्वनाथी हुं न्यारोछुं. ए मारा संगी नहीं तेम हुं एमनो संगी नहीं. हुं मारी स्वभावसत्तानो धणी छुं. मारो स्वभाव सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्रादि रूप, अवन्ने अगंधे, अरसे, अफासे, चेयणगुणे, अनंत अव्याबाध, अनंत दान, अनंत लाभ, अनंत भोग, उपभोग, अनंत वीर्यादिक, अनंत गुण स्वरूपछे. तेमनी श्रद्धा भासन पूर्वक, गुणास्वादिकरूप चिदानंदनघन मारो स्वभावछे. एवो माहरो पूर्णानंद स्वभावछे तेने प्रकट करवाने व्यवहार नथथी, सर्व शुद्ध व्यवहार जे छे ते निमित्त मात्रछे. पण मुख्य तो मारा स्वभावमांज रमण करवुं तेज शुद्ध साधनछे, तेज धर्म छे. तथाचोक्तं श्रीउतराध्ययनसूत्रे ॥ वत्थुसहावो धम्मो ॥ इत्यादि विज्ञानपूर्वक चेतन प्रवृत्ति तेने निश्चय धर्म कहीए. ॥ इति धर्म तत्वं समाप्तम्.

ए त्रणे तत्वनी जे श्रद्धा निश्चल परिणति रूप प्रतित तेने सम्यक्त्व कहीए. ॥ यदुक्तं सिद्धांते । निस्संकं पावयणं ॥ जंजिणेहिं पवेइयं । तंतहा मेवसच्चं । एसमट्ठे सेसे अणट्ठे ॥ इत्यादि ते कारणे तत्वार्थ सर्दहणा तेपण सम्यक्त कहीए. अने एनाथी विपरीत वासना एटले तत्वार्थ अश्रद्धान अप्रतीत, अतत्वार्थ श्रद्धान ते मिथ्यात्व कहीए.

ए मिथ्यात्वना मूल चार नेद ठे. तेमां प्रथम परूपणा मिथ्यात्व एटले जिनवाणीथी विपरित प्ररुपे बीजुं प्रवर्त्तन मिथ्यात्व एटले मिथ्यात्वनीज करणी करे ते जाणवुं त्रीजुं परिणाम मिथ्यात्व एटले मनमा, परिणाममा विपरीत कदाग्रह रहे, शुद्धार्थ सरदहे नही. चोथु प्रदेश मिथ्यात्व एटले सत्तागत जे मिथ्यात्व मोहनीना कर्मदल ठे, तेने प्रदेश मिथ्यात्व कहीए. ए कर्म दल विपाकमा आवे त्यारे परिणाम मिथ्यात्व होय, अने ज्यां सुधी तेदलीक सत्तामां पड्या रहे त्यारे तो जीवने समकेत पण थाय.

हवे ए चारे मिथ्यात्वना उत्तरनेद एकवीशठे ते लखेठे.

१ प्रथम तो जिनप्रणीत जे शुद्ध निरवद्य धर्म तेने अधर्म कहे.

२ बीजो हिंसा प्रवृत्ति प्रमुख आश्रवमयी अशुद्ध अधर्म तेने धर्म कहे.

३ त्रीजो संवरनाव सेवनरूप जे मार्ग तेने उन्मार्ग कहे.

४ चोथो विषयादि सेवन रूप जे उन्मार्ग तेने मार्ग कहे

५ पांचमो सत्तावीश गुणेकरी विराजमान, काष्टना नावसमान, तरण तारण समर्थ एवा जे साधु तेने असाधु कहे.

६ ठठो आरंन परिग्रह, विषय कषाये नरेलो, लोन मग्न, कुवासना दायी, लोढाना तथा पाषाणना नाव समान, एवो जे अन्य लिंगी तथा कुलिंगी असाधु होय तेने सुसाधु कहे. पण एम न विचारे के जे पोते दोश थकी नरेलोठे ते बीजाने केवीरीते निर्दोषि करशे ? जेम पोते दारिद्री ठता बीजान धनपती क्यांथी करशे ?

७ सातमो एकेंद्रियादिक जे जीवोठे तेने अजीव करी माने.

८ आठमो काष्ट सुवर्णादिक अजीव पदार्थ ठे तेने जीवकरी माने.

९ नवमो मूर्त्तिवत एवा जे रुपी पदार्थठे तेने अरुपी कहे जेवी रीते स्पर्शवान वायुने अरूपी कहे; पण ते जो अरूपी ठे तो तेमां स्पर्श केमठे ? एवु विचार करे नही.

१० दशमो अरूपी पदार्थने रुपी कहे. जेवी रीते मुक्तिमा तेजनो

गोलो माने पण एम न विचारे के जे अरूपी चोज छे तेनुं तेज केम नजरमां आवे? एवो विचार न करे. ए दश भेद कह्या.

तथा पांच बीजां मूल भेदछे ते लखेछे.

१ जे पोतानी मतिमां आव्युं ते साचुं बीजुं सर्व जुतुं पण परीक्षा करवानी इछा राखे नही शुद्धा शुद्धनी खोल करे नही ते प्रथम अभिग्रहिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

२ सर्व धर्म साराछे सर्व दर्शन भलांछे सर्व कोइने वंदना करिए पण कोइनी निंदा करिए नही. एणे अमृत अने विष ए बन्ने समान गण्या ते बीजो अनभिग्रहिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

३ जे जाणी बुजीने जुतुं बोले, पहेला पोताना अज्ञानपणा थकी कांइ भूलपडे विपरीत प्ररुपणा करे तेवारे कोइ शुद्ध मार्गानुसारी जीव तेने कहे के आ तमे सिद्धांत विरोध बोलोछो तमे भूलोछो एवुं सांभले तेवारे तेने हठ आवे तेथी कुमति कदाग्रह कुयुक्ति करीने पोतानुं वचन राखवानी अपेक्षा करे पोते जुठो पडे तोपण नमाने ए पुरुष विराधक बहु भव भ्रमण करनारो जाणवो ए त्रीजो अभिनिवेश नामे मिथ्यात्व जाणवो.

४ जे जिनवाणीमां शंसय राखे एने पोताना अज्ञान दोष थकी सिद्धांतना गहनार्थमां खबर पडे नही त्यारे डगमगतो थको रहे जे ए केम हशे ए संशयिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

५ जे अजाण पणाने लीधे कांइ समजे नही ते अनाभोगिक मिथ्यात्व अथवा एकेंद्रीयादिक जीवोने अनादि कालनो लागी रह्योछे ते पण अनाभोगिक मिथ्यात्व जाणवो. ए बद्धा मलीने पूर्वेला दश भेद साथे मेलवता पंदर भेद मिथ्यात्वना थया.

हवे बीजा छ भेद लखेछे: एक लौकीक देव, बीजो लौकीक गुरु, त्रीजो लौकीकपर्व, चोथो लोकोत्तरदेव, पांचमो लोकोत्तरगुरु, अने छठो लोकोत्तरपर्व. ए छ भेद ववरीने कहेछे.

१ जे देव राग द्वेष थकी नरेलाछे, एक उपर मेहेरबान थाय छे, एकनो विनाश करेछे तथा स्त्रीयादिकना विलाशमा मग्न रहेछे, अनेक जातना हथीयारो हाथमां धारण करेलाछे, पोतानी प्रभु तामां कांइ न्यूनता नथी, हाथमां माला धारण करेछे, सावद्यजोग पंचेंद्रिय वधादिकनी चाहना करेछे एवा देवोने माने, पूजे, अने तेमना कहेला मार्गे यज्ञ याग अनेक प्रवृत्ति हिसामयी करे, तेने प्रथम लौकीक देवगत मिथ्यात्व कहिए एना अनेक नेदछे ते मि थ्यात्व सत्तरी प्रमुख ग्रंथो थकी विस्तारे जाणवा.

२ जे अढार पापस्थानकथी नरेलाछे, नवविध परिग्रहधारी, गृहस्थाश्रमी, एवा छता गुरुनाम धरावे ते जाणवा. तथा बीजा कुलिंगी जे नव नव प्रकारना नेष बनावीने आमंबर करें, बाह्य प रिग्रह त्याग करे, पण अन्यतर ग्रंथी छोडी नथी, अनादिनी जूल मटी नथी, शुद्ध साध्यनी उलखाण थइनथी, एवाने गुरु करी मा ने, तेनो बहुमान करे, एवाने शुद्धदान आपे, तेमां परमपात्र बु द्धि धरे, ते बीजो लौकीक गुरुगत मिथ्यात्व जाणवो.

३ आ लोके पुद्गलिक सुखनी इच्छाथी अनेक मिथ्यात्व क ल्पित लौकीकपर्व दिवश जेवाके दिवासो, रक्षाबंधन, गणेशचोथ, नागपंचमी, सोमप्रदोष, सोमवती, बुद्धाष्टमी, होली, दशेरा, प्र मुख शतपर्वने लाजदायी जाणीने श्रद्धायेकरी आराधे, द्रव्य व्यय करे,कुपात्रने दान आपे,ते त्रीजो लौकीक पर्वगत मिथ्यात्व जाणवो.

४ देव श्रीअरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकार सागर, परमेश्वर, परमपुज्य, सकलदोष रहित,सुद्ध निरंजन,तेनी स्थापना जे मूर्त्तिसा धिष्ठायक प्रतिमां तेने आ लौकिक पुद्गलिक सुखनी इच्छा धारणकरी माने के माहरुं कार्य थशे तो महोटी पूजा करीश, छत्रादिक चडा वीश, दीवाकरीश,रात्रि जागरण करीश, एवीरीते श्रीवीतरागनी मा नता करे अहो चिंतामणीना दातार पासेथी काचना कटकानी

मांगणी करवी तेकांइ युक्त नथी पण जेने कर्मोदयनी प्रतीत न थी ते व्यर्थ नूला नटकेछे पुण्योदय विना कांइ पण थतु नथी व्यर्थ निरंजन देवने पुज्ञलिक सुखनी आशा धारण करी माने ते चोथो लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व जाणवो.

५ जे साधु वेशधारी, निर्गुणी, जिनवचन उच्छापक, पोता नी मतिकल्पनायें करी अर्थनी देशनाना प्ररूपक, सूत्रार्थना संताडनार, एवा उत्सूत्र नाषण करनारां लिंगीउ तेमने गुरु बुद्धि यें करी बहुमान करे तथा जे सुसाधु, सद्गुणी, तपस्वी, सदाचारी, बहुक्रियावंत होय तेने आलोकना सुखनी चाहनाधरीने बहुमान करे अने एम विचारेजे एवागुणीनी अत्यंत सेवा करीशुं तो एम नी मेहेरबानी थकी धन ऋद्धि पामीशुं एवी इंडीय सुखनी इछा धा रण करीने तेमने माने ते पांचमो लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व.

६ कल्याणीकादिक पर्वदिवशें पुत्रादिकनी वांछनाए करीने अ रिहंत देवनुं आराधन करे ते छठो लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व.

एप्रमाणे सर्वमलीने मिथ्यात्वना एकवीश नेद थया तेने हुं परिहरुं परंतु एमां देवतत्वमां एटलो आगार के जे कुलनी परंपरा चाली आवीछे एवी जे गोत्रज कुलदेवतादिकनी पूजा, अने दीप पूजा प्रमूख विवाहादिक करणीने विषे जे करवी पडेछे तेनी ज यणाछे परंतु तेने शुन करणी जाणु नही.

अने गुरुतत्वमां कुगुरु जे अन्यलिंगी ब्राह्मणादिकछे जे वि वाहादिक जोडावे पराणावे तेना अधिकारीछे जेमनी परंपरानी वृत्ति लागेलीछे ते आवीने आसिरवाद आपे तेवारे तेमने लौकीक व्यवहारने अर्थे प्रणाम करवुं पडे. कांइ उचित्त आपवुं पडे तथा कोइ मिथ्यात्वी राजवर्गीने घेर गया थकां त्यां तेमना गुरु आवे तेवा रे ते राजवर्गी पोताना गुरुनुं बहुमान प्रणामादिक करे तेवारे तेनी अदबथी आपणने पण सलाम प्रमुख बहुमान करवुं पडे. तथा

जेणे नामा लेखादिक अंकविद्या प्रमुख आजीविका चलाववानो हु न्नर शिखाव्यो होय एवो उस्ताद ब्राह्मणादिक होय तेनुं बहुमान करवु पडे, नक्ति करवी पडे, अन्न वस्त्रादिक आपवुं पडे, तेनुं आगार छे. उचित्त व्यवहार जाणी ए सर्व करुं पण धर्म बुद्धिये नकरुं.

तथा मिथ्यात्वीना कोइक लौकीक वार तेवार आवे तेवारे ते ना उच्चवादिक कारणे ते कांइ द्रव्यादिक मागवा आवे तथा ते मि थ्यात्वी कूप सरोवरादिकनुं खनन करवानी जे लौकीकरीतीछे तेने धर्म बुद्धि करी मानेछे तोतेवाकार्योने अर्थे कांइ द्रव्यादिक मांगवा ने आवे तेवारे शासननी निंदा मटाडवानी बुद्धि धारण करीने द्रव्यादिक आपुं पण तेमां सुकृतनी बुद्धि धारण करुंनही.

बीजा पण कोइ कुलिंगीने कोइ लज्जा दाक्षिणता नय प्रमुख कारणने लीधे बहुमान करवु पडे, अथवा दान आपवु पडे, ते के वल लोक व्यवहार तथा शासननी हीलना मटाडवाने अर्थे त था द्वेष मटाडवाने अर्थे लोकचाल करुं पण तेमा धर्म बुद्धि ध नही. अने ते खरच संसार खाते लखुं.

तथा स्वलिंगी हिनाचारी केवल वेषधारी नेखधारी होय तेने शा सननी निंदा मटाडवाने अर्थे तथा तेमनो खेद मटाडवाने अर्थे प्रणा मादिक बहुमान करुं तथा कुल परंपरागत वृत्ति जाणीने अन्न वस्त्रा दिक आपु केमके जिनमार्गनो लिंगी तथा दर्शनी पण याचना करे नही ए पण एक गुणछे तो त्यां ए गुण आगलकरीने आपवो.

तथा तेवा हीनाचारीमा पण जे शुद्ध प्ररुपकछे. अने जेणे आपणने नणवा सुणवानु उपकार कीधुंछे, जेणे आपणने सुबुद्धि आपीछे, आपणी नूल मटाडीछे, तो तेवाने ए आपणुं उपकारीछे एवी बुद्धि धारण करीने वंदन नमन सन्मान सन्मुख गमन प्रमु ख मनमां हर्ष धारण करीने करुं, माहारी शक्ति प्रमाणे सेवा क रुं, मोहोटा उपकारी धर्माचार्य करी मानुं, पण तेने सुसाधु शुद्ध

गुरु तत्व करी सर्दहुं नही मात्र उपकारी सरद हुं. एरीते मिथ्या त्वनुं त्याग करुं शुद्ध समकेतने धारण करु. इति व्यवहारसम्यक्त्व.

हवे निश्चय सम्यक्त्व लिखेछे.

निश्चय सम्यक्त्वतेजे पूर्वे निश्चय देव, गुरु अने धर्म तत्वमां लखेलुंछे ते तत्वनी विचारणा करतां. निःष्पन्न स्वरूप संग्रह स त्ताग्राही नय गवेषतां, निश्चय देव ते ए आपणो आत्माजछे त था निश्चय गुरुपण आपणो आत्माज छे जे कारण माटे स्वरू पोपयोगीजीव ते पोतानी आत्माने सन्मार्गी करे भावाश्रवनुं त्या ग करावे एमाटे आत्मा एज गुरु तत्वछे.

तथा निश्चय धर्म पण आपणो आत्माजछे जे कारण माटे धर्म जे वस्तु स्वभाव तेने जे पामे ते धर्मि कहेवाय. एटले धर्म जे तत्व रमणता पोताना स्वरूपमां लीनता नयमार्गे जे जेटली वखत जेमां अभेदोपयोगी होय तेने तेटली वखत तद्मयीज क हिए, जेम पुरुषने स्त्रीनी आशक्ते करी लीनता उपयोग स्त्रीनोज थाय, तेने शुद्धनय स्त्रीज कहेछे माटे स्वधर्मे अभेदोपयोगी आ त्माज धर्मरूप कहिए. अने वस्तुगते शुद्ध स्वरूप रमणता ते स्व गुणछे अने स्वगुण तेधर्मछे तेमाटे धर्मपण आत्माज छे. एटले शुद्ध सम्यक्त्व श्रद्धागुण ते निश्चयथी देवदर्शनछे एटले निश्चय देवछे, तथा सम्यक् शुद्धात्म विज्ञान ते निश्चय गुरुछे, तथा तत्व रमणता, आत्मस्वरूपे मग्नता, ते निश्चय धर्मछे.

जे कारण माटे जेम देवदर्शन थकी अशुभ मटेछे, मंगलीक थायछे, ग्रह पीडा मटेछे, मनकामना सिद्धि थायछे तेम अंहीं सम्यक्त्व पामवाथकी मिथ्यात्व अने अनंतानु बंधिरूप परम अशुभ मटेछे अने अपुनर्बंधकरूप श्रद्धान प्राप्तिरूप मंगलीक थायछेतथा कुमति कदाग्रहरूप ग्रह पीडा टलेछे अने सकाम निर्झरारूपमन कामना सिद्धि थायछे माटे शुद्धसम्यक्त्वदर्शन प्राप्ति ते देवछे.

तथा जेम गुरु मलवा थकी नूल मटेछे, हितवतावे, रहस्य पामे तेम अंहीं आत्मविज्ञाने करी पण विविध परनाव नमण रूप नूल मटी जायछे, तथा तत्वरमण रूप परमहितने पामेछे, अने निश्चय समता सहेज उदाशीनतानो जे रहस्य तेने जाणवा ने अर्थे तो ज्ञान तेज गुरुछे

तथा जेम धर्मनी संगत थकी डुर्गतिमां पडे नही, दिवसेंदिव सें अधिक सौनाग्यनी वृद्धि थाय, तेम तत्वरमणरूप धर्म थकी पण परनाव धसणरूप कुगतिमा पडेनही, दिवसेदिवसे असंख्य गुण निर्ज्जरा थाय तेथी अनेक गुण प्रगटरूप सौनाग्य पामे, माटे जे स्वरूपोपयोग तेज धर्म जाणवो इति निश्चयसम्यक्त्व संपूर्णम्.

हवे ए सम्यक्त्वनी जे करणी छे ते लिखेछे नित्यप्रत्ये छती जोगवाइये अने छती शक्ते वाट घाटविना श्रीजिनप्रतिमां जुहारु, परंतु जो प्रतिमांनुं योग नमले तो पूर्व दशा सन्मुख श्री वहेर मान प्रनुने सन्मुख उपयोग राखीने चैत्यवदन करुं, रोगादिक कारणे नथाय तेनो आगारछे.

श्रीदेराशरनी दश आसातना मोहोटीछे ते नकरुं ते दश आ तनना नाम कहेछे. देरासरमां तबोल पान फल प्रमुख नखावा, पाणी नपीवु, नोजन न करवु, पगरखा प्रमुख चैत्यनी अंदर न लइ जवा, मैथुन सेववुं नहीं, चैत्यमां शयन नकरवुं, थुकवुं न ही, लघुनीत. नकरवी, वडीनीत नकरवी, जुगटु रमवु नही ए दश आसातना श्रीजिन मंदिरमां नकरु अने बीजीपण चोरासी आसातना जे छे तेने टालवानी मनमां चाहना राखुं के जे थकी मोहोटी चैत्यनी आसातना मने नलागे.

मासप्रत्यें अमुक सेर प्रमुख फूल चडावुं, मासप्रत्यें अमुक प्र माण पूर्वक फलादिक चडावु, मासप्रत्ये घृतादिक अमुक सेर प्रमुख चडावुं, वर्ष प्रत्ये अगलुछणा पांच अथवा दश चडावुं,

वर्षमध्ये केसर, चंदन, बरास भीमसेनी प्रमुख प्रभु पूजानिमित्ते जाइए तेमां माहारी शक्ति प्रमाणे द्रव्य खरचुं, देरासर निमित्ते वर्षप्रत्ये धूप अगरबत्ती कर्पूर प्रमुख अमुक रकमनुं चडावुं, वर्ष प्रत्यें अमुक अष्टप्रकारी पूजा तथा सत्तर प्रकारी पूजा करुं करावुं.

वर्षप्रत्ये साधारण द्रव्य अमुक रकम सुधी खरचुं. वर्षप्रत्ये ज्ञान हेतुए ज्ञान सामग्रीमां अमुक द्रव्य खरचुं, दिनप्रत्ये नवकरवाली दश अथवा पंदर आत्महिते गुणु, नगुणाएतो आगल पाछल गुणीने पूरण करुं, परंतु रोगादिक कारणे नगुणाए तो तेनी जयणाछे.

दिनप्रत्ये छती समर्थाइए प्रभाते नवकारसी अने संध्याकाले डुविहार पच्चखाण करुं, परंतु वाटघाटमां अथवा रोगादिक कारणे नथाय तो तेनो आगारछे. वर्ष प्रत्ये सामीवत्सल एटले अमुक संख्या साधर्मिकोनी जमाडुं. एवीरीते समकेतपालुं.

ए समकेतना पांच अतीचार जे छे ते टालुं ते लिखेछे.

१ पहेलुं संकाअतिचार तें श्रीजिनवचनना गंभीर गहनभाव सांभलीने पोताना मनमां संका संदेह धारण करे जे आ केमहशे मने बराबर बेसतो नथी एवो मनमां मगमगाट रहे.

२ बीजो आकांक्षातिचार ते जे कोइ अन्यमती पाखंडीनी कष्टक्रिया देखीने कांइ चमत्कार जुए तथा आलोकमां पण पूर्व जन्मना अज्ञान कष्टक्रियाना फल थकी अन्य मतिने घणोज सुखी दोलतवान देखीने मनमां विचार करे के अन्यमतिओनो धर्म पण सारुंछे एमनु ज्ञान धर्म सहु सारुंछे एपण धर्म करेछे एवी चाहना धरे ते आकांक्षा नामे बीजो अतिचार जाणवो.

३ त्रीजो वितिगिछानामे अतिचार कहेछे जेकोइ पोताना पूर्वकृत पापोदय ने लीधे दुःख पामे तेवारे एवुं विचार करे के जे धर्म करिए छैए तेनुं फल शुं जाणीए क्यारे पामीशुं एटलुं फल थशे के न थाय तेकरतां तो जे धर्म नथी करता ते घणाज सुखी देखा

थडे अने अमे तो जेम जेम धर्म करणी करिए डैए तेम तेम डुःखी थैये डैए ए धर्मतो शुं जाणीये क्यारे फलशे किवा नहीज फलशे एवी विचारणाकरे तथा साधुना मलमलीन शरीर अने वस्त्र देखीने डुगछा करे जे शुं आ काइज नही आवा गंदा हालमां रहेवुं सारुं नथी ए बापडा शुं तरशे एजो फाशु पाणी थकी स्नान करे तो तेथी कयोव्रत जंग थायडे? एवी डुगछा करे ते त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो मिथ्यात्विनी प्रशंसानु अतिचार कहेहे एटले मिथ्यात्वि उना गुरु जे ब्राह्मण तापसादिकडे तेनी प्रशंसा करे ते आवीरीते के ए मोह्रोटा तपस्वीडे, माहापुरुषडे, मोह्रोटा पंमितडे, एना बरोबरीउ कोइ नथी एमनी शुं वात करिए एवी एवी तेमनी प्रशु ता वखाणे अने कहेजे एतो पोतानुं अवतार सफल करेडे, तथा कोइक मिथ्यात्वी व्रत याग यज्ञ करे त्यारे तेनी घणीज खुसाम तीने खातर अत्यंत तारीफ करीने कहेके माहाराज तमे रुडुं कार्य कीधुं तमे तो तमारो जन्म कृतार्थ करोडो इत्यादिक कहेवुं ए पण समकेतनो चोथो अतिचार जाणवो

५ हवे पांचमो अतिपरिचयनामा अतिचार कहेहे जे मिथ्यात्विसाथे घणोज परिचय राखवो एकत्र जोजन संवास करवो, अत्यंत प्रीति वधारवी ते पांचमो अतिचारडे. केमके एवु अत्यंत परिचय कस्या थकी पण कोइ दिवसे मन विगडे, चित्त चलित थाय, पाप लागे तेमाटे परिचय न करवो ए पाचे अतिचार जाणवा पण आदरवा नही एरीते ढ छिमी तथा चार आगार सहित सम्यक्त्व पालुं तेमां प्रथम ढ छिमीना नाम कहेहे.

१ प्रथम (रायानियोगेण) एटले कोइ राजा नगरादिकनो मालक होय अने ते बलात्कारे काइ विरुद्ध कार्य करावे ते करवुं पडे तो तेथकी माहारो सम्यक्त्व जांगे नही.

२ बीजी (गणानियोगेण) एटले जाति ज्ञाति अथवा पंच

एटले लोकनो समुदाय तेमना हठने लीधे कांइ विरुद्धाचरण करवुं पडे तेथी माहारूं सम्यक्त्व नांगे नही.

३ त्रीजी (बलाभियोगेणं) एटले बलवंत चोर म्लेछादिकने वश पडे थके ते लोको बलात्कारे कांइ विरुद्ध कार्य करावे ते करवुं पडे तेथी माहारूं सम्यक्त्व नांगे नही.

४ चोथी (देवाभियोगेणं) एटले क्षेत्रपाल माता व्यंतर विंजासणी अने पितरादिक प्रमुख तेमना आवेश थकी जीव परवश थइ जाय तेवारे कांइ विरुद्ध कार्य थइ जाय तेथी माहारूं सम्यक्त्व नांगे नही अथवा देवता मरणांत कष्टमां पाडे अत्यंत कष्ट आपे तेथी चेतना शिथिल पणे कायर थाय तेवारे दंम नरण न्याये कांइ विरुद्ध करवुं पडे तेथी माहारुं सम्यक्त्व नांगे नहीं.

५ पांचमी (गुरुनिग्गहेणं) गुरु एटले माता पिता उस्ताद प्रमुख तथा पूज्य इत्यादिक महोटाना केवा थकी कांइ विरुद्धवात कुचाल कार्य करवो पडे तो तेथी म्हारो सम्यक्त्व नांगेनहीं.

६ छठी (वित्तिकंतारेणं) वृत्ति एटले दुर्भिक्षमां आजीविका निमित्ते कोइरीते पेट नराइनो धंधो उद्यम नमले घणीज आपदा पडे तेवारे कांइ विरुद्धाचरण करवो पडे तेथी सम्यक्त्वने दूषण लागे परंतु तेमां अजीविका चलाववा निमित्ते दुर्भिक्षमां कांइ अनाचार करुं तो तेथी माहारुं सम्यक्त्व ननांगे ए छ छिंमी कही.

हवे चार आगार लिखेछे.

१ प्रथम (अन्नत्थणाभोगेणं) एटले कोइ कार्य अजाण पणे उपयोग दीधाविना कांइ एकनो बीजो थइ जाय परंतु जेवारे यादगरीमां उपयोग आवी जाय तेवारे तेज वखत आगारने पाले परंतु दूषण नलगाडे ते प्रथम आगार जाणवो.

२ बीजो (सहस्सागारेणं) एटले सहसात्प्रकारे एका एकी जाणेछे परंतु उपयोगनी चपलता थकी अथवा नित्य बहुल अ

न्यास थकी जाणते जाणते पण कांइ विरुद्ध थइ जाय तो तेथी माहारी प्रतिज्ञा भंग नथाय ए बीजो आगार जाणवो.

३ त्रीजो (महत्तरागारेणं) एटले कोइ कार्य विशेष थकी लाभालाभनी शैली थकी (महत्तर के०) महोटा गुणवंतनी आज्ञा थकी कांइ कमवेश करवो पडे ते त्रीजो आगार जाणवो.

४ चोथो (सव्वसमाहिवत्तियागारेण) एटले सर्व समाधि व्यत्यय अहीं कोइ महोटा सन्निपातादिक रोगनी विक्रिया थकी उत्पन्न थयुं जे ग्रथिल पणु तेने लीधे बेशुद्ध थइ जाय एवी अवस्था प्राप्त थयेथी कांइ विरुद्धता करवी पडे तेथी पण माहारी सम्यक्त्वनी प्रतिज्ञा भंग नथाय ए चोथो आगार जाणवो.

ए छ छिंमी अने चार आगार सहित समकित पालुं अंही दिवसनो नियम दिवसमां नकरी शकुं तो बीजे दिवसे करी पोहोचाडुं अने महीनानु नियम बीजा महीनामां करी पोहोचाडुं तथा वर्षनुं नियम बीजा वर्षमां करी पोहोचाडुं एरीते जेवीरीते पोतामां पालवानी शक्ति होय तेवीरीते छूट राखवी

ए छ छिंमीने चार आगार जेम अहीं समकेत व्रतमां लख्याछे तेज नियमनी रीतें यथायोग्य शैली प्रमाणे अंही लखवा थकी आगल पण बीजा सर्व बारे व्रतोमा समजी लेवां फरी एकेका व्रतमां नहीं लखीशुं बधामां अंहीथीज धारणा करवी अहो सर्व प्रतिज्ञानुं रहस्य लिख्युंछे अंही सम्यक्त्व मार्गना कथननी गाथा नीचे लखियेछेए गाथा ॥ अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवसु साहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तंतत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥

इतिश्री स्याद्वाद शैली पूर्वक सम्यक्त्व अंगीकार करवानो विधि तेनी पीठिका समाप्त थइ

हवे आग्रंथमां केहेवाना बार व्रतोना नाम कहेछे.

प्रथम प्राणातिपातविरमणव्रत, बीजो मृषावाद विरमणव्रत, त्रीजो अदत्तादान विरमणव्रत, चोथो ब्रह्मचर्यव्रत, पांचमो स्थूल परिग्रह परिमाणव्रत, छठो दिग् परिमाणव्रत, सातमो भोगोपभो ग परिमाणव्रत, आठमो अनर्थदंड विरमणव्रत, नवमो सामा यकव्रत, दशमो देशावगासिकव्रत, अगीआरमो पौषधोपवाशरूप व्रत अने बारमो अतिथिसंविभागव्रत ए बार व्रतना नाम जाणवा.

॥ अथ प्रथम स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रत प्रारंभः ॥

ए प्रथम थूलप्राणातिपात विरमण व्रत तेना बे भेदछे. तेमां एक द्रव्य प्राणातिपात बीजो भाव प्राणातिपात त्यां द्रव्यप्राणा तिपात विरमण व्रत ते एके परजीवने पोता सरखो जाणीने ज यणा पाले. एना दश द्रव्य प्राणोनी रक्षा करे, उगारे. ए द्रव्य प्राणातिपात विरमण व्रत कहीए. एमां व्यवहार दयाछे. अने भावप्रणातिपात विरमण व्रत ते आपणो जीव कर्मने वश पड्यो थको दुःख पामेछे. आपणा भाव प्राण जे ज्ञान दर्शनादिक तेनुं मिथ्यात्व कषायादिक अशुद्ध प्रवर्तनरूप शस्त्रथी प्रतिक्षणे घात थायछे, प्रतिक्षणे हणायछे. ते आपणा जीवने कर्म रूप शत्रुथी छोडाववानी फिकर करीने तेनो उपाय जे आत्मगुण रमणता तेने धारण करे, परभाव रमणता वारे, शुद्धोपयोगे वर्त्ते, उदये अव्यापक रहे. एक स्वभाव मगनता तेज समस्त कर्म रिपुने उछेद वा अमोघ शस्त्रछे. एटले सर्व परभाव इष्टता निवारीने. स्वरूप सन्मुख उपयोगते भाव प्राणातिपात्त विरमण व्रत कहीए. अने निश्चय दयापण एजछे.

अहींयां थूल प्राणातिपात विरमणव्रत ते थूल एटले जे मो टा नजरमां आवे, फरे, पडे, एटले त्रसजीव एमने संकल्प करी

ने नहणुं ए हनन क्रियापण चार प्रकारनीछे. एक आकुट्टी करी ने हणवु बीजुं दर्प्प करीने हणवु २ त्रीजुं प्रमादे करीने हणवु अने चोथो कल्पे करीने हणवु ए चारेना अर्थ लखेछे

१ प्रथम अकुट्टी एटले जे निषेधिवस्तु तेनुज फरी उत्साह थकी सेवन करे जेम आखो सराई वस्तुनो फल तेनो नडथो न करवो जे निलोत्री मोकली राखी होय तोपण तेनुं नडथो करीने खावु नही छतां तेनी चाहना धरीने नडथो करे ते आकुट्टि दोष

२ दर्प्पआकुट्टि एटले उछक पणाथी उन्मत्तपणे मान अने गर्व धरीने दोड करे ने तेथी हिसा थाय तेने दर्प्पआकुट्टि हिंसा कहीए, जेम गाडी, वहेल घोडा प्रमुखने परस्पर एकेकथी अ निमान धरीने दोडावे ए आकुट्टी दर्प्प हननक्रिया जाणवी.

३ त्रीजी आकुट्टि प्रमाद एटले काम नोगने विषे तीव्र अनि लाषथी जे हिंसा करे, तेम कामो द्दीपन करवा माटे त्रसादिजी वनी हिंसा करीने पट्टी, गोली, माजम प्रमुख बनावे ते आकुट्टि प्रमाद हनन क्रिया जाणवी

४ चोथी कल्पहिसा एटले पोताना घरकामने सारुं रधनादि क करे तेने जाणवी अहीयां श्रावकने प्रथम हिंसा तो बीलकु ल नज करवी जोइए. जोरत्ती करे तो पण जयणाथी करे ते माटे अहीया संकल्प करी आकुट्टी तथा दर्प्प करी त्रसजीवने न हणुं ए चीटी जाती छे एने मारुं एवो सकल्प करीने जीवने हणे हणावे एने आकुट्टी संकल्प कहीए.

एवो संकल्प करीने निरापराधी जीवने कारण विना न हणुं, न ह णावु कारणे, आरन्ने, रधनादि गृहस्थ करणी करतां तथा पुत्रादि कना शरीरे जीवोत्पत्ति थइ होय तेना ओषधादि कारणे करवुं पडे तेनी जयणाछे. घोडा, बलद प्रमुखने चाबकादिक मारवापडे तेनो आगार. तथा पेटमां करमीया, गमोल पगमां नारु अथवा हरस, श

रीरमां चम्म अने जुं प्रमुख उपजे, तथा मित्रादिक अथवा बीजा स्व जनादिकना शरीरने विषे उपजे तेनो उपचार करवानी जयणा. जे कारणे साधुने तो सूक्ष्म अने बादर ए बंने जातीना जीवनी, त्र स अने थावर बंने नेदना जीवनी नवकोटि विशुद्ध पच्चखाणथी हिंसानो त्यागछे. एकारणे साधुने वीश विश्वानी दयाछे, अने गृ हस्थने सवा वश्वानी दयाछे. ते केवीरीते तेनो विवरो लखीए छैए.

॥ गाहा ॥ जीवा सुहुमाथूला । संकप्पारंनाजवेडुविहा । सा वराह निरवराहा । साविरकाचेवनिरविरका ॥ १ ॥ अर्थ—जग तमां जीवना बे नेद कह्याछे. एक थावर, बीजा त्रस. तेमां थावरना वली सूक्ष्म, बादर ए बे नेदछे, तेमां पण सूक्ष्मनी हिंसा नथी. कार ण अति सूक्ष्म जीवना शरीरने बाह्य शस्त्रनो घाव लागतो नथी, तेमने स्वकाय एटले पोतानी जातीना जीवोथी घात पातछे. पण बा दर नथी एमाटे अहींयां सूक्ष्म शब्दथी पण जाणवुंके थावर जीव, पृ थ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिरूप बादर ए पांचे थावर तेमने सूक्ष्म कहीए. अने थूल एटले बेंडि, त्रेंडि, चौरेंडि, पंचेंडिरूप जा णवा ए जीवना मूल नेद बे छे तेमां सर्व जीव आव्या. तेउ सर्वनी त्रिकरण शुद्ध साधु रक्षा करे छे. तेमाटे वीशविश्वानी दया, मुनिनेछे.

पण श्रावकथीतो पांच थावरनी दया पली शकाय नही. सचि त्त आहारादि कारणथी अवश्य हिंसा थायछे. माटे दश विश्वागया अने दश रह्या. एटले एक त्रस जीवनी दया राखवाना दश विश्वा रह्या तेना पण वली बे नेदछे. एक संकल्प. बीजो आरंन. तेमां आरंने करीने जे त्रस जीवनी हिंसा थइ जाय ते छोडी न जा य तेमाटे बे हिंसामां एक संकल्प हिंसानो त्याग अने आरंन हिं सानी तो जयणाछे, एम गणतां फरी दशमांथी अडधा गया एटले पांच विश्वा रह्या, एटले संकल्प करी त्रस जीव नहणुं. एमां पण जीवना बे नेदछे. एक सापराधी जीव अने बीजा निरपराधी जीव

छे. तेमां जे निरपराधी जीवछे तेमने न हणुं, अने सापराध जी वने हणवानी तो जयणा छे जेथी करी सापराधीनी दया, श्राव कथी सदा सर्वरीतेथी पळे नहीं.

जेम के घरमा चोर पेठा छे. तेउ आपणी चीज लइ जाय छे ते मास्या कूटया विना छोडे नहीं. वली बीजुं दृष्टांत एके आपणी स्त्री साथें कोइ अन्य पुरुषने अनाचार सेवता देखिये तो तेने तरुडी दीधा विना ते बूटे नहीं. ए प्रमाणे सापराधी कहीएं. बीजुं पण क्यारेंक राजानी आज्ञाथी युद्धमां गया थका संग्राम करवो पडे, त्यारे त्यां आगलथी शस्त्रादिक चलाविये नहीं. सामो शत्रु प्रथम शस्त्रनो मारो करे, त्यार पछी आपणे करीएं. ए माटे सापराधीनो संकल्प पण न बूटे. त्यारें बाकी रहेला पांच वशामांथी पण अडधा गया, बाकी अढी वशा रह्या. एटले सकल्पीने "निरपराधी जीवने न मारुं" एटलुंज फकत रह्यु. एमां पण वली बे भेद छे. एक सापेक्ष, अने बीजो निरपेक्ष, तेमां सापेक्ष निरपराधी जीवनी दया, श्रावकथी पळे नहीं तेनुं कारण शु ? ते कहेछे. श्रावक पोते घोडा, घोडी, बेल, बलद, रथमा, गाडीमां, के इत्यादि बीजा वाहनोपर बेसे छे त्यारे घोडा प्रमुख बलद विगेरेने चाबका के आर लगावे छे, पण विचारतो नथी के, घोडाएं के बलदे शो अपराध कर्योछे ? एमनी पीठ उपर तो चढी बेठो छे. ए जीवना शरीरसामर्थ्यनी तो कांइ खबर छे नहीं जे आजीव, बलवान् छे, के डुर्बल छे पोतें उपर चढी बेठो छे, ने वली तेने गाल प्रमुख दइने मारे छे। पण एतो निरपराधीज छे वली आपणा अंगमां तथा आपणा पुत्र, पुत्री, नाती, गोत्री, आदिकना मस्तकमां अथवा कानमा कीडा पड्या छे, अथवा आपणाज मोढामा के, दाढमा के दातमा, के जडबामा कीडा पड्या छे, तेवारें तेमने मारवाना उपाये करीने कीडानी जग्याएं ओषध लगाडवु पडे, पण ए जीवोए शो अपराध कर्यो छे ? एतो पोतानी योनि उत्पत्ति

स्थान पामीने कर्मने आधीन आवीने अहीयां उपजे छे, पण क्यारें कशी दुष्टताथी उपजता नथी, तो ए अपराधी नथी. ते कारणमाटे निरपराधी जीवनी पण हिंसा, कारणे करीने श्रावक थी तजी जाय नहीं. वली बाग बगीचामां गया थका फूल, फल, पांदडां, गुछा प्रमुखने तोडवा सारु चोट देवी, अथवा फल, फूल, तोडी लेवां; ते माटे अढी वशामांथी अडधो गयो त्यारें सवा वशानी दया रही. एटली सवा वशानी दया शुद्ध श्रावक ने छे.एटले त्रसजीव संकल्पीने निरपराधीने कारणविना हणुं नहीं. एवी प्रतिज्ञा थइ. ए प्रतिज्ञा ज्यारें शुद्ध रहे. त्यारें ते श्रावक व्रती कहेवाय. ज्यां लगी पोतानी शक्ती पहोंचे त्यां लगी उगाइ न करे, अने निर्ध्वंसपणे न रहे. रखेने कोइ जीवनी विराधना थाय! एवो उपयोग न छांडे. तथा घरमां आरंभ कारणे लाकडानां गाडां प्रमुख लावे, ते सारां लाकडां होय, सडेलां होय नहीं, ते लाकडां घणा दिवस रहे तो पण तेमां जीव न पडे एवां पाकां, अने सुकां होय तेवां लावे. तेपण ज्यारें रसोइनुं काम पडे त्यारें पूंजी करी, अने फाटक फूटक करीने बाले. तथा घी, तेल, मीठुं, तथा अथाणा प्रमुख रसभरी चीजनां वाशण, जतनथी राखे, मोढुं बांधी करीने राखे, उघाडुं राखे नहीं. वली चुला उपर, अने पाणी राखवाना ठेकाणा उपर चंदरवा बांधे, तथा अनाज खावाने लावे ते पण शुद्ध, अने नवुं लावे. अथवा वर्षनी उपरनुं अनाज लावे, पण ते सडेलुं होय नहीं. कोइ त्रस जीव नजरमां न आवतो होय तेवुं लावे. पाणी गालवानुं गरणुं पण जाडुं मजबूत जोइने राखे. एक प्रहर वीत्यो के पाणी गाली नाखे. वली वर्षाऋतुमां बहुजीवनी उत्पत्ति थाय, तेथी ते ऋतुमां गाडी, रथ, घोडानी स्वारी न करे. कारणके, ज्यां रथनुं के गाडीनुं चक्र फरे, त्यां असंख्य जीवनी घात थाय. वली

हरिकाय बहुबीज त्रसकाययुक्त पूर्वक जेमा अति आरंभ हो य, एवी हरिकाय प्रमुख लावे नहीं खाटला प्रमुखमां जीव होय, ते माटे खाटला प्रमुखने तडकामां नाखे नहीं सडेलो दा णो तडकामां नाखे नही एवु पाणी अनाजना ससर्गवालुं मोरी मां नाखे नही. कांचु दूध, मग तथा मठथी विदल खाय नही. फागण वदिथी आरभिने आठ महिना पर्यंत शाक, पत्र, भाजी, प्रमुख खाय नही मीठाइनो काल पूर्ण थया पछी मीठाइ पण खाय नही मणशील चलितरस, तथा वासी अन्न अनंद्य मधु प्रमुख, विषप्रमुख आदर करी खाय नही घरमा बुहारणी पण शण प्रमु ख घासनी अने ते पण कोमल राखे, कारण के कठोर राखवाथी जीवनी हाणी थायछे माटे कोमल राखे बे चार जण मली, एक थालमा भेला भोजन करे. स्नानादिक बहु पाणीथी न करे, जे टलु प्रयोजन होय तेटलुंज पाणी वापरे तडकामा, मेदा नमा, अथवा मोरीनी जगाये चोकी उपर बेसीने नहाय. न्हावा नुं पाणी वासणमा लइने बुटुं बुटुं ढोले. ज्या सुधी निरारभी व्यापार मले, त्या सुधी खर कठोर कर्मादिक बहु आरंभी व्यापार न करे. कोइनो हक भागे नहीं घरमा एठा, अन्ननु धोवण बे घ डी उपरात राखे नहीं. पूजन प्रमार्जन कर्या विना कशी पण क्रि या करे नहीं. मोटी मोरीमा पाणी चलावे नहीं दीवाबत्ती प्रमुख लगाडे, ते पण यत्नवडे करी जीवरक्षा थाय तेवी रीतें करे. जे आ बखोरा प्रमुख वासणथी पाणी पीधुं होय, तेमा मोढानी लाल प डी होय, अथवा वलगी होय, ते कारणे ते पात्र पाणीमा बोलीने फरी भरे नहीं. पाणी भरवानुं पात्र दाभीवालु होय, तेना वडे आबखोरो के लोटो भरे. इत्यादि व्यवहार शुद्ध उपयोगें प्रवर्ते. एवा श्रावकोने सवा वशानी दया पूर्ण कहीछे ए प्रमाणे प्रथम व्रत शुद्धछे, तेना पाच अतिचारछे. ते हवे लखीएं छैये

१ प्रथम वधनामा अतिचारछे. ते एके, क्रोध करीने पोताना बल वडे निर्दयपणे गाय, घोडा, प्रमुखने मारे, चलावे, ते पहेलो अतिचार.

२ बीजो बंध अतिचार. ते ए के, गाय, बलद, वाछरडां प्रमुख जीवोने गाढ बंधनथी बांधे, ते आकरा बंधनथी जीव अति दुःख पामे, नीचुं माथुं राखे. बिचारां, अबोलानी जेम मनमां कल्पे. कदापि ए जानवरोने गाढबंधने करी बांध्यां छे; एटलामां अग्निलय थयो, त्यारें तेउ उतावलें छूटी शके नहीं. तेथी ए जीवनी विराधना थइ जाय. ते वास्ते गाढबंधन पण अतिचारछे. वास्ते जानवरने ढीला बंधनथी बांधे. अने कोइ गुन्हेगार मनुष्यने पण निर्दय तथा निपट गाढ बंधथी बांधे तो त्यांपण बीजा बंधअतिचारनुं दूषण लागे.

३ त्रीजो छविछेद अतिचार, ते ए के, बलद प्रमुखना कान छेदावे नाथ घाले, खासी करे, पुरुषत्वपणुं मटाडे. बीजुं पण छेदन भेदन करे, करावे. ते त्रीजो छविछेद अतिचार जाणवो.

४ चोथो अतिभारारोपण अतिचार छे. ते ए के, जे बलद प्रमुख उपर जेटलो बोजो अनुमान प्रमाणे भरवानी रीती होय, तेना करतां वधारे भरे तो, अतिभारारोपण अतिचारनो दोप लागे. श्रावकने तो छकडा बलद प्रमुख जे भारथी भरे, ते हमेशां भरवानी जेटली चाल होय, तेना करतां पण पांच शेर दश शेर उंछो भार भरवो, तो व्रत शुद्ध रहे. एमां पण जानवरनी चालवानी शक्ति एटली नथी तो विवेकथी चलावे. भार उंछो करे, जानवर निर्बल होय तो तेना खावा पीवानी तथा घांस, दाणा, पाणीनी खबर ले, तथा लेवरावे, परंतु एवुं न विचारे के, लोक सर्व जे प्रमाणे भार नाखे छे तो आपणे पण तेटलो भार एना पर नाखीएं. ते व्यवहार शुद्धछे, एमां काइ हरकत नथी. एवुं न विचारे. व्रती होय तो ते बीजो बलद करे ए व्यवहारछे. ए प्रमाणे चोथो अतिभारारोपण अतिचार जाणवो.

५ पांचमो अतिचार भात पाणीनो विछेद करे. ते ए के, बल

द, घोडानी मरजी माफक खाणुं बंध करे, हमेशना खाणामांथी कांइ ओछुं, करे, अथवा असूर करीने आपे, वखत वटावीने आपे. त्यारें ते अतिचार लागे. वली कोइ मनुष्यनी वृत्ति तथा आजीविका बंध करवी, ते पण एमां आवी गयुं अने श्रावक तो दास, दासी, चाकर, ढोर प्रमुख पोतानी पाछल जेमनी आजीविका बांधी हो य, तेमनी खबर लइने पछी पोतें भोजनादिक करे तो व्रत शुद्ध र हे ए पांचमो भातपाणी विछेदनो अतिचार जाणवो. ए पांचे अ तिचार श्रावकने जाणवा, पण आदरवा नहीं ॥

इति द्वादशव्रतविवरणे प्रथमस्थूलप्राणातिपातविरमणव्रते पं डित श्री उद्योतसागरगणिनाकृतभाषा संपूर्णा ॥ १ ॥

॥ अथ ॥

॥ द्वितीयस्थूलमृषावादविरमणव्रत प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

अरिहंतादिक समरिके, त्रिकरण शुध चित्त लाय ;
द्वतीय व्रत विवरण लिखुं, मृषावाद जिम जाय ॥ १ ॥

हवे स्थूल मृषावाद व्रत एटले, स्थूल कहीएं मोटुं, अने मृषा वाद एटले जुठुं बोलवु, तेनुं विरमण कहेतां त्याग करवु, तेने स्थू लमृषावाद विरमण व्रत कहियें. एटले घणुं जुठुं बोलवाथी जगत्मां अप्रीति वधे,अपयश थाय,धर्मनी निंदा थाय.माटे कोइ जीवने दुःख थाय, हानी पहोचे,एवु जुठु न बोले पोताना मतलबनी वात अने क तरेहथी बनावी बनावीने अनेक गुणी वधती कहे, अने गेर मतलबनी वात होय ते अनेक गुणी ओछी करीने कहे, पण जेवु होय तेवुंज न कहे. एवा दुर्गुणनो जे त्याग करवो, तेने स्थूल मृषावा द विरमणव्रत कहियें.एना बे भेदछे एकद्रव्य मृषावाद,अने बीजो भा

वमृषावाद. तेमां द्रव्यमृषावाद एटले जाणतां अजाणतां विपरीत कहे, जुतुं कहे, ते द्रव्य मृषावाद. बीजो भाव मृषावाद एटले सर्व पर भाव पुद्गलादिकने आत्मत्वबुद्धिएं करीने पोतानां जाणे, पोतानां कहे, रागद्वेषयुक्त कृष्णादिक अशुद्ध लेश्याथी आगम विरुद्ध बोले, आगमार्थ छुपावे. उत्सूत्र प्ररुपे, कुयुक्ति लगाडे, ते भावमृषावाद कहियें. ए मृषावाद जाणतां छतांज थाय. आ व्रत सर्वत्रतमां मोटुं छे. जो पालवामां अतिशुद्ध उपयोगी थाय, त्यारें ज शुद्ध रहे, अने व्रत पले. जे कारणे बीजां व्रत द्रव्यदेश विषयीछे ते देखाडेछे.एक मात्र जीवनीज शुद्ध ओलखाणथी जीवदया पलेछे. तथा परनिष्ठागत पुद्गल पर्याय, एटले पोतानी निष्ठानी वस्तुथी बीजी कोइ जे त्रणमात्र प्रमुख चीजछे ते परनिष्ठा कहेवाय छे. ते तेना मालेकना दीधा विना न लहे, एटले अदत्तव्रत पले. तथा मात्र स्त्रीना संयोगनो त्याग, मन वचन कायाथी करे,एटले ब्रह्मचर्य व्रत पले. तथा धन धान्यादिक नवविध परिग्रह त्याग करे, मूर्छा न धरे, एटले परिग्रहविरमण व्रत पले. एम एक एक द्रव्यदेशथकी ओलखाण थवाथी चारें व्रत पलेछे. अने जे मृषावाद विरमण व्रतछे तेतो ज्यारें षटद्रव्यनी द्रव्यगुण पर्यायथी, द्रव्य क्षेत्र काल भावथी, ओलखाण थाय. एवो तीव्र केहतां जोरावर उपयोगी थाय. त्यारें शुद्ध पाले, तो तो ठीक, नहीं तो एकपर्याय मात्र विरुद्ध बोलवाथी व्रत भंग थाय. ए माटे साधु पण प्रायें बहु भाषा बोले नहीं. तथा साधु पण प्राणातिपातव्रतादिक चार महाव्रतमां अन्यतर भांगे, त्यारें एक चारित्र गुणनो भंग थाय, पण ज्ञानदर्शननी भजना, अने तेथी आगली गति बगडे. अने ज्यारें मृषावाद व्रत भांगे त्यारें रत्नत्रयी समूलीज जाय, दुर्गतिमां रोले अने अनंत संसारी थाय, दुर्लभबोधी थाय. ए माटे ए व्रतने शुद्धरीतें पालवाने अर्थें छए द्रव्यनी समज बराबर जोइएं, सावधानपणुं राखवुं जोइयें.

तथा आ जगत्मां द्रव्य असत्यना त्यागी तो तए दर्शनमां जोइएं छैयें. पण नाव असत्यनो त्याग तो, एक श्रीजिनागमरुचि शुद्ध श्रद्धावत पुरुषनेज थाय बीजाने नही थाय त्या स्थूलमृषावा दत्याग व्रतनां पाच मोटां जुठ छे ते व्रती श्रावके अवश्य गाम्वा जोइएं. ते पाच जुठ हवे लखिये छैये.

१ प्रथम कन्यालीक एटले आपणा मेलापीनी कन्या छे. तेनी स गाइ थती होय, त्यारे कन्याना ग्राहक पूछे के कन्या केवीछे? तो पोताना मेलापीनी प्रीतिएं करीने ते कन्यामा जे दोष होय, ते ढु पावे.गुण होय, न होय,तोपण जुठुं वधारीने कहे के, ए कन्या निर्दो ष छे एवी सारा कुलनी अने सारां लक्षणनी मलवी मुश्केल छे आ तो साक्षात् पार्वती छे एवु रागथी कहे अने जो कांइ परस्पर द्वेषनाव होय तो, जोके ते कन्या निर्दोष, अने सुलक्षणवती हो य तोपण कहे के, ए कन्या कुलक्षणी छे. नगारां पगलानी छे व हु बोलकणी ने वढकणी छे एवा एना दुर्गुण, ए छोडीना पाडोशी लोक कहेछे ते अमे सानल्या छे एनाथी जे सबंध करशो, ते पस्ता शो. एवी रीते अछता दोष कहे,पण श्रावक जे व्रतधारी छे तेने तो कोइनी सगाइ साटी आरलना जुठ कामने माटे जुठुं बोलवु पण यु क्त नथी. जे कारण माटे स्त्री नरतारनो सबंध करावची ते संसा रभ्रमण बीज, वाववानु छे. एम करतांय आपणो संबंधी छे,घरनी वात छे,दाक्षिण्यताथी पण छुटाइ शकाय नहीं, एवु होय तो पण अ ति जुठुं अशुद्ध न बोले अने गुण होय ते कहे वली कहे के, नाइ! तमे तमारी मेलें पोतानी खातर जमा करी ल्यो कारणके जन्म सुधी नो सबंध छे. एम केहेवु, ए व्यवहारछे वली कोइ चाकर राखतो होय, तथा जे कोइ नाग, पाती के, व्यापारनु खातु नामुं कोइनी सा थे जोडाववा मेलववानु चाहा, त्यारें ते पण कोइ एक आवीने पुछे के, ए केवोछे? सारो छे के नगारो छे. त्यारें व्रती श्रावक होय,ते तो राग

द्वेषनी वात न करे. तेथी त्यां पण कन्यालीकनी परें कम वेश न बोले,पण गुण होय ते कहे.अने वली कहे के, भाइ! मनुष्यना मनोगत भावमां कोण माहितगारछे? तमे शाह्याणाछो. पोतें पोतानी तजवीज करी ल्यो. ए प्रमाणे कन्यालीक जुठ जाणवुं.

२ बीजुं मोटुं जुठ गवालीक छे. ते केहेछे. जेम कोइ रीतें कोइ एक मलतीया दोसदार स्नेही माणसनी गाय वेचाती होय,त्यारें तेनो स्नेही पुरुष लेनार धणीने कहे के,आ गायने खुशीथी ल्यो.आ गाय घणुं दूध देनारीछे, सुलक्षणी छे, लात प्रमुख दूजती वखतें चलावती नथी, आ गायनी मानी पण अमने खबर छे. ते पण बहु दूध देती हती. एवी वातो कहीने ते मित्रनी गायने वेचावी आपे. अने ते गाय तो घणा अपलक्षणवाली छे,तथा थोडा दूधनी देवावाली छे, अने दोहोती वखत लात प्रमुखनी मारनारी, इत्यादिक दोषनी भरेली छे. पण त्यां जे व्रती श्रावक होय, ते तो राग द्वेषथी ते दोषने निर्दोष छे एम कहे नहीं, परंतु यथार्थ भाषा बोले. एमां सहु चोपगां जानवर हाथी, घोडा, सूतर, बलद, गाय,भेंषनो एवो विवरो जाणी लेवो. प्रथम तो ए हाडविक्रय कराववोज योग्य नथी.तेम करतां कदापि स्नेह संबंध होय ने तेने लीधे बोलवुं पडे, तो आपणा व्रतने दोष न लागे एवुं वचन बोलवुं. ए रीतें ए गवालीक जुठ त्याग करवुं जोइएं.

३ त्रीजो मृषावाद, भूम्यालिकछे. ते एके, जमीनने लगतुं जुठुं बोलवुं ते एवी रीतें के जमीन कोइनी होय ने आपस आपसमां कहे के आ जमीन मारीछे, एवो बुद्धिप्रपंच करीने ते जमीन आपणी ठरावे.अथवा बीजा कोइ बे जण जमीन वास्ते लडता होय, त्यां राग द्वेषनी परणतिथी युक्ति कुयुक्ति करीने ते जमीन पोताना रागी मलतीयानी ठरावे, अने द्वेषीने जुठो ठरावे. एम होय कोइनी, ने अपावे कोइने. जग्यातो कोइ बी

जानीज होय तो कहे के, आतो अमुक धणीनी जग्याछे ए प
ण महोटो मृषावाद छे. प्रथम तो व्रती श्रावकने जमीनना
कजीयानी वातमां पडवुंज नहीं केम के, जमीननो कजीउ
महोटा उत्पात आरंजनी खाणछे. तोपण कदापि आपणो तेनाथी
काइ संबंध छे, ने तेथी ए वातमां पड्या विना छुटको न थतो होय
तो जेवुं होय तेवुं यथार्थ कहीएं पण जूठुं कहीएं नही. पेहेलां
थीज एकांतमां आपणा मलतीया संबंधीने समजावीएं के, जाइ! ए
वातमां हुं नहीं बोलुं,माटे मने ए वातमा वच्चे नाखशो नही एवी
रीतें करतां पण कोइ पंच मलीने आपणी पर ए कजीयाना ठरावनी
वात नाखे, तो ते वखतें चतुराइथी पहेलां तो नज बोले, अने ए
वु कहेके, माराथी तो बीजा महोटा महोटा पंच छे. ते पंच मली
जे ठराव करशे ते खरो.वली बीजा पण माह्या घणाछे. इत्यादिक वि
नय वचन कही छानो मानो बेसे,पोताना व्रतनो जय राखे अने कदा
चित् ए वातनो ठराव करवा बधा मली तेने बहुज आग्रह करे त्यारे
कहे के,मने वारे वारे शु कहोछो ? हुं तो ए जमीननी वातमा पूरो
माहितगार पण नथी, एवु कहे, पण जूमिसबंधी जूठु कदापि न
बोले. एमा घर, हवेली, बाग, वगीचा विगेरे सर्व जमीन संबंधी
नी वात आवी गइ कोइ एमानुं काइ खरीदतु होय, त्यारें ते सा
रुं छे के नगारुंछे. ते न कहे. धन धान्यादिक परिग्रहनो मृषावा
द पण एमांज आवी गयो.ए त्रीजुं जूठुं जूम्यालिक छे. तेनो व्रती
श्रावक होय, तेणे त्याग करवो.

४ चोथो थापण मोसो, व्रतधारी श्रावकें न करवो. जे कोइ अना
मत द्रव्य, जूषणादिक वस्तु, जलो गृहस्थ जाणी साक्षी राख्या वि
ना मूकी गयो होय, ते केटलाएक दिवस वीत्या पछी ते धणी मा
गवाने आवशे त्यारे हुं नही आपु एवो कांइ बुद्धिप्रपंच करी तेने पं
चमां जूठो ठेरावीश ! ए ज्यारे मागशे त्यारें हुं एवु कहीश के, अ

मारी पासें तमो थापण मूकी गया ते संबंधीनो कोइ अमारा हाथ नो लखेलो दस्तावेज छे? अथवा कोइ साक्षी छे? बीजा जे कोइ थाप ण कोइने घेर मूकेछे, ते तेनी पासेंथी लखावी करीने राखेछे. एवुं क ही तेने दबावी पाडवानी युक्ति रचे, ने विचारे के हुं नगरमां मात बर छुं. ने एतो आव्यो गयो परदेशीछे. एनी कोण पक्ष खेंचशे! मारी मरजी तोडीने एनी तरफ कोण बोलशे! एवी द्रव्यनी चीज शा वास्ते छोडीएं!! अने हुं मारी अकलथी बधाने जवाब आपीश. कोइना पण दाव पेचमां हुं नहीं आवीश. एवा कुविचारमां पडे. एट लामां पेलो थापण मूकनार आवीने मागे के भाइ! मारो माल आपो. ते वखतें तेने गुस्सो करीने कहे के भाइ! माल केवो? अने तमे कोने सोंप्योछे? आ ते शुं बोलोछो वारु आते कांइ ठीक कहेवाय? अमें तम ने उलखता पण नथी,के तमे कोणछो? भोलपणमां कोइने त्यां मूक्यो होय तो त्यां तेनी तजवीज करो. अमे तो परिचय उलखाण विना कोइनी थापण राखता पण नथी. तेमां तमे तो वली परदेशी छो, तो तमारी चीज शा वास्ते राखियें? एटली तेनी वात सांभलीने थापण मूकवा वालो कहे के,अरे साहेब! हुं देवावालो,ने तमे लेवावाला. आपण बंने जीवता छैएं. कांइ घणां वरस पण थयां नथी. चार पांच मास थयां तमारा पासें चीज मूकीछे. तो एटली थोडी मुदतमां तमे आवा शाहुकार थइने, आम जीवती माखी गलवा जेवी वात करोछो ते वात सारी नथी. जूठा झगडामां सारुं नथी. एम करतां बन्नेने कजीउ थयो, ने वढवा लाग्या. शाहुकार, पोताना भाइबं धोने कहेके,आ दगाखोर गले पडुने कोइ समजावो. पछी कहेशे कह्युं नहीं. नहिंतो बहु दिवस याद करशे, एवी तस्दी पामशे. त्यार पछी समजशे, आज पछी कोइ साथें जूठो झगडो न करे,ते माटे एने स मजावो. नहीं तो पछी फोजदारीमां मोकली दीयो. अमारी पासें थी सहु द्रव्य के चीज गणीने लेवा करतां, एटलुं कहेवाथी जो समझी

ने पोताने घेर जाय तो सारुं,अमाराथी जूठो कजीउं नहीं करे!एवां जोरावरीनां वचन तेने संभळावे. हवे बापडो थापण मूकवावाळो विचारे के,हवे हुं शुं करुं! अरे हु क्यां!ने क्या आ सहु लोक!!! बधाए एनी मरजी प्रमाणे बोलेछे. हुं एकलो परदेशी माटे एनाथी पहोंची शकीश नहीं. एम विचारी ते अबोलो थइ रहे एवी दुर्बुद्धि करीने पोतें साचो थाय, अने आगळा साचाने जूठो ठेरावे, अने पारको माल हजम करी जाय. ए थापण उळवी राखवानुं महा पाप छे. आ लोकमां कदापि पापना उदयथी कोइ दिवस वेचतां, के कोइ ठे काणे मूकतां जाहेर थाय तो राजा तरफथी महोटो दंम पडे,लोको मा अपयश थाय, अप्रतीति वधे, साख जाय, अने परभवे, कूडा कलंक चढे, दुर्गतिमां पडे, दारिद्रभाव कदी पण न मटे जिनेश्वर भाषित धर्म पण उदय न आवे. ए माटे व्रती श्रावक होय,ते पर नी थापण अथवा हरकोइ अनामत वस्तु कोइ मूकी जाय,ते सर्वथा उळवे नहीं. शास्त्रमा तो कोइनी अनामत चीज राखवीज नहि एवी आज्ञाछे. तेम छता कदापि मूळभागे दाक्षिण संबंधी भोगजोगें रा खवी पडे तो भाइबंधनी के कोइ बीजानी साक्षी लखावीने तथा तोल, मुल्य करावीने राखवी कदापि घणा दिवस ते चीज आपणे घेर रहे, तो तेने ओछी वधती न कहेवाय अथवा आपणी चेतना पण बगडे नहीं. कदाचित् पोताना मरण पछी पुत्रादिकनी पण बुद्धि बगडे नहीं. ते माटे लखत साक्षी करावीने खत करी ने राखे; के तेथी तेउने पाछी आपवानी जरूर पडे, अने मनमा बीक रहे. धणी मागे त्यारें खुशी थइने थापण मूकेली चीज हो य ते पाछी आपे. एमां सहु वातना छिद्रो जाणी लेवा कपटव्रत्ति, विश्वासघात, ए सहु व्रतीश्रावके थापण मोसो न करवो.

५ पांचमो मृषावाद जूठी साक्षी ए व्रती श्रावक होय, ते क दी न पूरे. तेनो विस्तार लखीएं छेयें कूडी साक्षी तेने कहीएं के,

बे जणा कजीर्ड करवा लाग्या, तेमां कोण साचो ने कोण जूठो!
तथा कोनो वांक छे! हवे जे साचो छे ने जेनो वांक नथी, तेना पर
नगरवासी लोकोनो द्वेष छे. ते पुरुषोयें पोताना दिलमां धारी रा
ख्युं होय के क्यारें पण श्रमे अवसर पामीने एने उपर जबरज
स्ती करशुं. ए वातनो अवसर जोइने साचाने फगाववानुं ब
ल बांधे; ते एम के द्वेषपोषणने माटे पोते कजीयानी अं
दर तत्पर थाय अने मातबर थइ लोकोने कहे के, ए वातथी हुं मा
हितगार छुं. एनी साक्षी हुं पूरीश. कदापि राजद्वारमां कोइ काम
पडशे, अने मारी साक्षीनी जरूर हशे तो त्यां पण हुं साक्षी पुरीश.
एनी खातरदारी साक्षी सर्वरीतेंथी मारी पासेथी लेजो. एवी रीतें
जूठानो पक्ष करे. उपर प्रमाणेनी वात करीने जूठी साक्षी पूरे. प
ण कूडी साक्षीनुं महापाप छे. आ नवमां पण जूठो पडे तो आ
बरु जाय, राजदरबारमां खबर पडे के, आ जूठो माणस छे.
शेहेरमां जेनी तेनी साथें झगडो कर्या करे छे. एवुं जाण थतां
नी साथें धन धान्य सर्व राजा लूंटी जाय. जूठी साक्षीवालो मार
खाय. अने परनवमां तो एवां पापें करी ए दुःखथी पण वली बहुज
दुःख नोगवे, दुर्गतिनो साथी थाय, पगले पगले अणचिंतवी आप
दा आवीने प्राप्त थाय. ए माटे श्रावकने सर्वथा जूठी साक्षी कोइनी
पूरवी योग्य नथी. ए पांच तो महोटां जूठ छे. जे श्रावक नाम धरावे,
तेणे ए पांचे जूठ त्याग करवां. तथा बीजुं पण जे बोलवाथी राज
नय उपजे, दंड नरवो पडे. जीन, कान, नाक, हाथ, आदिक
अंग जे बोलवाथी छेदाय. एवी नाषा बोलवी नहीं. एवी रीतें
बीजुं मृषावाद विरमण व्रत लीधुं छे.एमां आजीविका निमित्तें पोता
ना परिणामनी कचाइथी कोइ रीतें जूठुं बोलवुं पडे, तो तेनो आ
गार छे. अहीयां क्रोध, मान, माया, लोन, राग, द्वेष, रति, अरति,

रणो छे. अहीं हास्यादि वात विनोदमां तथा कोइ निमित्तें कषायादिकने परिणम्यो, आत्मा मूढ चेतनामां रह्यो थको कांइ आलपंपाल बोलाय. तेनी जयणा. तथा कोइ चाडीयो प्रमुख दुष्ट मनुष्य, निष्कारण बहु दुःख देतो होय, कोइ रीतें दुःख देतो रहे नहीं, त्यारें ते सापराधीने शिक्षा देवराववानेसारु कांइ उंधुं वत्तु बोलवुं पडे; तेनो आगार छे. एटले संकल्प करीने विना प्रयोजन निरपराधें हास्यादि कारण विना निरपेक्ष जुलु न बोलुं वली पाच महोटा जूठमा पण स्वसंबंधी कन्यालीक, गवालीक, भूम्यालीकमां न चालतां जुठुं बोलवु पडे, तेनो आगार छे एना पांच अतिचार छे. ते जाणवाने लखेछे

१ प्रथम सहसात्कार अतिचार छे. ते एके, कोइने एका एक अण विचार्युं कहे, अयुक्त कलंक चढावे. जेमके, तुं चोर छे, व्यभिचारी छे, जूठो छे, इत्यादि विना तपास कर्ये कहे, ते पहेलो अतिचार छे. श्रावकने तो साक्षात् कांइ विरुद्धवात जोइ होय तो पण प्राणांत सुधी ते जाहेर न करवी वली न कहे तो जुठुं बोलवानो दोष लागे, त्यारे विचारे जे ए वात कहेवाथी महोटुं पाप लागशे. एम विरुद्ध वातने जाहेर करता कांइ दोषादिक उपजे, अने तेथी श्रावकने अतिचार लागे. माटे ए विरुद्ध वात छे. तेथी पोतानी मेलें जाहेरमां आवशे पण पोतें कहे नहीं.

२ बीजो रहस्यजापण अतिचार. ते एके, कोइ बे जण पोताना घरनी सुख दुःखनी वात करेछे. ते जोइने तेमने कहे के, खबरदार रहेजो! तमे बन्ने मलीने राजद्वार विरुद्धनी वात करोछो पण तमे महोटो तमासो देखशो, आगल विचार करवो पडशे, माटें आज पछी एवी वात न करशो. एवु कहीने ते बन्नेने दुःख उपजावे. बीजुं पण स्त्रीजननी, मित्रनी, पोताना भेलापीनी तथा बीजा पण कोइनी छानी वात अथवा कांइ एकनी वात, आपणे जाणीने ते वात

लोकोनी आगल प्रकाशे, नें तेनी चरचा चलाव्या करे. पछी रहेते रहेते ते वात, राजद्वार जइ पहोचे. त्यारें राजदंडनो जय उपजे, कांइनुं कांइ थइ जाय. ते रहस्यजाषण अतिचार जाणवो.

३ त्रीजो दारमंत्रजेद अतिचार. ते एके, आपणी स्त्री तथा जाइ प्रमुख घरनां माणस तथा आपणो मित्र के कोइ हितेछु ते मनाथी कोइ जूलचूकथी अथवा नादानबुद्धिथी कांइ छानी विरुद्ध वात थइ गइ अने पछी पस्तावो करी ते दोष तेणे छां डी दीधो होय, ते बहु दिवस वित्या पछी कोइ प्रसंगोपात ते गइ गुजरी वातने फरी प्रकाश करीने केहे ; त्यारें ते लाजनो मार्यो आपघात करी जीव काढे. ने तेथी आपणने पण मोटी एब लागें, बहु वेदना तथा दुःख थाय, लौकीकमां अपयशनी वृद्धि थाय, ए दारमंत्रजेद त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो मृषाउपदेश अतिचार छे. ते एके,पोतें डापणवालो थवानेसारु पापोपदेश जे मंत्र, यंत्र, जडी, बुट्टी, बतावे. ने कहे के, फलाणी बुट्टीनुं मूल कहाढो. ते अमुक बुट्टीना रसमां मेलवीने आटली चीज वाटो. तेनी गोली करीने खाउ. तेथी बहु जोगशक्ति थशे. वली आ मंत्रनो जाप करो, मद्य मांसनी आहुति आपो, जे थी करी देवता प्रसन्न थाय, वली जेनी चाहना करो तेनी प्राप्ति थ शे.वली कहे के,सांजलो! अमुक जानवरना लोहीथी अमुक औषधि नां पांदडा पर यंत्र लखीएं, घुअडना पग सार्थे बांधीएं तो शत्रु ना गी जाय अथवा मरण पामे. वीजुं कहे के, जनावरना इंडाना रस थी पारा प्रमुखनो खरल करो. अने पछी ते पाराने अग्निमां राखशुं. शोल प्रहरनी अग्निएं करी पारो सिद्ध थशे. एवा उपदेशनो देनारो थाय. वली कहे के, हुं कामशास्त्रमां महा निपुण छुं,तमोने चोरा शी जोगासननो विधि शिखवाडुं, ते तमे शीखो. एथी करी विविध प्रकारनी रतीविलास क्रिया ने बहुवार वीर्य वृद्धि रहेशे. काम जा

गशे, कामदेवना वासानुं स्थानक जाणशो.तो तमारो जीव बहु खुशी मां रहेशे. अंधारा पक्षमा तथा अजवालीया पक्षमा स्त्रीने कामनो वासो जूदे जूदे ठेकाणे रहेछे तिथि तिथिनो विवरोछे. ते बधुं तमने बतावीश, इत्यादि बहु पापोपदेश करे. बीजां पण औषधादिकनां शास्त्र बतावे, जणावे अथवा कोइने दुःखमां नाखवाना उपाय बतावे. एना प्रतिपक्षी होय तेने पण कुबुद्धि बतावे, शीखवाडे, तथा विषयकषाय जागे, एवी नवी वात उठावे, ते पापोपदेशकथन चोथो अतिचार जाणवो.

५ हवे पांचमो कूटलेखन अतिचारछे. ते एके, कोइनो जूठो लेख लखे, नामामां जूठुं लखे, उंछो वधारे अक्षर लखे, प्रथम लिखित अक्षर ठरी प्रमुखना प्रयोगे करी छेकी नाखे, पर वाना उपर जूठी मोहोर करे, खोटुं खत बनावे, तेमां रुशनाइना भेद पण सहु आव्या ए पांचमो कूटलेखन अतिचार जाणवो.

अहींयां आजीविका निमित्ते चित्तदृढताना योगथी आडतिया प्रमुख व्यापारमा अधिक लाभनी प्राप्तिथी कांइ धारणा प्रमाणे उंचु वत्तु लखवानो आगारछे पण एने मूलमा तोटो आवे, एवुं न करवु. वली बीजुं पण आजीविका निमित्ते उंचुं वत्तु मर्यादाधिक धारणा प्रमाणे लखवानो आगार ए पांचे अतिचार मृषावाद उपदेशनाछे. आ पांचे अतिचार महादुर्गतिना सहायकछे ते माटे ए अतिचारने जाणवा पण आदरवा नहीं.

॥ इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे द्वितीयस्थूलमृषावादविरमणव्रते पंडितश्रीउद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ २ ॥

॥ अथ ॥

॥ तृतीयस्थूलअदत्तादानविरमणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

सद्गुरु पदपंकज नमी, कहिशुं विवरण शुद्ध ;
तृतीय अदत्तादान व्रत, न कहुं शास्त्र विरुद्ध ॥ १ ॥

हवे स्थूल अदत्तादानविरमण लखीएं छैयें. प्रथमस्थूल जे मह्योटी चोरी जे संकल्प करीने देवाल फोडी खातर पाडे, अथवा मार्गादिकें मुसाफरना द्रव्यने लूंटवानी इच्छा थइ. ते एम के, आ एकाकी छे. बीजो कोइ एनी सार्थे छे नहीं. त्यारें जाणी जोइने कोइ नवो प्रपंच करी,एनुं द्रव्य होय ते लइ लेइएं अथवा बलात्कारें करीने पारकीचीज लेवी तथा नजर चूकावीने कोइनी चीज उठावी लेवी तथा आपणे घेर कोइ अनामत चीज मूकी गयो होय ने ते ज्यारें पाछी मागे त्यारें नामुकर जवुं तथा खरुं जवाहीर प्रमुख लइने घरमां मूकवुं. अने पाछुं ते मागे त्यारें खोटुं आपवुं, तथा बीजा कोइएं हीरा मोती वेचवाने आप्यां होय, तेमांथी नंगनो फेरफार करी सारुं नंग होय, ते पोतें लइ लिये, अने ओछी किम्मतनुं नंग होय,ते तेमां मेलवी आपे.ए सहु अदत्तादाननो दोष कहीएं. जे कारणे क्यारें पण तेनी जाण पडे, प्रगट थाय, त्यारें राजदंम देवो पडे, अपयश थाय, अप्रतीति उपजे, ए माटे स्थूलअदत्तादानने जे त्यागे, ते अदत्तविरमणव्रत छे. ते अदत्तव्रतना बे नेद छे. ते कहेछे. एक द्रव्यअदत्तव्रत, बीजुं नावअदत्तव्रत.

१ द्रव्यअदत्तविरमण एटले पारकी चीज पूर्वोक्त प्रकारें गएली, पडेली, विसरी गएली लीये नहीं. ते द्रव्यअदत्तविरमणव्रत जाणवुं.

२ तथा जे पर पुजलद्रव्य, तेनी चीज वर्ण गंध रसादिक रचनारूप त्रेवीशविषय तथा आठे कर्मनी वर्गणा ते पण पराइ चीज

छे. ते वस्तुगतें जीवने अग्राह्य छे. एनी जे वांछा उदयिक ना वमां थसण, ते नावअदत्त ग्रहण जाणवु. तेने श्रीजिनागमो क्त तत्व सांजजीने, पुद्गलानंदी पणुं मटाडे, शुद्ध उपयोगें दिलथी उदय अव्यापक रहे निर्जराना बहुल परिणाम ते नावअदत्तवि रमणव्रत कहियें जेटली जेटली कर्म प्रकृति छे.तेनो बंध मटयो ए टलुं नावअदत्तविरमणव्रत कहिये त्या सामान्य अदत्तना चार ने दछे, ते कहेछे १ प्रथम स्वामिअदत्त, २ बीजो जीवअदत्त, ३ त्री जो तीर्थंकरअदत्त, अने ४ चोथो गुरुअदत्त.

१ तेमां प्रथम कोइनी चीज आप्या विना लिये, ते स्वामिअदत्त

२ बीजुं जे सचित्त बीज फलादि गुछा प्रमुख तोडे, अथवा छे दे, नेदे, ते जीवअदत्त कहीएं. जे कारणे फलना जीवोएं एवी कांइ आज्ञा दीधी नथी के, अमोने तमे छेदन नेदन करो. ते हेतु एं ए जीवअदत्तनो बीजो नेद जाणवो

३ त्रीजो श्रीतीर्थंकर देवे जे चीजनो नषेध कह्योछे ते चीज ने ग्रहण करे. जेम के, साधुने आधाकर्मी आहार निषेध कह्यो छे. श्रावकने अजह्य वस्तु निषेध कही छे, तेने आचरे त्यारे ते तीर्थंकरअदत्त केहेवाय ए त्रीजो नेद तीर्थंकरअदत्तनो जाणवो.

४ चोथो गुरुअदत्त ते एके, कोइ साधु, आगमोक्त शुद्ध व्य वहारपूर्वक निर्दूषण आहार लावीने पछी तेने गुरुनी आज्ञा वि ना खाय, ते गुरुअदत्त कहीएं.

ए चारे अदत्त, संपूर्ण रीते तो साधुथी तज्या जाय, अने गृह स्थथी तो कांइ अंशे तज्या जाय. अहींया श्रावकने चारे अदत्त मां स्वामिअदत्तना त्यागनी मुख्यता छे. ए माटे पराइ चीज पू र्वोक्त उपाय करीने न लेउं. जे चीज लेवाथी चोर नाम ठरे, रा जदंम उपजे, एब लागे, माटे एवी चीज न लेउं पण सूक्ष्म तृ ण काष्ठ प्रमुख, जेनी कोइ बहु मनाइ न करे, ते चीज लेउं त

नी जयणाछे. कोइनी चीज पडेली पामुं तो ज्यां सुधी परिणाम टके, त्यां सुधी लेउं नहीं. कदापि बहु मूल्यवान् चीज जोइने परिणाम शिथिल थाय, त्यारें ते चीज लेउं. पछी लेइने केटला एक दिवस, पोता पासें राखुं. एटलामां जो ते चीजनो धणी छतो थाय, तो तेने आपुं अने धणी छतो न थाय, तो धर्मस्थानकमां तथा धर्मना काममां खरचुं. एम पण परिणाम न रहे, तो तेमांथी अर्ध भाग धर्म स्थानकमां खरचुं, अने अर्ध हुं पोतें राखुं.

वली पोतानी जमीन खोदतां द्रव्यनो भंमार निकल्यो, तो तेने लेवानो आगार छे. एमांथी पण अर्ध अथवा चोथो हिस्सो धर्म करुं. पछी पण जेवी धारणा?

तथा पारकी जमीनमांथी द्रव्य निकले, त्यारें पण ज्यां सुधी परिणाम टके, त्यां सुधी ते द्रव्य लेउं नहीं. अने परिणाम शिथिल होय तो, अर्धुं हुं राखुं ने अर्धुं धर्ममां खरचुं.

तथा कोइ वारस विनानो माणस कोइ चिज अनामत मूकी गयो होय, पछी ते देशांतर गयो त्यां मरण पाम्यो त्यारें तेनी चीज पंचमां, भला अने सारा रुचिवाला मनुष्य आगल जाहेर करीने जे पंच कहे, ते करुं; कदापि देश कालनी विषमताथी जाहेर करतां उलटुं जफरुं लागे. ते एम के, दुष्टराजादिक होय तो ते लोभना माऱ्या थका कहे के तारे घेर, मरनारें घणुं द्रव्य मूक्युंछे? तुंतो पोतानी शाहुकारी जाहेर करवाने थोडुं देखाडे छे. एवी उपाधि लागे. ते माटे कोइने न कहुं तो पण ते द्रव्य, धर्मस्थानकें खरचुं. ते खरचतां ते धन आपणुं पोतानुं केहेवुं पडे, तेनी जयणा.

तथा घरचोरी एटले घरमांनी सर्व चीजना मालिक तो पोताना पिताछे, अथवा माताछे. एमने पुछ्या विना वस्त्र इत्यादिक लेवुं, तेनी जयणाछे. वली जेनी साथें महोबत होय, जे संबंधी होय, जेने घेर जवा आववानो, खावा खवरावववानो व्यवहार होय, ते

ने घेर गये थके कशुं पुछया विना फल पान प्रमुख लेवुं; तेनो आ गारछे. परंतु तेनो जीव कचवातो होय तो न लेवुं

तथा कोइनी चाकरी करतां व्यापारमा कांइ कसुर करीने द्रव्य मेलववानी जयणा. ए रीतें त्रीजुं व्रत पाले ते व्यवहार शुद्ध अद त्तादानविरमणव्रत जाणवुं. अने निश्चयथी तो जेटलो आत्मा नो अबंधक परिणाम थयो, गुणस्थाननी वृद्धि थइ, अने बधवि छेद थयो, ते निश्चय अदत्तविरमणव्रत कहीएं. एना पांच अति चार छे, ते कहे छे

१ प्रथम "तेनाहड" अतिचार कहेछे स्तेनाहृत् त्यां स्तेन एटले चोर, तेणे आहृत् एटले हरण करी लीधेली एवी जे चोरीनी काइ चीज,तेने स्तेनाहृत् कहिये एटले चोरे चोरेली चीजने खरीद करवी कारण के, चोरीनी चीज सोंघी मले, ते जोड आत्मा लोभमा पडथो थको ते वखतें विचारे के मोरे तो पारकी चीज हाथमा लेवी न हीं पण आतो चोर पोतें चोरी लाव्यो छे ते लेवामां मने शो दो षछे ? एवी मूढ विचारणाथी ले, पण एम न विचारे के, आ अशु द्ध द्रव्ये करीने मारी चेतना बगडशे वली कदाचित् कोइ वखतें जाहेरमां आवे त्यारे ते पकडाय. त्यारे राजवाला पूछे के, शोहेरमां जेमनी चीज गइ होय ते सर्व लोक, चबुतरें आवी बतावो. ते वखतें चोरने तस्दी आपे त्यारे ते चोर जेनुं तेनु नाम तथा प त्तो बतावे के, अमुक जग्याए चीज राखीछे, किंवा अमुक जग्या एं वेचीछे. एम करवाथी सर्व जग्याएंथी चीज जाहेरमा आवी शाहुकारोए पण सोंघी जोइने लीधी हती, ते पण सहु पकडवामा आव्या. त्यारे तेमने पण उलटो दंड पडे, ने वली जे चीज चोर पासे थी लीधी हती, ते पण जाय, पोतें खराब थाय, लोको वात करे के आ लोक, चोरोने पैशा प्रथम देछे ने चोरी करावेछे. एवी वात, न ला गृहस्थने सांभलवी पडे माटे ए धधो केम करीए ? वली लौ

किकमां अपयश वधे, ते तो आ नवनुं दुःख, अने परनवनुं दुःख जोइएं तो चोरीनो माल संगरनाराउं दुर्गतिने नोगववा वालाछे ज. परंतु अहीं कदापि अजाण पणे एटले चोरीनो माल छे. एम न जाण्युं होय ने लीधो होय, तो तेनो आगार. परीक्षा विना ब हु मूली वस्तु थोडामां मले, तो तेनो आगार छे. तथा परंपरायें आ वी तेनो आगार. पण एने जूठी साची कल्पना देखाडीने तेनी पा सेंथी लेवी. ए पेहेलो अतिचार जाणवो.

२ बीजो तस्कर प्रयोग अतिचार. एटले जे चोरने चोरी कर वानी प्रेरणा करे के, तमे आज काल नकामा बेशी रह्याछो प ण उद्यम कस्या विना शुं खाशो? आ पेटने तो रोज नरवुं जोइ एं ? ते माटे घरमां बेठे तो कांइ नहीं थशे. अमे तमारा मोहोब तीया छैएं. ते माटे कहीए छैएं. बीजो पण अमुक, फलाणे ठेका णे गयो हतो, ते थोडा दिवसमां चार पैशा सारी रीतें लाव्यो; माटे तमे पण रोजगार सर थाउ. तेथी माथा परनुं करज पण उ तरशे. नहीं तो आगल तमने फरी करजें कोण रूपैया देशे? दी धा लीधाथी सहुनुं काम चालेछे, माटे नाइ! धंधो करो. अमारुं पण तमारी उपर लेणुं छे; ते पण आपो. कारण के वहु दिवस थया छे. नहीं तो पांच सात बीजा पण आपीयें, परंतु शुं करीएं? जे तमने आवा हाले देखीए छैएं. तेथी बहुज खीज आवेछे. आ वा बलदार छो, पण सर्वदा कमाया विना एमज निनाव केम थ शे ? ते माटे व्यापार रोजगारमां तमने नफो न होय तो, कोइनी नोकरी करो. हथीयार लइ शीपाइगीरी करो. तमारी पासें हथी यार हाजर न होय तो जेटला जोइयें तेटला अमारी पासेंथी लइ जाउ, पण रोजगारसर थाउ. एवी एवी खोटी प्रेरणा करे. ते प्रयोग कहीएं. चोरने प्रेरणा करे, संबल आपे, लोढानां शस्त्रादि क अधिकरण आपे. तेने तत्वदृष्टिएं देखतां चोर तुल्य कहीएं.

जे कारणे नीतिशास्त्रादिकमां चोरना सात प्रकार कह्या छे. ते ए के, प्रथम चोर जे आप चोरी करे १, बीजो चोरनी पासें रहे २, त्रीजो चोरनी साथें आलोच करे ३, चोथो चोरना जेदमा माहित गार थाय ४, पांचमो चोर साथे व्यापार सहीयारो राखे ५, छठो चोरने अन्न पाणी आपे ६, सातमो चोरने घरमां राखे ७, ए सातेने चोर कहेवा. हवे अहीया अदत्तनो त्यागी होय, ते वि चारे के मारे पोताने तो पराइ चीज लेवानुं पच्चखाण छे,पण बीजो कोइ लइ आवे, तो ते चीज लेवामा मने शो दोष छे ? ए माटे प्र योगअतिचारव्रत पण श्रावक न धरे. कारण के ते सापेक्षछे. ए माटे ए प्रयोगअतिचार बीजो जाणवो. २

३ त्रीजो "तप्पडिरूव" अतिचार. ते एके, कोइ सारी वस्तुमां तेना सरखी मलती बीजी हलकी चीज मेलवीने वेचे, ते तत्प्रति रूप कहिये. जेम केशरमां केशरना जेवो तार, अने एवाज रगने मलतुं एवुं कोइ द्रव्य लावीने कत्रिम करी वेचे, वली मठा प्रमुख ने मथीने घृतमा मेलवी वेचे एटले जे चीजछे तेना सरखी बीजी चीज बनावीने मूलद्रव्य शुद्ध होय तेमा मेलवीने वेचे तथा बना वटनी कस्तुरी करीने वेचे. गुंदर प्रमुखनो बाधो करी तेने हीगमां मेलवीने वेचे तथा जे यवादि सुगंधिक द्रव्य थायछे, ते कर्पूरसाथे मेलवीने वेचे अफीणनो जोडो करी वेचे, तथा जूना वस्त्रने रगावीने नवाने ठेकाणे नवाने नावे वेचे. रुने पाणीमां जीजवी वजनदार करीने वेचे. सूतली प्रमुखनी पिं डिमां अंदर महोटा गाजा घालीने उपरथी सुतलीने नींज वी करी लपेटीने वेचे लोकमां सारी जोडने वधारे मूल आवे,तो य पण विचारे नहीं के, हुं खोटो व्यापार करुंछुं पाणीमा दुध ए कठुं करीने दुधना नावे वेचे गहु प्रमुख दाणामा छुसो, काकरी, अने चूनो प्रमुख मेलवीने वेचे. ए सहु प्रतिरूप कहीएं. अही

यां आपणी चीज व्यापारनी होय, तेनें परिकर्म करी वेचवानो आगारछे. ए त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो विरुद्धगमन अतिचार. लखीए छैएं. ते एके, आ पणा गामना राजाएं फरमाव्युं के, फलाणे गाम जशो नहीं. ते गामनी चीज लेवी नहीं. तेमनी साथें व्यापार, खातुं, लेणुं, देणुं, कांइ पण करवुं नहीं. एवो सरकारनो हुकमछे. केमके, सरकारना को इ मुद्दाइ गुनेगारछे, ते त्यां जइ कोइनुं शरण लइने रह्याछे. माटे त्यां थी तेमने कोइ दिवस पकडी मंगाववानोछे. त्यां सुधी ते गामवाला कोइ सरकारनी चीज वेचवा आवें, ते लेशो नहीं. ए प्रमाणे राजा एं हुकम कस्योछे. हवे आ माणस तो लोभने वश पड्यो, ते गाम मां जइने सोंघी वस्तु जाणीने छानो मानो जइ त्यांथी लइ आवे अने पोताना गाममां छानी मानी लावी वेचे. एवामां कोइ चुग लीखोर ते वात जाणे अने राजाने जाहेर करे के अमुक माणस, आपणा गाममां परराज्यनी चीज, त्यहांथी लावेछे. ने अहीं वेचे छे. अथवा राजसंबंधी कांइ छानी वात विगत होय, ते करे. त्यारें ते कष्टमां पडे. दाणचोरी पण एमां आवी गइ. ए माटे ए विरुद्धग मनअतिचार थाय. अहीयां दाणचोरी तो सर्वथा तजवी. कदा पि लोभने वश पड्यो थको न रही शके, तो वर्ष प्रत्यें प्रमाण करी राखे. तथा श्रावक होय, ते चोथा विरुद्धगमन व्रतनो आगार राखे.

५ पांचमो कूडां तोल तथा कूडां माप करण अतिचार कहेछे. ते एके, लेवानां तोल माप जूदां राखे. अने देवानां तोल माप पण जूदां राखे. एवी रीतें गज पण लेवानो जूदो राखे अने देवानो प ण जूदो राखे. कोइ देशमां अनाज भरवानुं पण मापछे त्यां पा ली माणुं प्रमुख, लेवानुं जूडुं राखे अने देवानुं माप छेबुं, ते प ण जूडुं राखे. वली त्राजवानी झांझीमां अंतरकोण राखे. मांपमां पण एवी दगलबाजी करे. भरती वखत पालीने झगावीने आपे.

लेवानी वखते माथा सुधी संपूर्ण दाणो जरीने लिये. वली वस्त्र ले, त्यारें पण गज अथवा हाथ सरकावीने ले, तथा आपे. तेवारें अतिचार लागे ए पांचे अतिचार, जे विरति श्रावक होय, ते जाणे, पण ते अतिचार लागेछे. एम जाणी आदरे नही.

अही आजीविकाने माटे वर्त्तमान लोक व्यवहारनी रीतिएं उंचूं वधतुं देवा लेवानी मने जयणाछे अजाण पणे कोइ खोटा तोल माप थइ जाय, तेनो अतिचार नही. विरति व्रतनीछे ते प्र माणे पालीश अधिक लोजने वश पडीने नही करीश. आ पांचे अतिचार, अदत्तादानविरमणव्रतना जाणवा.

॥ इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे पंमितश्री उद्योतसागरगणिना कृ ततृतीयस्थूल अदत्तादानविरमणव्रतजाषा समाप्ता ॥ ३ ॥

॥ अथ ॥

॥ चतुर्थस्थूलब्रह्मचर्यव्रत प्रारंज. ॥

॥ दोहा ॥

आद्यक्षर ॐकारकूँ, मंगलरूप मनाय ,

चोथे व्रतके जेद सब, जाषा करुं बनाय ॥ १ ॥

चोथू ब्रह्मचर्यव्रत. एटले मैथुननो त्याग करवो. त्यां मैथुनत्या गना बे जेदछे एक इव्यमैथुन त्याग, अने बीजो जावमैथुन त्याग

१ इव्यमैथुन एटले परस्त्रीनो तथा परपुरुषनो परस्पर संग म जाणवो. त्या पुरुषे परस्त्रीनो त्याग करवो अने स्त्रीएं पण परपुरुष नो त्याग करवो. रतिक्रीडा तथा कामसेवन करे, ते इव्यमैथुन क हियें तेने जे पुरुष, तथा स्त्री, त्याग करे. तेने इव्यब्रह्मचारी तथा व्यवहारब्रह्मचारी कहीएं.

२ बीजो जावमैथुनरुप. ते एके, चेतनरूप पुरुषने विषया जिलाष परपरणति रूप, तथा तृष्णा ममतारूप इत्यादि निश्चय

परस्त्रीछे तेनी साथें जे मलवुं, तेने रीझ मोज आपवी, तेनी साथें वांछित विलास करवो, ते भावमैथुन जाणवो. एने जिनवाणी ना उपदेशें तथा जे सद्गुरु हितशिक्षानो उपदेश करे. त्यारें पोतें परपुद्गलादिकने उलखी, जातिहीन जाणी, आगामिक कालें एने महादुःखदायी जाणी, पूर्वें गतकालें अनेक मरणांत दुःखप रंपरा एनाथी पाम्यो, ए माटे मने ए विजाति स्त्रीउने तजवानुं क हुंछे, माहारे तो मारी स्वजाति, परमभक्त, उतम, सुकुलीन शमता रूप सुंदरीनो संग करवो सारोछे. विभावपरणतिरूप परस्त्रीएं मारी सर्व विभूति खेंची लीधी. हवे सद्गुरुनी सहायताथी ए दु ष्ट परिणाम स्त्रीसाथें हुं लाग्यो हुं. तेने थोडे थोडे निग्रह करुं. त्य जवानो भाव आदरुं, के जे थकी महारी शमता सुंदरी, शुद्धस्वभा व घटरूप घरमां आवी रहे, तो घरनुं तेज वधे. एवी समजण पा मीने परपरणतिमांथी मग्नता छोडे. उदयें कर्म व्यापे नहीं. शु द्ध चेतनानो संगी थइ रहे. शुद्ध परिणामथी दूर न रहे. ते भाव मैथुनत्यागी कहीएं.

अहींयां द्रव्यमैथुन त्यागी तो षट् दर्शन मांहे मले पण भा वमैथुन त्यागीतो श्री जिनदर्शननेत्यांज श्री जिनवाणी सांभ लतां ज्ञानभेद, जेना हृदयमां प्रवर्त्तायोछे, ते सहज उदास उ पायथी भावमैथुननो त्याग करे. ते बीजा दर्शनोमां न मले.

अहींयां स्थूल परस्त्रीगमनव्रत. ते एके परस्त्रीनो त्याग कर्यो. परपुरुषनी परणेली तथा पारकानी राखेली जे स्त्री होय, तेनी साथें अनाचार सेवन न करुं. एवो पचरकाण करे, तेने परदा रगमनविरमणव्रत कहीएं. बीजुं जे स्वदार केहेतां पोतानी स्त्री, तेनाथी संतोष धरुं. एवुं जे व्रत धरे, तेने स्वदारसंतोषव्रत क हीएं. त्यां देवसंबंधी देवांगना, तथा तिर्यंच संबधी स्त्रीजाति, त था मनुष्य संबधी स्त्रीजाति, एनाथी मैथुनसेवा निषेध. एकेकी

विधिना जाग करीने, एटले कायायें करी परस्त्री सायें सोइमां दोरो परोववो, ए न्याये संयोग करवानो निषेध अने मने, तथा वचनें अने स्वप्नमां जोग थाय,तेनी जयणा सहज स्पर्श करवानी जयणा. वर्त्त मान स्त्री टालिने बीजी स्त्रीसायें विवाह न करवो, तथा दिवसें ब्रह्मचर्य पालुं, न पलेतो प्रमाण राखुं, नववाड पालवानो खप क रुं. स्त्रीजनने पण एवी रीते परपुरुषनो त्याग जाणवो हवे ए व्र तना पांच अतिचारछे, ते लखीये ठैएं.

१ प्रथम अपरिगृहीतागमनअतिचार. ते एके. नही परणे ली स्त्री जे कुमारी तथा विधवा स्त्री, तेने अपरिगृहीता स्त्री कहीएं. जे कारणे कोइ एनो स्वामी केहेवातो नथी. ए कोइनी स्त्री केहे वाती नथी. तेने जोइ, कोइ मूढमति विषयाभिलाषी थइ. जइक नावथी विचारे के, में तो परस्त्रीनो त्याग कर्योछे अने आ तो को इनी स्त्री कहेवाती नथी माटे एनी सायें मेलाप करवाथी मने शुं दोष छे? एवुं विचारीने ते कुमारीनी सायें के विधवानी सायें जोग विलास करे एज प्रमाणे व्रतधारी स्त्रीने पण परपुरुषनो त्यागछे. ते पण अपरिगृहीत पुरुष कुंवारो होय अथवा जेनी स्त्री परलो क पहोंची होय तेनी साथे पूर्वोक्त न्याय मनमां धरीने संग क रे, तो ते स्त्रीने पण प्रथम अतिचारनो दोष लागे.

२ बीजो इत्वरपरिगृहीतागमन अतिचार ते इत्वर केहेतां थोडो काल जाणवो एटले मास, छमासनी मर्यादा करीने वे श्यादिकने खरची आपी पोतानी आस्नाव स्त्री करीने राखे अ हींयां कोइ अज्ञान पणाथी एम विचारे के, मारे तो पर स्त्री नो त्यागछे. पण आने तो में महारी करीने राखीछे, तो एमा मने शुं दूषण छे ? एम जाणी करीने अज्ञान पणे ते वेश्याने सेवे, तो तेने बीजो अतिचार लागे. एवी रीतें श्राविकाने पण बीजो अतिचार लागेछे. ते एम के, वे शोक्यो होय तेमा शोक्यनो वा

रो धणी पासे जवानो होय ते दिवसें जरतार ने पोतें सेवे, ने मनमां विचारे के, पोताना स्वामीने सेवतां शुं दूषणछे ? मारे तो परपुरुषनो त्याग छे.पण एम न विचारे के,आ दिवसें तो ए शोक्य नो जरतार छे.मारो तो आ दिवस धणी पासे जवानो वारो नथी.तेम छतां पण छल करीने स्वामीने सेवे,तो ते स्त्रीने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अनंगक्रीडा अतिचार. एटले अनंग कहेता कंदर्प्प, तेने जागृत करवासारु आलिंगन, चुंबन, नख प्रमुख अथवा नेत्र ना हाव, जाव, कटाक्षादिक हास्य प्रमुख वहामिश्करी विगेरे पर स्त्री साथें करे. दिलमां एम विचारे के मेंतो सोइमां दोरो परोववा नो जोग त्याग कर्यो छे. परस्पर एक शय्यामां सुइने जोग कर वानो मारे त्यागछे बीजानुं तो में व्रत लीधुं नथी पण ते,कामांध थवाथी एम न विचारे के, चेतना तो बन्नेमां बगडेछे एनाथी पण व्रत वेहेलुंज जांगेछे, मन चलेछे. तथा पोतानी स्त्री साथें चोराशी आसने करी काम जागृत करे. जोगविलास करे. तिथि प्रमाणे कामनिवासनी जग्यायें हाथनो स्पर्श करे. अंगमर्दनादि क रीने काम प्रगट करेः अथवा परम अजिलाष थये थके, पोतानी स्त्री हाजर न होय तो न चालते कार्य हस्तकर्म करे. स्त्री पण कामव्याकुल थये थके पोताना अंगुलथी सुखवासीया प्रमुख करे, अथवा स्त्री स्त्री मलीने, अधिकरणथी गुह्य स्थाने संचारण करे. अनें पोतानी इछा संतुष्ट करे, त्यारें पण तेने अतिचार लागे. ते माटें श्रावकने ज्यां त्यां कामसंज्ञा घटाडवानी चाहना करवी जोइएं. जेम लोजी माणस पोताना व्यापार धंधामां मग्न होय एटलामां जूख लागे,तोपण सह्या करे. धंधाना वचमां जूख ने गणकारे नहीं. एम करतां पण ज्यारें जूखथी रह्युं न जाय,त्यारें त्यांथी उठी करीने उतावलें उतावलें रसोइनी जग्यामां जे रसोइ हाजर होय, ते खाइ लिये, पण सुस्वादनीके कुस्वादनी कोइ पण

तजवीज न करे, फरी पण त्यांथी उठीने पोताना धंधामां वलगे. तेवी रीते समकेती, देशव्रत धारी पुरुष, परलोकना सापेक्ष धंधामां मग्न रहेछे. एवामा कामसंज्ञा उदय थइ, त्यारें अंतरभाव लाज म र्यादा डुगंछादिकने अनुसरता ते कामसंज्ञाने गणतीमां न गणे एम करतां अतिवेदोदय थाय,त्यारे व्याकुल थाय तो तत्काल उ तावलथी कंदर्प्परोग निवारण करीने, फरी पोताना स्वकार्यमां प्रव र्ते तो ते व्रती, कामसंज्ञा वधारवानी इच्छा शा माटें राखे ? शुद्ध श्रद्धावत श्रावक तो मैथुनसेवानी जग्याने जेवु कांकरुखानुं होय, तेवु करी जाणे. अने कहे के ए मलीन जग्याछे, तेनी इच्छा ते वडि नीतिनी वेलाशिवाय बीजे वखते न रहे तेवी रीतें मैथुन पण नि षेध छे. दोषनुं स्थानक छे.आ प्रमाणे त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो परविवाहकरण अतिचार. ते ए के, जे पोताना संताननो अथवा परज्ञातिनो अथवा आपणी नात जातमां पोता नु मोहापण जणाववाने अर्थें आगल थइने विवाह करी आपे कोइ वस्तु वानुं अथवा द्रव्यादिकनी सहायता करे, अथवा प्रेरणा दिक करीने कोइनी पासेथी अपावे तेणे करी ते विषयी प्राणी ने स्त्रीनो लाभ थयो त्यारे ते पुरुषतो तेनुं सारुं कहे. बीजाउने कहेके फलाणाने त्या फलाणे मारु घर वसाव्युं जो एवा हत्ता, तो आ विवाह थयो नही तो मारा शा हाल थात ? एवी रीतनी अ र्थी जनना मोढाथी पोतानी प्रशंसा सांभलीने वहुज खुशी थइ जाय. तेने जोइने बीजा पण जेउ विवाहना अर्थी होय,तेउ आवीने ते नी खुशामद करे, स्तुति करे, ने कहेके, आप साहेव जेवा परोप कारी थोडाज नजरें आवेछे ? एवा वखाणनां वचन सांभलीने तेने कहेके,कांइ काम काज होय, तो मने कहेजो सज्जन सम्मत करजो. अमारो तमारो एक वास्तो छे. एवी रीतें विवाहादिकनो सज्जनसबंध, संसारमां जग्याए जग्याएं कराववो, ए अनर्थेनु बी

ज वाववा जेवुं छे. तेवुं करवाथी व्रत शुद्ध न रहे. अने काम अ धिकरण वधारतां संसार वधे. श्रावकने तो पोताना घरमां पण कोइ एवुं कार्य करवुं होय,तो ते बीजाने जलावीने पोतें न्यारो ने न्यारो रहे. तो जे व्रती थइने परायो विवाह जोडावे, तेने चोथो अतिचार लागे. अहींयां पोताना घरसंबधी तथा जेनाथी बूटा य एम नथी, एवा संबंधीनो विवाह करवानी जयणा, ते पण प रिमाण राखी लेवुं. एमज स्त्री पण पारका विवाहमां मोड प्रमुख बांधे, ने आगल थइने कुलधर्म लजावे. त्यारें अतिचार दोष लागे.

५ पांचमो तीव्रानुरागअतिचार. ते एके जे कोइ, स्त्रीउपर ती व्र अभिलाष धरे. पारकी स्त्रीने जोइने मनमां बहुज चाहना करे. ते स्त्री विना क्षणमात्र पण रही शके नहीं. हरतां, फरतां, जीव, तेनामांज वलग्यो रहे. तथा देहमां काम वधारवाने तथा संजोग सामर्थ्य करवाने माटे अफीण,माजम, जांग, अने बीजी पण धातु हरताल, पारा प्रमुख पट्टी, बंधेजनी गोली शोधे. इत्यादि तीव्रकाम रागथी करे; त्यारें ते पांचमो अतिचार लागे. अने स्त्री पण काम वृ द्धि करवानी अनेक योजना करे.जेम के योनिसंकोचन औषध,मांयां फलक,शीश, त्रिफलां, लोदर इत्यादिक अंगमां गोली करीने संचरावे, अत्यंत उद्भट वेष जोवे.बहु हावजावादिक विषयलालसा करे, त्यारें तेने पांचमो अतिचार लागे.ए पांचे अतिचार जाणुं,पण आदरुंनहीं. अहीं स्वदारसंतोषव्रत वालाने छेवटना त्रण अतिचार छे. अने आग लना बे अतिचार ते तेने अनाचार छे. तथा परदारविरमणव्रतवाला ने तो ए पांचे अतिचार छे. स्त्रीने पण एज प्रमाणे अतिचार लागे.

॥ इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे चतुर्थ स्थूलब्रह्मचर्यव्रत पंमित श्री उद्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्ण ॥ ४ ॥

॥ अथ ॥

॥ पंचमस्थूल परिग्रहपरिमाणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

सुमति दइ श्रीशारदा, ताके पद पणमेव ;
पंचम परिग्रह व्रत तणी, भाषा करुं छुभेव ॥ १ ॥

हवे पंचम स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रत, विगतवार सहित करीने लखीएं छैएं परिग्रह एटले जे समस्त पणे बीजां द्रव्य नाना प्रकारनां ग्रहण करवां, ते परिग्रह जाणवो तेना बे भेदछे एक बाह्यद्रव्य परिग्रह अधिकरणरूप. ते नवविध परिग्रह छे. बीजो भाव परिग्रह ते ए के, चौद अभ्यंतर ग्रथिरूप जे परभावनुं ग्रहण, समस्त आत्मप्र देशथी सकषाय पणे बंध, ते भावपरिग्रह जाणवो. शास्त्रमा मूर्छा मुख्यवृत्ति तेने भाव परिग्रह केहेछे. तेमां चौद ग्रंथिना नाम. ते कहीये छैये. १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ डुगछा, ७ क्रोध, ८ मान, ९ माया, १० लोभ, ११ स्त्रीवेद, १२ पुरुषवेद, १३ नपुंसकवेद, १४ मिथ्यात्व, ए प्रमाणे चौद अभ्यंतर ग्रथिछे.

अहीयां संसारी जीवने केवल अविरतिना बलथी इछा आ काश समान अनंत अपरिमितछे. ए अविरतिना उदयथी इछा, अने इछाथी कर्म बंधमा पडयो थको जीव, चारे गतिमा भटकेछे. एमां कोइ अविराधक जीव, पुण्य प्रकतिना उदयथी मनुष्य भवादिक सर्व सामग्री जोग पाम्यो, अने सद्गुरुनी संगति पाम्यो जेथी करी श्रीजिनवाणी सांभली त्यारे चेतना जागृत थइ, चेतना सुधरी. त्यारे ते जीव, विचार करे केअहो ! हुं समस्त परभावथी न्यारो, अ बंधी, अछेय, अभेय, अदाह्यधर्मी एवो छतो इछावश पडयो. सम स्त छेदन, भेदन, परिभ्रमणादि दुःखनो भोगी, परधर्मी थयो, तो ह

वे हुंसमस्त परनावनुं मूल जे इछा, तेने दूर करुं, एवी चेतना थइ त्यारें समस्त परनाव त्यागरूप चारित्र आदरे अने जेने बहुल रसिक अविरतिपणाना बलथी समस्त परिग्रह मूर्छा एका एक छूटे नहीं, तथा दोषथी पण मरे, त्यारें ते लघुमार्ग जे देशविरति पणुं ते आदरे. इछा परिमाण व्रत धरे. ते इछा परिमाण व्रत नव प्रकारेंछे.

१ तेमां प्रथम धनइछापरिमाण. ते धन, चार प्रकारनुं जाणवुं. तेमां प्रथम गणिम धन कहीएं. ते एके जे वस्तु नंग गणीने वेचाय. ए श्रीफल प्रमुख जाणवां. २ बीजुं धरिम धन. ते ए के जे वस्तु, तोलथी वेचाय. ए गोल, साकर, करियाणा प्रमुख. ३ त्रीजुं मविधन. ते एके जे मापथी वेचाय. जेम दुध घृतादिक. ४ चोथुं परिछेद्य धन. ते एके, जे परीक्षायें वेचाय जेम सोनुं,रूपुं, जवाहीर अने वस्त्रादिक, नाणांप्रमुख परीक्षायें वेचायछे. ए चारे धन कहीयें. तेनुं जे परिमाण करवुं, ते धन परिमाण व्रत जाणवुं,

२ बीजुं धान्य परिग्रह, ते चोवीश जातिनुंछे, ते लखीएं छैएं. १ शालि, २ गहुं, ३ जुवार, ४ बाजरी, ५ जव, ६ मग, ७ मठ. ८ अडद, ए छूट, १० बोडा, ११ मटर, जवनी साथें थायछे ते. १२ अरहड एटले तुवर, १३ किसारी, १४ कोद्रा, १५कांग, १६ चणी, १७ वाल, १८ मेथी, १ए कलथी, २० मसूर, २१ तल, २२ मंमवो, २३ कूरी, २४ बंटी. ए चोवीश धान्यनी जाति व्यवहारमां सदा खावा लायकछे ते लेवां. बीजां पण १ धाणा, २नींडी, ३ सुवा, ४ अजमो, ५ जीरुं, एपण धान्यनी जातिमां छे ते औषधादिकमां कोइ प्रकारें काम आवेछे,वली बीजां पण धान्य. जे वांके, १ सामो, २ मणकी, ३ नूरट,४ चेकरिया, आ धान्य मारवाड देशमां प्रसिद्ध छे.बीजुं पण चिरिया,मोठ,अडकधान,खडधान, जे वाव्या विना उगे अने जे काल दुःकालमां खावा लायकछे. ए सर्व जातिनां अनाजनुं जे परिमाण, ते धान्यपरिमाणव्रत कहीएं.

३ त्रीजुं क्षेत्रपरिग्रह व्रत क्षेत्र एटले खुल्ली भूमी, अथवा वा ववानी तथा बगीचो करवानी जग्या तेना त्रण भेदछे. एक एवी जातिनी के, जेमां वरसादना पाणीथी धान्य नीपजे. एक जमीन एवीकं, जेमां कुवाना पाणीथी धान्य नीपजे अने एक जमीन एवी के, जेमां वरसादना पाणीथी पण धान्य नीपजे अने कुआना पाणीथी पण धान्य नीपजे, तेनुं परिमाण ते क्षेत्र परिमाण व्रत

४ चोथुं वास्तुपरिमाणव्रत. एटले जे घर, हवेली दुकान प्रमुख. तेना त्रण भेदछे तेमा ए खातवास्तुक ते भोयरा प्रमुख. बीजो उछ्रित वास्तुक ते ए के भोयरुं, तहखानुं, ए विना उंची एक मालनी, बे मालनी, त्रण मालनी. एम यावत् सात मालनी हवेली जाणवी. एनुं जे परिमाण राखे, ते त्रीजो भेद खातोछ्रित वास्तुक. ते ए के, भोयरा, तहखाना, कूवा, टांका, ए सौ हवेलीनी अंदर होय, तेने खातोछ्रित कहीएं तेनुं जे प्रमाण राखे, ते वास्तुकपरिमाण व्रत.

५ पांचमुं रूप्यपरिग्रहपरिमाण व्रत ते एके, शिक्का विना काचा रूपानो तोल, तेनुं परिमाण करी राखे, ते रूप्यपरिमाण व्रत.

६ छठुं सुवर्णपरिग्रह प्ररिमाण व्रत. ते एके रूपानी जेम अघड, शीक्का विनाना सोनाना तोलनु परिमाण करी राखे, ते सुवर्ण परिमाण व्रत.

७ सातमुं कुपदपरिग्रह परिमाणव्रत. ते ए के, कुपद केहेतां त्रांबुं, पीतल, राग कांसुं सीसुं, भरत लोढुं, ए सौ धातुना वासणनां परिमाणनो तोल करीने राखे, ते कुपद परिमाण व्रत जाणवु

८ आठमुं दुपदपरिमाण व्रत. ते एके, मूल्य आपीने वेचातां लीधेलां, दास, दासी, ते दुपद कहिएं. पण चाकर गुमास्ता प्रमुख ए वर्गमां गणाय नहीं एनुं जे परिमाण करी राखे, ते दुपदपरिमाण व्रत

९ नवमुं चोपद परिग्रह परिमाणव्रत. ते एके गाय, भेंस, घोडा, बलद, खतर, बकरी, गाभरी प्रमुख चोपगा जीव तेमने केटलां राखवां तेनी गणतीनुं परिमाण करी राखे, ते चोपद परिग्रह

परिमाणव्रत जाणवुं. हवे पोतानी इछा प्रमाणे केटलो परिग्रह राखवो, तेनो विवरो लखीयें छैएं.

१ प्रथम धन प्रमिमाणमां रूपुं,सोनुं,अण घडयुं,तथा घडयुं, अटलुं राखुं त्यार पछी रोकडा रुपैया असरफी तथा जवाहीर प्रमुख अटलां अमुक हद्द पर्यंत राखवानी तो जयणा छे परंतु प्रमाण उपरांत पुण्ययोगथी वधे तो धर्म प्रीतिएं करीने धर्म स्थानकमां खरचुं.

२ धान्य प्रमाणमां एम के, वर्षमां आटला मण धान्य राखवानी जयणा. तेनो विवरो कहेछे. आटला मण घर आश्रित खरचसारु तथा आटला मण बाहार बीजा कोइ प्रकारना खरच माटें वापरवामां आवे,तेनी जयणाछे. उपरांत नहीं. अने व्यापारनी विगत तो सातमा गुण व्रतमां लखवामा आवशे.

३ क्षेत्रपरिमाणमां आटला विघा जमीन राखवानी मने जयणा. उपरांत नहीं. क्षेत्र, वाडी, बाग, बगीचा प्रमुखनी जमीन संबंधी पण सर्व एमांज आव्युं.

४ वास्तु परिमाणमां खडकीबंधघर अमुक हद्द सुधी राखवां. तेनी जयणा. तथा छूटी दुकान, तथा तबेला, आटलां गौखानां, तथा आटली वखार. वली जो पुण्यना उदयथी लक्ष्मी वधे तो हाथी प्रमुख बांधवानां स्थल राखवानी जयणा. तथा परदेश संबंधी व्यापारनी दुकानो अमुक हद्द सुधी राखवानी जयणा. तथा आटलां घर नाडे देवानी जयणा. आटला नाडे राखेला घरने समरावानी जयणा. तथा कुटुंबसंबंधिना घरोना आदेश उपदेशनी जयणा. तथा पोताना संबंधी परदेश गया होय; तो तेना घर प्रमुख समरावानी जयणा.कोइ स्नेही गुमास्तो अथवा चाकर परदेश गयो होय, त्यारें तेना घरने समारवानी जयणा. तथा आजीविका हेतुयें कोइनी चाकरी करवी पडे,त्यारें ते धणी घर अथवा हवेली करावनानुं काम सोंपे त्यारें ते काम करवा तथा करावनानो आगार छे.

५ रूप्य परिमाणमां रूपु आटला शेर अथवा आटला मण पर्यं त राखवानी जयणा अने जवाहिरने तो धनपरिमाणमां गणेलुंछे ए सहु पोतानी निश्राना घरमां घरनी अजनाशछे.

६ सुवर्ण परिमाणमा सोनु, आटला तोल सुधी प्रमाण करी राखवुं. अने ए सोनुं, रुपुं, जवाहिर प्रमुखना व्यापार आश्रि तो सातमा व्रतमां लखीशुं

७ कुपद परिमाणमां त्रांबु, पितल, राग, लोढुं, कासु तथा नर त. ए सर्व मलीने धातुनां वासण आटला शेर अथवा आटला मण पर्यंत राखवानी जयणा अथवा बीजा कोई जातना घडेला घाट आटला तोल प्रमाणें राखवानी जयणा, उपरात निषेधछे.

८ दुपद परिमाणमां दास, दासी वेचातां लेवा, ते व्रत माफक रा खवानी जयणा. उपरात राखवानो निषेधछे. तथा गुमास्ता के चाकर प्रमुख राखवानी तो जयणा.

९ चोपद परिमाणमा गाय, भेंस, वत्स सहित, तथा सांढ सहित अमुक संख्या प्रमाणे करी राखवानी यजणा.वली तेमनी जे उंलाद वधे, ते राखवानी जयणा. घोडा, घोडी, उंलाद सहित एटला रा खवानी जयणा बलद एटला राखवानी जयणा. बकरी उंलाद सहि त एटली राखवानी जयणा सूतरी एटली राखवानी जयणा. हा थी एक, चार, दश अथवा अमुक सख्या सुधी राखवा, तेनी जय णा. ए शिवाय बीजा पण कोइ जातना चोपद जनावरो पोताना भोग निमित्ते अमुक संख्या सुधी घरमां राखवानी जयणा उपरात कोइ लेणामां अथवा कोइ बीजी रीतीए शिरपाव,नजराणा प्रमुख बक्षीश दाखल आव्या होय,तेने राखवानो आगार.बीजानो निषेध

एम बीजां पण घरवखरीना एटले घरमा वपरातां राठ पीठ मोटां अथवा ठोटां तथा वस्त्र प्रमुख ए सहु अधिकरण सर्व मलीने आट ला शेंकडा रूपैयाना अथवा आटला हजार रूपैयाना राखवानी

जयणा, उपरांत निषेध. वर्षमां आटला मण घृतनी जयणा. वर्ष प्रत्यें तेल मण आटलानी जयणा. वर्ष प्रत्यें परचुरण करियाणां मण आटलां घरखरच सारु राखवानी जयणा, एटले घरमां आटलुं राखीश तेनुं प्रमाण करी राखे, तेनी जयणा, उपरांत निषेध. व र्ष प्रत्यें आटला मण लूण एटले मीठुं राखवानी जयणा. उपरांत निषेध. वर्ष प्रत्यें गोल, मिशरी, खांम, चीनी साकर विगेरे आटला मण घरखरच सारु राखवानी जयणा, उपरांत निषेध.

एवी रीतें बीजी पण कोइ चीज, घरसंबंधी वापरवा सारु आट ली हद पर्यंत राखवानी जयणा. ए सहु एवी रीतें पांचमा व्र तमां घर संबंधी इछाछे अने व्यापार संबधी तो सातमा व्रतमां क हेवीछे. हवे ए इछापरिमाण व्रतना पांच अतिचारछे, ते लखेछे.

१ तेमां प्रथम धनपरिमाणातिक्रम अतिचारछे. ते ज्यारें धन, इछा परिमाणथी वधारे थाय त्यारें लोभ संज्ञाथी मनमां मनसुबा करे के आ पांच हजार तो छोकराना जमे करीएं, केमके छोकरो पण म्होटो थयोछे एने पण जोइशे. अने एने आपवुं, ते पण मने योग्यछे. एवा कुविकल्प करीने दीकराना पांच हजार रूपैया जूदा करी राखे; अने वली अनाज चावल प्रमुख इछा प्रमाणे तो घरमां तैय्यार पडयुंछे तो पण फरी बीजुं अधिक, जरी राखवामां लाभ जाणे, त्यारें धान्यनो शोदो करी राखे, अने जेनी साथें ते धान्यनो शोदो कर्यो होय, तेने कहेके ए अनाज अमे लीधुंछे, ते तमे तमारा घरमां हमणां राखो, अमारे जेम जोइशे तेम अमे लेता जइशुं. एवी रीतें ठराव करीने जेम जेम घरमां धान्य जोइएं, तेम तेम ते धान्य तेनी पासेंथी लावे अने पोताना अज्ञानथी मनमां एम जाणे जे मारे तो इछापरिमाणथी अधिक धान्य, घरमां राखवानो त्याग छे, अने ए धान्यतो बीजाना घरमां रह्युंछे; एमां मने शुं दूषण छे? एवा मनमां कुविचार करे. अथवा पूर्वे नियम लेवा वखतनो

काचो मण परिमाण करी राख्योछे अने देशांतर गये थके त्यां पाका मणनी चाल होय, तो पण ते मणने काचा मण परमाणे गणी राखे. एवा जे कुविचार करे, ते प्रथम अतिचारछे

२ बीजो क्षेत्रप्रमाणातिक्रम अतिचार. ते ए के जे, वास्तुपरिमाण राख्युं होय, तेनाथी वधारे वास्तु थाय, त्यारे बेहु घरनी वच्चेनी दिवाल होय ते तोडी पाडे; अने ते बे घरनुं एक महोटुं घर करे क्षेत्र, बगीचा, वाडी प्रमुख तोडी नाखीने महोटो बगीचो करे तेमज क्षेत्र पण महोटुं करे; अने मनमां एम विचारे के में जे परिमाण राख्यु छे, ते तो अखंड छे. जे कारण माटे गणती तो एक अथवा बेनी राखी हती,ते गणती प्रमाणे तो बराबर राख्युं छे अने महोटु करवामा शो दोषछे? गणती तो तेटलीने तेटलीज छे. एम जे करे, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो रूपुं अने सुवर्णप्रमाणातिक्रम अतिचार. ते एम के, इच्छा परिमाणथी ज्यारे वधारे थाय, त्यारें पोतानी स्त्रीना घरेणां प्रमुख भारे तोलनां बनावे, अथवा तेउनी निष्ठाये करीने राखे. कोइ भाजन एटले वासण प्रमुख सोना रूपाना होय,ते पण तोलमा भारे घडावीने राखे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो कुपदपरिमाणातिक्रम अतिचार ते एमके, त्राबु, पीतल अने कांसा प्रमुखनां भाजन, अथवा बीजां राठ रचीला जे गणतीमा प्रथम राख्यां होय अने ज्यारें संपदा मली, त्यारें यद्यपि ते भाजन, गणतीमा तो प्रतिज्ञापरिमाणनी संख्यानाज राखे, पण तोलमा बमणा त्रमणा शेरना बनावे अने मनमा एम धारणा धारे के,मारुं व्रत तो अखण्ड छे. भाजननी गणती तो में भागी नथी!! अथवा व्रत लेती वखते काचो तोल राख्यो छे, अने कोइ पर देशातर गये थके त्यां पाका तोलनो व्यवहार छे हवे पोताना अज्ञानदोषथी विचारेके, काचा पाकानी शी चर्चा छे? अमारे तो सर्व जणशनो सम

वी ले अने अज्ञाने करी एवुं विचारे के, शो योजन पूर्वे दिशिना मोकला राख्या हता, तेमां पचाश कोश दक्षिणदिशिना हता ते, आमां आज गणी लेउं. एटले दोढशोनी गणती थइ. अने आज ने दिवसें दक्षिण दिशि तरफ नहीं जाउं, मात्र एकज दिशिएं जइश. एमां मारुं व्रत पण नहीं भांगशे. एवा कुविकल्प करे, पण एक दिशिएं जवानुं काम पडवाथी त्यहांनुं त्यहां काम करे नहीं.जेटलो जे दिशिएं जवा आववानो नियम राख्यो होय, तेवीज प्रतिज्ञा न पाले,पण पोताना कार्यनी गरज पडवाथी उलट पालट करे, अने एवी कुविकल्पना करे, ते वारें तेने चोथो अतिचार लागे.

५ पांचमो स्मृतिअंतर्ध्यानातिचारछे. ते एमके,दिक्परिमाण करीने केटला एक दिवस वीत्या पछी ते विसरी जायके, में तो अमुक दिशिएं जवानुं शो योजन परिमाण राख्युं हतुं, अथवा ए अमुक दिशिनुं आटलुं राख्युं हतुं. एवा विस्मयमां जीव पडे अने तेणे करी दिशिपरिमाणमां ते कमवेश करे, अधिक न्यून करे अथवा नियम लइने कागल प्रमुखमां लखी राख्युं न होय अथवा बुद्धि विलास मंद पणे थयो,तेणे करी घणा दिवस वीत्या पछी चित्तनी भ्रमत्ववृत्ति थइ जाय,त्यारें परिमाणनी वधारे के थोडी गणती करे. तेथी पांचमो अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं.

॥ इतिश्री द्वादशव्रतविवरणे षष्ठदिशिपरिमाणगुणव्रते पंडित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ ६ ॥

॥ अथ ॥

॥ सप्तम भोगोपभोगविरमणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अब सप्तमकी विधि रचौं, पाले भविजन लोग ;
यह है गुणव्रत दूसरा, नामे भोगोपभोग ॥ १ ॥

हवे नोगोपनोग गुणव्रत बीजुंछे, जे कारणे, ए व्रत आदरवा थकी सचित्त चीजनुं खावानुं ठोडे, अथवा परिमाण करी राखे. तथा जेमा घणोज आरंन होय तेवो व्यापार न करे, एटले जेमां बहु हिंसादिक अवश्य करवा पडे, एवा व्यापारनो त्याग करे, अने अनक्ष्यनो परित्याग करे एटला नियम, आ व्रतमा लीरा जाय छे, ते माटे ए व्रत, पहेला पांचे व्रतने सफल करनारुंछे अने ए माटे एने गुणव्रत कहीयें हवे ए व्रतनी शैली सर्व लखेछे तेमां नोगोपनोगव्रतना बे नेदछे. एक व्यवहारथी, अने बीजो निश्चयथी,

१ तेमा प्रथम व्यवहारथी ते नक्ष्य अनक्ष्यनी समजण पामीने तथा बीजी आश्रव संवरनी समजण पामीने, खानपानादिक जे इंद्रियसुखनां कारणछे, तेमां शक्ति प्रमाणे बहु आरंन त्यागीने अल्पारंनी थाय ते व्यवहारनोगोपनोग विरमण व्रत कहीये.

२ तथा बीजो निश्चयथी ते एमके, जे श्रीजिनवाणी सांनली वस्तुतत्वनुं स्वरूप पामीने विचारे. जे जगत्मा परवस्तु ले इने खावी, ते हराम कहीएं जे पारकी चीज खाय, ते हरामखोर कहेवाय ते माटे जे नेकीवाला लोको छे, ते पोताना हक्कने ठलखे अने ते रीतें चाले पण पारकी चीज ग्रहण करवा माटे स्वप्नमां पण इच्छा न राखे. एम हुं पण शुद्धचैतन्य नाव धारी, अने पर म सत्पुरुषनी जाति यइने, जे वस्तु सडे, पडे, अने जती पण रहे, एवा पर पुजलना पर्याय छे, जगत्नी जे जूठ छे तेवा पदार्थो नो नोग मने हरामछे परवस्तुनो नोग करवाथी यश नथी, अने सामर्थ्य पण नथी, एवु विचारी परनावनो परित्याग करुं, तेणे करी स्वगुणवृद्धि थाय, एवी समजण पामीने पोताना आत्माने जगाडीने स्वरूपानदी करे, चेतनविलास अनुनवे. ते निश्चय नो गोपनोगविरमणव्रत कहीये. अथवा नोग शब्दनो अर्थ वली लखेछे.

सातमा व्रतना बे नेदछे एक नोग, अने बीजो उपनो

ग, ते कर्म व्यापारादि क्रियारूप एम छे, त्यां भोगना वली बे भेद छे. एक उपभोग, अने बीजो परिभोग, तेमां जे चीज एकज वार भोगमां आवे. जेम आहार, पुष्प अने विलेपनादिक, ते उप भोग. अने परिभोग एटले जे वारं वार भोगमां आवे ते,जेम भवन, वस्त्र, स्त्रीप्रमुख तथा कर्मथी एमछे एना भेद घणाछे, ते आगल ल खशुं, हवे एक, ए भोगोपभोग ते भोजन वस्त्र स्त्रीयादिकथी तथा बीजो, कर्म व्यापार क्रियाथी. तेमां प्रथम भोजनादिकथी कहेछे.

त्यहां श्रावकने उत्सर्गमार्गे निरवद्य आहार लेवो, तेनी शक्ति न होय तो सचित्त वस्तुनुं परिहारी थवुं,कदापि ते पण न थाय तो स चित्त वस्तुनुं परिमाण करी लेवुं. अने बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनं तकाय प्रमुख दुर्गतिना हेतु जाणी, अवश्य त्याग करवा. एमां पण पूरी शक्ति न होय तो, पोताना मंदवीर्यनो पश्चात्ताप करीने परि माण करी लेवुं. तेमां प्रथम बावीश अभक्ष्यनां नाम लखेछे.

१ वडनी पीपु, २ पींपलानी पीपु, पारस पींपलीनी पीपु, तथा ३ प्लक्ष ए पण पींपलनी जातिविशेषछे, ४ उंबरनी पीपु, ५ अने कालुंबरनी पीपु, ए पांचे वृक्षनां फल अभक्ष्य छे, ए पांचे फलमां मरकी सरखा मरकी जीव छे. आकारथी ते जीव,सर्व सरखा थाय छे. ए माटे ए पांचे फल अभक्ष्य छे. वली ६ मध, ७ मदिरा, ८ मांस अने ए माखण, ए चार वस्तुउ जेवो ए वस्तुउनो रंगछे तेवाज रंगना तेमां निरंतर असंख्य जीवो उपजे छे. वली ए चारे वस्तुउ महा विगयछे. ए भक्षण करवाथी घणोज बिगाड करे,का मादिक दोषोने वधारे. प्रथम तो ए वस्तुउ हिंसा कर्या विना थती नथी,अने पछी पण चेतनाने बगाडे, ए माटे ए वस्तुउ अभक्ष्यछे. वली पुराणादिक वैष्णवमार्गमां तथा कुराणादिक म्लेछशास्त्रमां पण मदिरा,मधु, मांसना घणा दोष कह्याछे, ए माटे ए चीजो तो, स्वपरदर्शनमां पण त्याग करवानी कहीछे. वली भांग प्रमुख जे

वाथी ते चेतनाने बिगाडे, माटे एने पण अनक्ष्य वस्तुमां गणवी एमां पण शरदी रहेछे, ते कारणे एनाथी त्रसकाय जीवोनी घणी उत्पत्ति थाय, माटे एनो पण त्याग करवो

१० तथा हिमना कांकरा एटले बरफ,ते पण अनक्ष्यछे. कारण के,एमां अप्कायना असंख्य जीवछे. खाधाथी ते चेतनाने मद करे. शरदी करे. वली ए चीज खावानी कांइ जरुर पण नथी ए बहु आरंनिक छतां स्वादिष्ट पण नथी ए बलादिकनी वृद्धिकारक पण नथी, अने वली श्री सर्वज्ञ परमेश्वरें पण प्रतिषेध कस्योछे एमां प्रसंगदोष तथा संगदोष घणाछे, ए माटे ए पण अनक्ष्यछे.

११ तथा विष जे अफीण प्रमुख चीज. ते अनक्ष्यछे जे कारणे अफीणादिक विषवस्तु खावाथी पेटना जे कृमि गंमोलादिक जीवछे ते सहु मरीजाय. वली चेतना मुंजाय, अने ए चीजनी खानी टेव पडी, ते बूटे नहीं. महोताद एटले मिजाज वधे. वखत वखत जो ए विषवस्तु, खावा माटे न मले तो घणो क्रोध उपजे; शरीर शिथिल थाय. वली अमली माणसने व्रत करवानुं दुष्कर थाय, अने सारो स्वनाव होय ते बदलाइने नठारो थाय. ज्यारें अमल करे, त्यारें एक रग होय, अने फरी उतरे त्यारे वली कांइ उर तरहेनो मिजाज थाय. अने स्ववशपणुं ठोडीने, परवश पडवुं थाय. वली ए चीज खावामां पण बहुज बेस्वाद छे. तथा अफीणादिक विषवस्तुने खावावालो,ज्यहां वडीनीति अने लघुनीति करे,ते क्षेत्रमां त्रस तथा स्थावर जीवनी हिंसा थाय. ज्या सुधी पेशाबनी शरदी जाय, त्यां सुधी पृथ्वीकाय प्रमुखना जीव एना गंधथी मरी जाय. ए माटें ए पण अनक्ष्यमा गणायछे. सोमल,वछनाग, हरताल प्रमुख जे विषचीज ते पण एमांज गणवामां आवे.

१२ वली जे मेघना करा एटले रोयडा,ते काचो गर्न मेघनो गले, तेना कराना कटका पृथ्वी उपर गलेछे, तेपण अशुद्ध द्रव्यछे,

एमां पण बरफना जेवो महा दोषछे. जिनआज्ञा विरुद्धछे. ए माटे ए करा पण अनक्ष्यछे.

१३ तथा खडी माटी, पृथ्वीमां बहुजातिनी थायछे, ते अन क्ष्यछे. कारण ए माटीमां पण असंख्य जीवछे. वली ए चीज खा वाथी पेटमां घणा जीवोनी उत्पत्ति थाय, तेमज पांडुरोग, आम वात, कबजीयत, पित्त, पथरि प्रमुख घणा रोग थाय, घणी मा टी खाय, तेना मुखनो चेहेरो पीलो थइ जाय, मुखनी सुरखी ए टले तेजी जती रहे, कोइ जातनी माटीमां मिंमक प्रमुख जीव नी योनिछे, त्यां शरदी पामीने जीव सूक्ष्म उपजता होय एवामां ते माटी जक्षण करे तो पंचेंद्रिय जीवनी पण हिंसा थइ जाय. माटी खावानुं जिनाज्ञा विरुद्धछे, ए माटे ए अनक्ष्यछे.

१४ तथा रात्रिजोजन तो प्रत्यक्ष दोषनिधानछे, अनें आ लोक तथा परलोकने विषे ए दुःख हेतुछे रात्रीना चारे आहार अ नक्ष्यछे, जे कारण माटे रात्रीजोजनमां जेवो आहार होय, तेवा रंगना तेमां तमस्काय जीवो उपजे. वली आश्रित जीव संपातिम तेमां घणा आवी मले. रात्रीजोजन करवाथी तेमां कांइ जेलसेल होय, तेनी खबर न पडे तथा प्रसंगदोष पण घणा लागे केमके जो रात्रीयें जोजन करवानी टेव होय तो, नित्य रात्रें रसोइ करवी पडे, त्यहां अग्निना योगें जीवोनो संहार थाय, श्रावकना कुलनो आचार पले नहीं, सूक्ष्म त्रस जीवो नजरें न आवे अने जो नजरें आवे तो पण यत्न न थाय. वली रसोइ करतां जे अग्नि बले त्य हां पासेंनी छत तथा दीवाल प्रमुखमां आश्रित जीवो रात्रीने वि षे जे बहु बेग होय, ते सर्व तापना योगें व्याकुल थवाथी अग्निमां जइ पडे तथा पतंग प्रमुख जीवो चक्षु इंद्रियना विषयें व्याकुल थइने अग्निमां जंपापात करी बली मरे. छत के छपरमां रात्रीने विषे सर्प, घरोली करोलीया, मच्छर प्रमुख घणा जीव वसता हो

य, एवामां ताप लागे तेणे करी ते सर्पादिक जीवो व्याकुल थइ मुखमांथी गरल नाखे, ते गरल कदापि भोजनमां पडे अने ते भोजन अजाणतां खाधामा आवे एटले आत्मानो घात थाय व ली जे भोजन, दिवसे राधी करीने राखी मूक्युं होय, ते पण रा त्रे न खावु, कारण एमां पण चीटी प्रमुख जीव चढे, तेनी ख बर रात्रीमां न पडे ते जीववालुं भोजन खावामा आवे त्यारे बु द्धिनो नाश थाय, एवु शास्त्र मध्ये पण कह्युछे "मेधां पिपीलिका हंति" ए माटे रात्रीये भोजन करवु निषेध कह्यु छे वली वासण मेलतां पण रात्रीये कोइ जीवनी रक्षा पले नही. वली रात्रीयें भोजन करवा वाला, परभवें उलूक, मजार, मूषक, सर्प, वागु ल, चामाचेडीया प्रमुखनो भव पामे. धर्म डुर्लभ पामे, अने पोतें रात्रीभोजन करे तो तेना पुत्र पौत्रादिक पण एज ढंगें प डे. ते पण तेवीज कुचालचालें चाले. एथी अशुद्ध परपरा चाली जाय अने जो पोते प्रथमथीज सारी चालें चाले तो, एट ले रात्रीभोजन न करे तो. पाछला पण सुचालें चाले. रात्रीभोज नमां प्रत्यक्ष जीवहिंसाछे ते जोइने अन्यदर्शनीना जल वीजल आ गल धर्म पाम्या हता, ए जिनाज्ञा विरुद्ध रात्रीभोजन छे ने मु नि पण पंचमहाव्रततुल्य छठुं रात्रीभोजन त्याग व्रत उचरावे छे. ए माटे रात्रीभोजन सर्वथा त्याज्य छे अने अभक्ष्यछे.

१५ तथा बहुबीज ते जेमां गर्भ थोडो अने बीज घणां होय ते तुछफल कहीयें रींगणु, वनस्पतिजातिविशेष, पटोल, खस खस, पंपोटा प्रमुख ए फलोमां जेटलां बीज तेटला जीवो छे जेम नवटांक भर तिलमा, तेरशें जीवोछे तो खसखसमां तो ए नाथी केटलाएक गुणा वत्ता होयछे ए माटे खावुं थोडुं ने जीवघात घणोज थाय, एनाथी कांइ उदरतृप्ति तो थाय नहीं, तेमज रींगणा प्रमुख बहु बीजवाली चीज, खाय तो ते पित्तादिक रोगनी हेतुछे

वळी एवी चीजो खावी ते जिनाज्ञा विरुद्ध छे. एमाटे अभक्ष्यछे.

१६ तेमज आचार एटले बोळानुं अथाणुं जे भातभातनुं थाय छे जेमके, आंबवेलीनुं, फाफलनुं, लींबुनुं, केरीनुं,केरडानुं, किरमदानुं, आंबलीनुं, काकडी प्रमुखनुं अने आडुं नीली हलदर, जमी कंद, गरमर इत्यादिनुं अथाणुं अथवा राइतुं त्रण दिवस उपरांत अभक्ष्य छे. ए सर्व अथाणां तुछछे, त्रस जीवोनी खाणछे. बीलां प्रमुख तो प्रथमथीज अभक्ष्य छे, तो तेनुं फरी अथाणुं तो थायज केम? विष तो हतुं ने पछी वळी तेमां झेर मेळवीने तेने वघार्युं एटले तेनुं केवुंज शुं? चोथे दिवसें एमां नियमा बेंद्रिय जीव उपजे, अने जो एठे हाथे स्पर्श करे तो पंचेंद्रिय जीव पण उपजे. अन्यदर्शनीउना शास्त्रमां पण अथाणुं, नरकद्वारतुल्य गण्युंछे. ए माटे ए पण सर्वथा अभक्ष्यछे.

१७ तथा विदळ जे घोळवडां ते अभक्ष्यछे, जे कारणे ते वडां दाळनां थाय. ते विदळ धान्य जे कलाइ, चूंट, बोडा, मग, मठ,तुवर प्रमुखनां थाय. ए वडां ज्यारें काचुं गोरस जे दहिं मछो, एमां नाखे त्यारें ते खावां अभक्ष्यछे. जे कारण माटे विदळमां दहिं मछाना संयोग मात्रें तत्काल बेंद्रिय जीव उपजे. माटे जे कोइ चीज विदळनी होय,ते मछानी साथें मळे तो ते अभक्ष्यछे. जे अनाजनी नीरस दाळ होय, अने जेमां चीकणास न होय ते विदळ जाणवुं. पण राइ अने शरशव प्रमुख तेमांनी जे दाळ होय तेमां विदळ दोष नथी. कारण, तेमां चीकणाशछे. अहींयां छाश प्रमुख गरम करी विदळमां मेळवे, तो दोष नथी. तथा दुध पण जो उनुं न कर्युं होय तो विदळनी चीज साथें खावुं अयुक्तछे. कारण, तेमां बेंद्रिय जीवनी उत्पत्ति थाय. ए माटे विदळने काचा गोरसनी साथें खावुं ते अभक्ष्यछे.

१८ तथा वेंगण जाति अभक्ष्यछे. कारणके, वेंगणमां बहु बी

जछे. तथा एना बीजमां सूक्ष्म त्रस जीव रहेछे. वली ए वेंगण काम संज्ञाने वधारे निद्राने वधारे. मति धीठी करे. ए द्रव्य,अति अशु द्धछे. ए वेंगणनी जाति सर्व पण एवीज अनद्दय जाणवी, बीजी लीलोतरी प्रमुख तो सुकी करीने पण खावानी आज्ञाछे. अने ए ने तो सुकां करी खावानो पण निषेधछे ए माटे ए अनद्दयछे.

१ए तथा अजाण्युं फल, ते पण अनद्दयछे जे कारण माटे अजाण्युं फलछे. तेनी तरेह, गुण, दोषनी मालम नथी तो ते केम खाधुं जाय? कदाचित् विषफल होय, तो आत्मघात थाय. व्यग्र चेतना थाय, ए माटे अजाण्युं फल अनद्दयछे.

२० तथा तुछफल एटले वनबोर, जेने चणीबोर कहेछे ते तथा पीलूडा, पीचू प्रमुख तथा अत्यंत कोमल फल, फ ली, ते पण अनद्दयछे जे कारणे एवी चीज घणी खाए तो पण तेणें करी तृप्ति थाय नहीं. वली पछीथी घणा दोषो लागे अने जे फल खाइने तेनी गोटली ज्या नाखे, ते जग्याये ते गोट लीमां संमूर्छिम पंचेंद्रिय जीव असंख्य उपजे. वली घणां तुछफल जे खाय,तेने सद्य एटले थोडाज वखतमां रोगोत्पत्ति थाय ए मा टे एवा तुछ फलफलादि अनद्दयछे.

२१ तथा चलितरस पण अनद्दयछे. जे चीजनो काल पूरो थ यो, स्वाद बदल्यो,तेनी मर्यादा पूर्ण थइ ते चलितरस कहीयें कोह्यु, सड्युं अन्न, बीजुं वासी रोटली, सीरो, कचोरी, तरकारी, खीचडी, वडां, नरम पूरी इत्यादिक अनेक रसोइ, जेमां पाणीनी सरसाइ र ही होयछे, ते चीज वछें एकरात व्यतीत थये वासी थइ एटले ते अनद्दयछे तथा मिठाइ वर्षाकालमां सारी उत्तम प्रकारनी वेश ब नी होय तो, उत्कृष्ट पंदर दिवस सुधी नद्दयछे, पछी अन द्दयछे. अने जो तेनो वर्ण, गंध, सीताबी बदलाइ गइ तो काल परिमाण पहेलां पण अनद्दयछे. तथा उष्णकालमां मिठाइनो का

ल, वीश दिवसनोछे उपरांत अनक्ष्यछे. तथा शीतकालमां एक मास काल उपरांत अनक्ष्यछे. तथा दहिं, शोल पहोर पछी अनक्ष्यछे. पण एकरात वीतेली नक्ष्य जाणवी. तेमज महानो काल पण ए प्रमाणेज जाणवो. ए रीतें जेटलो जेटलो जे जे वस्तुनो काल शास्त्रमां कह्योछे, तेटलो तेटलो काल पूरो थया पछी, ते चीज चलितरस थाय; ए माटे अनक्ष्यछे. जे माटे चलित थाय, त्यारें असंख्य बेंड्रिय जीव तेमां उपजेछे. ए माटे ए चलितरसनो त्याग कह्योछे.

२२ तथा बत्रीश अनंतकाय पण अनक्ष्यछे. जे कारणे, सोइनी अणी उपर जेटलुं कंद मूल रहे, एटलामां पण अनंत जीवो छे. ते सहु सूक्ष्म, बादर, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, ए सूक्ष्म बादरना नेदें करी आठ प्रकार थया अने नवमुं प्रत्येक वनस्पति ए नव जातिना सर्व जीवोथी पण अनंत गुणा जीव, सोइना अग्रनागमां कंदनी जेटली जग्याछे तेटली जग्यामां एटला जीवोछे. ए माटे सर्व अनंतकाय अनक्ष्यछे ॥२२॥ इति बावीश अनक्ष्य विवरणं ॥

हवे बत्रीश अनंतकायनी जाति लखेछे. १ जे नूमिमध्यें कंद थाय, एवी सहु कंदजाति, अनंतकाय जाणवी. २ सूरण कंद ते जमीकंद केवायछे, ३ वज्रकंद, ४ लीली हलदर, ५ नीलुं आडुं कंद, ६ लीलो कचूंरो, ७ सतावरी वेली औषधि, ८ विराली लताविशेष सोफाली, ए कुआर, १० थोहरी कंद जे सीज तथा लंका सीजनी जाति, ११ गिलो एटले गुलवेल, १२ लसण, १३ वंस करेला एटले वंस संबधीनी कारेली, १४ गाजर, १५ लूणी एटले साजी वृक्ष, १६ लोढीपद्मनीकंद, १७ गरमर कच्छदेशमां प्रसिद्ध, १८ किसलय कोमल पांदडां जे नवां उगतां सर्व गुछानां पांदडां, तथा सर्व वनस्पतिना जे उगती वखतना अंकूर होय. ए सहु अनंत कायछे. एटले सर्व वनस्पतिनां उगतां पांदडां, अने उगता अंकूर, प्रथम अनंतकाय होय, पछी ज्यारें महोटां थाय, त्यारें कोइ

प्रत्येक वनस्पति थाय अने कोइ अनंत कायपणे पण रहे, १ए खीरसूआकंद कसेरु अनतकाय, २० थेग ते थेगीनी भाजी, मोथनी जाति, ११ हरिमोथ, एटले लीली मोथ, २२ लूणवृक्षनी गाल, २३ खिल्लोडा कंद विशेष, जेने टीफोरुं कहेछे, २४ अमृतवेली, २५ मूलानी पाड प्रसिद्धछे, २६ भूमिरुहा ते भूमिफोडा कहीएं, छत्राकार देशभाषाएं सापनुं वेसणुं, २७ वद्भूलानी भाजी, २८ वरुहार प्रसिद्ध विदल धान्य, जेने अंकूर आव्या होय ते, २ए सुअर वल्ली जे रोहिमां महोटी सीम जेवी थायछे, ३० पल्लंकानी भाजी शाक विशेष, ३१ कोमल आंबली ज्यां सुधी माहे बीज संक्रमे नहीं, त्यां सुधी अनतकाय जाणवी, ३२ आलुकंद ते रताळु, पिंमालुविशेष ए प्रमाणे बत्रीश अनंत काय जातिनां सामान्य नामछे ते कह्यां अने विशेष नाम तो अनेकछे ते एम जे, कोइ वनस्पति तो पंचाग अनंत कायछे, कोइ वनस्पतिना मूल अनत कायछे, कोइ वनस्पतिना पत्र अनंत कायछे, कोइनां फूल अनंत कायछे, कोइनी छाल अनंत कायछे, कोइनु काष्ठ अनंत कायछे, एम कोइनुं एक अंग अनंत कायछे, कोइना बे अंग अनंत कायछे, कोइना त्रण अंग अनत कायछे. कोइना चार अंग अनंत कायछे, कोइनां पाचे अंग अनत्त कायछे.

हवे अनतकायना लक्षण लखेछे. जेणे करी अनंत काय उल खाइ जाय, ते लखेछे. जे वनस्पतिना पत्र, फल, फूल प्रमुखनी शिरा एटले नस ते मालम न पडे गुप्त होय, जेना संधिनी मालम न पडे, जेनी गांठ पण गुप्त होय, जे भागी थकी बराबर भागे, जे छेद्या पछी फरी उगे, जेमां पादडा महोटा गुज सरखा होय, सचीकण होय अने जेमा घणा फल, पादडा प्रमुख कोमल होय, ते सर्व लक्षण, अनंत कायनाछे. ए बत्रीश अनत कायनां नाम कह्यां

अहींया अभक्ष्यवस्तुउमां अफीण, भाग प्रमुखनो जो प्रथमथी

खावानो चाल होय, जेना विना चाले नहीं; ते खावा बूट राखे, तेनी जयणा. रात्रीजोजन, मासमध्ये चार अथवा पांच अथ वा दश, तिथिना दिवस टाले. अथवा जेवी शक्ति होय, ते प्रमा णे राखे के एटला दिवसें रात्रीयें आहार करवानी जयणा. उपरां त निषेध. बीजा दिवसोएं त्रिविहार, डुविहार करुं अथवा चोवि हार करुं अने बीजी पण अजक्ष्य वस्तु, जे उशड वेशडमां कोइ दिवसें खावामां आवे, तेनी जयणा. अने बत्रीश अनंतकाय नि षेध करे, परंतु रोगादिक कारणें औषधमां लेवानी जयणा तथा अजाण पणे कोइ द्रव्यमां जल्यां थकां आवे तेनी जयणाछे.

हवें चउद नियमनुं विवरण लखे छे ॥ गाथा ॥ सचित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वछ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंन्न दिसि न्हाण जत्तेसु ॥ १ ॥

अर्थ—श्रावकें यावत् जीव, पंचाणुंव्रतमां इछा परिमाणमां कोइ आगली अनेक तरेहनी कर्म परिणतिनी संजावनायें करीने, पोता ना निर्वाह समर्थनो उदय अति डुस्तर विचारीने घणी वस्तुउनुं प रिमाण राख्युं होय, तेमांथी फरी नित्यनो आश्रव निवारणने माटे संक्षेप करवाने अर्थें चौद नियमनी दिनप्रत्यें धारणा राखे, ते कहेछे.

१ त्यहां प्रथम सचित्त परिमाणमां मुख्यवृत्तिथी तो श्रावकने सचित्तनो त्याग करवो जोइएं, जे कारण माटे अचित्त वस्तुना आहा रमां चार गुणछे. प्रथम तो प्रासुक जलादिक पीधाथी बीजा सर्व सचित्तनो त्याग थयो. ज्यां सुधी अचित्त थयो नथी, त्यां सुधी मुखमां प्रक्षेप न करे. बीजो गुण ए के रसनेंड्रियनुं जीतवुं थयुं. गमे तेवो स्वाद सचित्त वस्तुमां होय, तो पण खाय नहीं. केटलीक चीज तो रांध्या विनानी पण स्वादिष्ट लागेछे. परंतु सचित्तत्यागें करी, ते सर्वनो त्याग थयो. त्रीजो गुण ए के अचित्त जलादिक पीधे थके कामचेष्टानी शांति थाय. घडी घडी उपयोगमां जीव

रहे के, रखे सचित्त वस्तु खावामां आवी जाय. चोथो गुण ए के, जेटलुं जलादि द्रव्य अचित्त कर्युं होय, तेनाथी जेटला जीवोनी वि राधना थइ, तेटली बंधकभावें चेतना थइ एटलामाज चेतना रही, पण वली प्रतिक्षणे ते वस्तुउंमां असंख्य अनंत जीवोनी उत्पत्ति थाय, तेउंनाथी विरोधिभाव मटयो. इत्यादिक बीजा प ण घणा गुणछे, माटे ते केटला लखियें?

जे अचित्त करवामां छकायनी विराधना थायछे, ए माटे एक ज कायनी विराधना सारी एम कही ने जे सचित्तनो त्याग नहीं करे, ते जिनशासननुं रहस्य नथी पाम्यो. जे सचित्त परिहारमा आत्मदमनता, उत्सुक्यनिवारणता अने मंदविषयकषायपरि णति प्रमुख अनेक गुण थाय छे, ते नथी जाण्या एटलुंज नही, परतु जेणे करी स्वदया घणी थायछे ते गुण तेणे न जाण्या, ए माटे सचित्तत्यागमा घणो लाभ छे एवुं आगममा घणुं सूक्ष्म र हस्य छे. ते कोइ पण छद्मस्थ जीवथी आगमनो पार पामवो बहु मुश्केल छे. जो हठ छोडी करीने बहु बुद्धिनो खरच करे,तो कांइ क रहस्य पामे, ए माटे बाहेर अल्पमतिनी कुयुक्ति सांभलीने मुंजावु नहीं जैनशैली अति गंभीरछे, ए माटे मुख्यपणे सर्व सचि त्तपरिहारीज थवु, अने तेम नहीं बनी शके तो सचित्तनुं परिमाण करी लेवुं के, आटला सचित्तनी मने छूटछे इति सचित्त नियम प्रथम

२ बीजो द्रव्यनियम तेमा धातुमय शिलाकापात्र प्रमुख तथा पोतानी अंगुलि प्रमुख विना जे मुखमा खाए, तेने द्रव्य क हीएं "परिणामांतरापन्नं द्रव्यमुच्यते" ए लक्षण द्रव्यनुंछे. त्य हां खीचडी, मोदक, वडा अने पापड प्रमुख वस्तु, घणां द्रव्य नि ष्पन्नछे तो पण परिणामांतरथी एक द्रव्य कहीये. घणा द्रव्य वि ना एक द्रव्य निष्पन्नछे. तो पण घउंनी रोटली. तथा बाटी, घुघ री, पोली, ढोकला प्रमुख ए सर्व. भिन्न द्रव्य कहीएं. जे कारण

माटे नामांतर, स्वादांतर अने रूपांतर तथा परिणामांतरथी द्रव्यांतर थायछे. अथवा अहींयां कोइ आचार्य, बीजी रीतें पण द्रव्यविवक्षा कहेछे; परंतु बहु वृद्धपरंपरासंमत एहज छे ए माटे द्रव्यपरिमाण राखे के, आटलां द्रव्य, आजना दिवसमां हुं खाइश. ए द्रव्य नियम बीजो जाणवो.

३ त्रीजो विगयनियम. तेमां दश विगयछे, तेमां चार महा विगय छे, एक मधु, १ मांस, २ मांखण, ३ मदिरा, ४ ए चारनो तो बावीश अभक्ष्यमां त्याग कस्योज छे बाकी छ विगय छे; ते भक्ष्यछे. दूध, १ दहीं, २ घृत, ३ तेल, ४ गोल, ५ अने सर्व मिष्ट पकवान, ६ ए छए विगयमांथी एक, बे, त्रण छोडे, बीजानी जयणा राखे. एना निविआता, पांच पांच जातिना एक एक विगयना कह्याछे. ज्यारें विगय त्याग कस्या, त्यारें ते नीविआता पण त्याग करवा जोइयें. अने जो न छोडया जाय तो, तेज वखत धारी ले के मने विगयनोज त्यागछे पण नीविआतानी जयणा छे. इति विगयनियम तृतीयः

४ चोथो उपानह नियम, एटले जोडानो नियम. पगरखांनी जाति एटले जूती, खडाउ, मोजा, बूट प्रमुख, ए जीवहिंसानां महोटां अधिकरणछे. त्यां श्रावकने जिनपूजादिक कारणविना खडाउ पहेरवां नहीं अने जोडा विना तो चालवाने समर्थ नथी; ए माटे एनुं परिमाण करी लेवुं के, आजना दिवसमां आटला जूतीना जोडा पहेरीश, बीजानी जूती पगमां पहेरुं नहीं. अने भूले चूक्ये बीजानी जूती पगमां पडे, तो तेनी जयणा. ए उपानह नियम चोथो.

५ हवे पांचमो तंबोलनियम. ते चोथो जे स्वादिम नामें आहारछे ते जाणवो. पान, सोपारी, लविंग, एलची, तज, तमालपत्र, सीतल, चिणिकबाब, जायफल, जावंत्री, पींपलीमूल,

अने पीपर प्रमुख करियाणुं जेनाथी मुखशुद्धि थाय, पण उदर पूर्ण न थाय, ते चीज स्वादिम आहारविशेष तंबोल कहीये. एनुं परिमाण करी लेवु के.आजना दिवसमां आटलां तबोल. मु खवास, ते शेर अथवा अर्धशेर, मारे खावा एवी रीतें परिमाण राखे, अथवा संख्याये राखे जे, आटली चीज तबोलमा खावी. ए पांचमो तबोल नियम.

६ छठो वस्त्रनियम. ते स्त्री पुरुषना पांचे अंगोनां जे वस्त्र, ते वेष कहेवाय एउनी संख्या राखे जे आजना दिवसमा एट ला वेष मारे पहेरवा अने आटला छूटा वस्त्र वापरवा. जे कार ण माटे रात्रीएं पहेरवानु तथा स्नानादिक करती वखत पहेरवा नुं वस्त्र वेषमा गएयुं जाय नहीं ए माटे ते वस्त्रने जूदां राखे, अथवा वेष न गणे तो समुच्चय वस्त्रनी संख्या राखे के, आजना दिवसमा आटली संख्याये मारे वस्त्र वापरवाछे. बीजां नहीं अ ने जेल संजेल पणे अजाणथी बदलाइने पहेरवामा आवे, तेनी जयणा ए छठो वस्त्र नियम.

७ हवे सातमो पुष्पजोगनियम कहेछे ते एमके, मस्तकमा राख वा लायक,गलामां पहेरवा लायक फूल तथा फूलनी शय्या,फूलना तकीआ, फूलना पखा, फूलना चंदरवा, अने जाली प्रमुख जे जे चीज जोगमां आवे फूलनी छडी, फूलना सेहेरा, फूलनी कलंगी,फू लना तोरा इत्यादिक. अने फूलनी जातिमा जे सुगंधि फूल जोगमा आवे, तेनी आटली द्रव्यगणतिमा इच्छापरिमाणे छूट राखे तथा एटला फूल, नाके करी वास लेवानी धारणा प्रमाणे छूट राखे तथा आटली जातिना देहना जोगमा लेवा मोकलां राखे.तेना तो लनी गणती राखे एवो नियम, उपयोग राखीने करे. जेटलुं पले, तेटलुं तोल, वजन, गणती, जाति, व्यापार प्रमुख जेवी पोतानी शक्ति होय, तेवी रीतें राखे. ए पुष्पनियम सातमो

८ हवे आठमो वाहननियम. ते रथ, गाडी, गज, घोडा, पालखी, उंट, बलद, नावप्रमुख. जे उपर बेशीने ज्यां जवुं होय, त्यां जवाय, ते वाहन कहेवाय. ते वाहन सर्व त्रण जातनां ढे, एक तरतां, बीजां फरतां अने त्रीजां वरतां. एनी संख्या परिमाण करी राखी ले. ए नियममां कोश खेडवो, क्षेत्र समारवुं, चकनोल तथा हिंनोले चढवुं, शेरडी प्रमुखना चक्रमां बेसवुं, ए सहु आवे. ए माटे तेउनी संख्यापरिमाण राखी लेवुं के, आटली संख्यानां वाहन उपर आजना दिवसमां मद्दारे चढवुं. ए वाहन नियम आठमो.

ए नवमो शयननियम. ते एम के, शय्यानो नियम राखे. शेज, खाट, ते न्हानी मोटी तखत, इत्यादि लाकडाना तथा तखता, चोकी तथा नूमिउपर तूलनी तथा रूनी नरेली सुखशय्या, एट लानुं परिमाण राखे, जे आजना दिवसमां मने आटलानो नोग करवो ; एवो नियम राखे.आटला आज दिवसें मद्दारें बिढानां, उपरनां अने पलंग पोस प्रमुख अने आसन खुरशी उपर बीढाववानां, चोकीनां, पट्टा प्रमुखनां. ए सर्व न्हाना मद्दोटानो सर्व उपयोग धारीने परिमाण करी राखवुं अने नूला चूक्यानी जयणा राखे. एवी रीतें शक्ति प्रमाणे परिमाण राखी ले. ए शयन नियम नवमो.

१० हवे दशमो विलेपननियम. ते एमके, नोगने अर्थें आटलो केसर, आटलुं चंदन, आटलो चूवो, अत्तर, जवादिक, तेल फूलेल, कमरी, कस्तूरी, अबीर, अरगजा प्रमुख जे जे अंगने लगाववानुं तेल के अत्तर,ए सर्वनां नाम धारीने गुलाबनुं अत्तर अथवा अंबरनुं, फितननुं, खसखसनुं इत्यादिकना अत्तरनी संख्या करीने परिमाण राखे. अथवा उवटणा पण सहु एमांज आवे. ते सहु आजना दिवसमां आटला तोलनुं मारे जोइशे एटलुं राखी ले. एथी वधारेनो नियमढे. बीजा पण विलेपननो सहु तोल परि

माण राखे. अहींयां पूजादिक धर्मकरणी करतां हाथ प्रमु
खने विषे धूपधाणुं के अगरवत्ती लेवी पडे ते तथा पोताना
अंग के मस्तके तिलक करवुं पडे तथा परमेश्वरना अंगें तिलक प्रमु
ख करवां पडे, तेनाथी मह्वारो नियम न नांगे, एम नियममां करे
ली धारणाथी धर्मने माटे जे काइ विलेप अधिकरण जोइये तेथी
नियमजंग थाय नहीं. ए विलेपननियम दशमो

११ अगीयारमो ब्रह्मचर्यनियम ते एमके, श्रावकनें दिवसें
अब्रह्मसेवा तो प्राये निषेधछे. अने रात्रीनी जयणाछे अथवा
परिमाण करे के, आजनी रात्रीमा आटली वार अब्रह्मच
र्यनी जयणा. अहींयां स्त्री साथे हास्य, विनोद अने आलिंगना
दिक, ते सर्वमाहे मैथुनक्रिया लागेछे, ए माटे जेवी शक्ति तेवा
नांगा राखे. कोइ श्रावकनें रात्रीये चतुर्विध आहार करवानो त्या
ग होय अथवा रात्रीएं एकांतध्यान करवानो चाल होय, जप
जापनी रुचि तेने घणी होय ते मनमां एम जाणे के, रात्रीयें विष
यसेवा करी अशुद्ध थइने जप केम करुं ? वली विषयरूप रोगनी
लगन लागीछे, ते पण परिणामने बगाडेछे, ए माटे दिवसने वि
षे विषय विकल्प मटाडीने पछी शुद्ध थइने रात्रीये निश्चित पणे
स्वस्थचित्त जप करुं एवी बुद्धिथी दिवसने विषे विषय सेवे, रात्री
ये न सेवे ए माटे कोइनें दिवसमा निषेध अने रात्रीनी जयणा,
कोइने दिवसनी जयणा अने रात्रीये निषेध, अने कोइने रात्री
तथा दिवस ए बंनेनी जयणा पण गणती राखे के, रात्री दिवस
मलीने आटली वार स्त्रीसंगें जोगसेवा करवी, ते पण पोतानी जे
वी शक्ति होय, ते प्रमाणे नियम राखे इति ब्रह्मचर्य नियम एकादश

१२ बारमो दिसि के० दिशिनो नियम ते दशे दिशिये जवा
आववानुं परिमाण ते जेवी शक्ति अने जेवुं प्रयोजन, ते प्रमाणे
राखे अहींयां आदेश, उपदेश, आदमी मोकलवानुं, कागलनुं वां

चवुं, लखवुं. ए सर्व एमां आवे. माटे जेवुं पळे,तेवुं राखे. इति दिशि नियम द्वादश.

१३ तेरमो स्नाननियम. ते एमके दिवसमां तैलादिक अभ्यंग पूर्वक स्नान करवुं तथा अभ्यंग कस्या विना स्नान करवुं, तेनुं परिमाण राखे जे दिवसमां आटली वार स्नान करीश. अहिंयां देवपूजा निमित्तें अधिक स्नान करवुं पडे, तो पण नियमभंग थतो नथी. एवी रीतें सर्वव्रतमध्यें धर्महेतुयें जें कमवेश करवुं पडे,तो तेनाथी नियमभंग नथी. इति त्रयोदश स्नाननियमः

१४ चौदमो भात पाणीनो नियम. ते एमके, चारे आहारमां स्वादिमनुं तो तंबोलना नियममां परिमाण राख्युंछे अने बाकी त्रण आहार रह्या, तेमां प्रथम खादिममां मीठाइ मिष्ट मेवा अथवा मिष्टान्न, पान, मोदकादिक. अशनमां भात, रोटली, कचोरी, शीरो, तेनुं परिमाण प्रमुख राखे के, दिवसमां आटला शेरनी जयणा. अहींयां घरमां घणो परिवार होय, तेउने माटे अशनादिक घणुं करवुं करवावुं पडे, तेनो गृहस्थने छूटको नथी ए माटे एनी जयणा राखे तथा पारके घेर, जाति प्रमुख संबंधें जमवा माटे जवुं पडे, त्यहां तो केटलाक मण भात प्रमुखनी रसोइ बनावी होय, पण नियम धारीने एनो दोष नथी, जे कारण माटे नियम धारीएं तो स्वनिष्टाएं खावानुं परिमाण कर्युंछे; अने घरसंबंधी ज्ञाति संबंधीथी छूटातुं नथी ; ए माटे पोतें खावानुं परिमाण करी राखे के, आटला तोलथी वधारे खावुं नहीं. एटलुं पळे. अने जो परिणाम दृढ करीने सर्व संबंध छोडीने स्वनिष्ठा परिमाणथी अधिक पचन पाचनमां न जमे, तो ते बहुज सारुं ; पण सर्व गृहस्थथी एवुं पळे नहीं. ए माटे यथाशक्तिएं परिमाण राखे. तथा त्रीजुं पानआहारनुं परिमाण राखे के, दिवसमां आटला कळश, पाणीना वावरुं. अहींयां पण घणा परिवार वा

लाने पाणीनुं प्रमाण ते स्वनिघ्नोगनिमित्त जूडुं राखवुं, समुदा यना जेज संजेजनी बूट नथी, एमाटे ते जूडुं राखे तो बहु सारुं. इति नात पाणी नियम चतुर्दश

अहींयां जे कोइ अधिक जाववंत साधक होय ते सचित्तादि परिमाणमां तथा इव्यपरिमाणमां जूदां जूदां नाम लेइ लेइने राखे तेने महोटी निर्जरा थाय, अने अशक्तने तो सामान्य करवुडे. ॥ इति चतुर्दश नियमाः समाप्ता. ॥

हवे पंदर कर्मादाननुं स्वरूप लखे डे. कर्मादान एटले जें व्यापार करतां गाढां पापकर्मोनुं बंधन थाय, एवुं व्यापारकर्म ते पापक र्म, तेनुं आदान एटले ग्रहणडे जे व्यापारमां तेने कर्मादान क हीएं. अहींयां संसारमां पाप तो सर्वे व्यापारमां थायडे, तोपण वी जासर्व व्यापारथी ए पंदरे कर्मादान व्यापारमां घणुं पाप अने म लिन परिणाम पणुंडे ए व्यापारे करी पापनी परपरा बहु चाले. ए माटे श्रावकने ए अवश्य त्याज्यडे. कदापि ए कर्मादान व्यापारमांज पोतानी आजीविका लागी होय ने तेथी करी ते न बूटे तो परिमा ण करी लेवु ॥ हवे ए पंदर कर्मादाननुं जूडुं जूडुं विवरण कहेडे ॥

१ प्रथम इंगालकर्म ते लाकडां बालीकोयला करीने वेचे अ ने तेणे करी पोतानी आजीविका उपजावे, ते इंगालकर्म तथा कोइ तरेहनी जठी करे, इंट नीपजावे, कुंजार कर्म, लोहार क र्म, सोनार कर्म, अंगारा कर्म, बंगडीकार, सीसकार, कलाल, ज ठियारो, जाडजुंजो, हलवाइ, धातुगालक प्रमुख जेटला अग्नि वडे व्यापार थायडे, ते इंगालकर्म ए व्यापारमां घणा दोषडें, जे कारणे अग्नि, सर्वशस्त्रमां मुख्य शस्त्रडे चार दिशि, विदिशि, ऊर्ध्व, अधो, ए सर्व स्थलें डकायना जीवने अवश्य हणे ए मा टे ए कर्म, अनाचरणीय डे इति इगालकर्म प्रथम

२ बीजु वनकर्म ते एमके, डेद्या अणडेद्या वन वेचे, वगिचा

नां फल, पत्र वेचे. पत्र, फूल, फल, कंद, मूल, तृण, काष्ठ, लक डी, वांसादिक व्यापार तथा लीली वनस्पति हरिबीज वस्तुनो जे व्यापार, ते पण सर्व वनकर्म जाणवुं तथा खेती कृषीनो व्यापार करवो, ए सर्व वनकर्म आजीविका निमित्तें करवुं तथा खेडुतनें आगलथी पैशा आपीने पछी धान्य नीपजे तेवारें ते धान्यमां वधतुं ले, ते पण वनकर्म तथा धान्य दलावे, खंमावे, भरडावे, ए पण एनाज व्यापारछे, ए वनकर्म व्यापारथी, ते वनस्पतिना जीव अने वनस्पति आश्रित वनना त्रसजीवनी अवश्य विराधना थाय, ए माटे वनकर्म अनाचरणीय छे. इति वनकर्म.

३ त्रीजुं शाडीकर्म. ते शकट एटले महोटां गाडां, वहेल तथा असवारीनो रथ, इक्का गाडी एटले छोटी गाडी तथा नाव जाति अथवा वजरा, पलवार, महिलगिरी, उलाक, भमलीआ प्रमुख. तथा हलदंताल, चरखा, घाणी प्रमुख. एनां नानां महोटां अंग धोंस रां चक्की एटले घंटी प्रमुख. उखली, मुशली ए सर्व नवां बनावी ने वेचे तथा उपर रही वेचावे, ते सर्व शकटकर्म. ए महा हिंसा नुं कारणछे, अनाचरणीयछे. इति शाडीकर्म.

४ चोथुं भाडीकर्म. ते गाडी, बेल, पोठीयो, उंट, पाडो, गधो, वेसर, घोडो, नाव, रथ, सुखपाल, मोली प्रमुख पोतें राखे अने बीजाने भाडे आपे, बीजानो भार बोज, ते कहे त्यां पहोचाडी आपे तथा घर, डुकान, वस्त्र, वखार प्रमुख पोतानी होय, ते पा रकाने भाडे आपे तथा सार्थवाहनो व्यापार, हुंमा भाडानो व्या पार, ए सर्व भाडीकर्ममां आव्युं. जे पोतानी चीजनुं भाडुं लइने पोतानी चीज बीजाने सोंपे, ते पण भाडीकर्म जाणवुं. एमां बल द, घोडा प्रमुख जीवने ताडनादिक महा डुःख उपजे अने चलाव तां थकां मार्गमां त्रसादि जीवोनी हिंसा अवश्य थाय, ए माटे ए भाडीकर्म अनाचरणीयछे. इति भाडीकर्म.

५ पांचमुं फोडीकर्म. ते कूप खोदाववो तथा तलाव खोदाववुं, होद वावडी खोदाववी तथा नीक खोदाववी इत्यादिक तथा हल खेडन करवुं, संगत्रास पासे पत्थर फोडाववा,हीरा रत्ननी खाण खो दाववी तथा तेने रगडाववा,छीद्र पडाववां परव कराववी, घाट कढा ववा, तरसाववुं, जोयरां तहखानानुं बनाववु, तथा जव धान्य बुंट प्रमुखनी दाल कराववी शालिमाथी चावल कढाववा इत्यादि व्या पार सर्व फोडीकर्ममां आवे तथा इंगालकर्ममां पण आवे ए पृथ्वी विदारवामां पृथ्वीकाय अने त्रसकायना जीवोनी हिंसा थायछे. अने बीजा जीवोनो पण अंगघात थायछे.किलामणादि बहु उपजे तेथी पाप लागे ए माटे ए कर्म त्याज्यछे, ए पांचे कुकर्म छे, महा हिंसा मय छे, ए माटे छोडवा. हवे पांच कुवाणिज्य लखेछे.

१ तेमां प्रथम दंतकुवाणिज्य ते हाथीना दांत, उल्लूना न ख, जीन, कलेजुं तथा पंखीना रोम तथा पंखालिंगि प्रमुखना अने गायना पुछना चमर तथा हरणना शिंगडां तथा गेंमाप्र मुखनां शिंगडां, तथा शंख, कोमा, कोमी, कस्तुरी, जवादि, मोती, वाघनुं चामडुं, वाघनी मूछना केश, सावरनां शिंगडां, कचकडुं, किरमजदाणा, रेशम, उन, तांत, नमूम प्रमुख जे त्रसजीवना अंग तथा उपांग, ए सर्वनो व्यापार दंतवाणि ज्यमां आवे. ए वाणिज्यमां ज्यारें अंग लेवाने आगरमां जाय. त्यारें ते क्षुद्र भिल्लादिक लोक, तत्काल हस्ती, गेंमा, मृग प्रमुख जीवोनी हिंसा करवामां प्रवर्त्ते अने महा पाप अनर्थ करे. वली पोतानो परिणाम पण त्यां गये थके मलिन प्रवर्त्ते लोभना हेतु यें व्याध लोकोने कदापि एवु कहेवु पडेके, अमारे वा स्ते घणा सारा जारे अने मोहोटा दांत जो तमे आणी आपशो तो वली वधारे मूल्य पामशो त्यारे ते व्याध लोको एना कहेवा उपरथी वधारे हिंसाकर्म करे. एवी रीतें सर्वद्रव्यमां जाणी

लेवुं. ए माटे ए सर्व चीज, व्यापारी पासेंथी लेवी पण आगरमां ज न लेवी. ते माटे आजीविका करवा सारु तो ए कुवाणिज्य तर वुं. एक हस्ती मरे, त्यारें मात्र बे दांत मले, एक गाय मरे, त्या मात्र एक पुछ मले. ए प्रमाणे सर्व चीजमां विचारी लेवुं. इतने दंतकुवाणिज्यं प्रथमं.

२ बीजुं लाखकुवाणिज्य. ते लाख, धाउडी, गली, मद्य भरडावे, खार, साबू, मनशील, लोह, सोहागो, पडवास, कसुंबवनस्पतिना तूरी. ए सर्व खारनी जाति, एउनो जे व्यापार, ते [illegible]य विराधना कहेवाय. ते लाखमां प्रथम त्रस जीवोना समूह [illegible] धान्यमां पजे नहीं. पछी पण ज्यारें रंग काढे, त्यारें अन्न [illegible] तथा छे, त्यां पण तेमां त्रस जीवो उपजेछे. महादुर्गंध रुधि[illegible]व जाति त्रम उपजे. धाउडीमां पण त्रस जीवोनो आश्रयछे. एमां [illegible] घणा रहेछे. वली ए मदिरानुं अंगछे. गली पण प्रथम सडावे, त्यहां त्रस जीव उपजे, तेउनी ज्यारें हिंसा करे, त्यारें गली उप जे. पछी पण गलीना कुंभमां त्रस जीवोनी घणी हिंसा थाय. केव ल गलीनां वस्त्र पहेरे तेमां पण त्रस जीवो जू, लीख प्रमुख उपजे. एमाटे ए ज्यहां त्यहां हिंसानां हेतुछे. तथा हरताल मनशिलादि कनी वासनाथी घणाज माखी प्रमुख त्रसजीव मरे. हरताल, मनशिलने वाटतां जो जतन राखे नहीं तो तेनी वासनाथी त्रस जीवो मरे. तूरी, उस, पडवास प्रमुख पण ज्यहां ज्यहां जे जे काममां आवे, त्यां त्यां पण घणा जीवोनो घात थायछे. एमां आगल पाछल त्रस जीवोनी हिंसा थायछे. एमाटे ए वस्तुउ त्या ज्यछे. इति लाखकुवाणिज्यं.

३ त्रीजुं रसकुवाणिज्य. ते मध, मदिरा, मांखण, मांस, ए चा रे महाविगयनो जे व्यापार, तथा दुध, दहीं, घी, तेल, गोल, खां म प्रमुख रसवाली जे नरम चीजो तेउनो जे व्यापार, ते रस

वाणिज्य कहेवाय. अहींयां रसवाणिज्यमां चार महाविगयछे. ते तो सदा अशुद्धछे. जे माटे सदा ते वस्तुओ त्रसजीवोये करी संयुक्त रहछे. आगल पाछल हिंसा घणीछे. तथा दहीं, दुध, घृतादिक स रखवा रसवाली चीजो मध्ये ज्यहां ए चीजोथी भरेलां पात्रो पण ववा, तरे, तो त्यां पण न्हाना मोटा जीवो आवीपडे , ते जीव, प्रमुखनी जीवे नहीं. बे दिवस उपरांत दहीमा असंख्यात जीवो पार सर्व फाछे. तेल घृतादिकना गंधथी घणाज कीडी प्रमुख जीव विदारवामा मे आवे ते तरतज तेमां लपटाइ जाय,ते वचे नहीं. वली बीजा जीवोनादिकना भाजन एटले पात्र रहेतां होय,ते जमीन ची पाप लागे मलिन थइ रहे. त्यां फरनारा त्रस जीवो होय, ते लप मय छे, ए तिलनो व्यापार ज्या होय अथवा ज्यां तल, टीसी, काव प्रमुखनुं सदा पीलाववु थातु होय, त्यां ज्यारे फागण मास उप रांत मास थाय त्यारे अवश्य तिलादिकमां त्रस जीवो घणाज उ पजे. त्यारे ते जीवसंयुक्त तल पील्या जाय ते वारें ते जीवो पण ते तलनी साथेंज पीलाइ जाय. तेलनो दीवो करे, त्या पण अनेक त्रस जीवोनो घात थाय. एम आगल पाछल घणी जीव हिंसा थाय. तथा गोल, चीनी मिश्री प्रमुखमा पण मिष्टताना योगें करी माखी, कीडी, मंकोडा प्रमुख घणा जीव आवे ते माटे तेनो संहार थइ जाय तथा सादी चीनी चोमासामां अनदय थाय जे कारण माटे आर्द्रा नक्षत्र लागे,त्यारथी सादी चीनीमां असंख्य जीवोनी उत्पत्ति थायछे, ए माटे चार मासतो अशुद्धछे. अने ज्या रें व्यापार थाय, त्यारें तो एथी बहु त्रसजीवोनी हिसा थाय. ते मज मीण पण घणा जीवोनो घात थया विना नीपजे नहीं. अ ने पछी पण बहु हिंसानुं कारणछे ए वस्तुनो मीणवती तथा रं गारा प्रमुखना काममां अधिकार होयछे माटे तेनु अधिकरण कार्यछे. तथा मुरब्बो, पाक, रोगान, अत्तर अने अर्क प्रमुखनो

व्यापार पण सर्व एमां आवे. केटला एक रसवाणिज्यमां इंगाल कर्म, यंत्रपीलनकर्म, विषकर्म अने रसवाणिज्य. एटलानो दोष, ए कर्ममां लागे. ए माटें रसवाणिज्य निषिद्धछे. इति रसकुवाणिज्यं.

४ हवे चोथुं केशकुवाणिज्य. ते द्विपद मनुष्य दास, दासी, गुलाम,ए आजीविकाने कारणे लेइने स्वदेश परदेशमां वेंचे, तथा गाय, भेंष, घोडा, उंट, हाथी, बलद, बकरी, पाडा, गद्धा. तथा पंखीमां बाज, कुकडा, कुही, बहिरि, सिकरा, लालमेनां, मर घां, तोता, मोर, सारस, सुरख, तेतर, ए पंचेंद्रिय पंखी जीवो ने आजीविका निमित्तें ले अथवा वेचे; ते केशवाणिज्य कहे वाय. ए केशवाणिज्यमां दास, दासी, तिर्यंच प्रमुख जीवने तो प्रथम स्थानकुटुंबनो वियोग पडे अने जे लेइ करीने बीजाने आ पे, त्यां तेने नित्य परवश रहेवुं पडे, पोताना मननी इछा कांइ सरें नहीं. वली तिर्यंच जीवतो कांइ मुखथी बोले पण नहीं, के अमने दुःखछे किंवा सुखछे. ते कोने कहे? जन्मपर्यंत बीचारां बंधनमां रहे, मनमां घणां कल्पे, घणी भूख, तृषा सहन करे, ते उपरांत वली जे माणस वेचातुं ले, ते निरपराधें मारे, भार भरे, ए रीतें बहु बंधनादिक अनेक दुःख पामे, पंखी पण पांजरामां पडे, अने मनमां घणुं दुःख माने. वली शकरा, बाज,शिवरी, एतो महा हिंसानां हेतुछे. एउथीतो नित्य परमांस विना रह्युं जाय नहीं. ए माटे केशवाणिज्य पण, जे धर्मरुचि श्रावकछे ते श्रा वकने तो त्याज्यछे. इति केशकुवाणिज्यं.

५ पांचमुं विषकुवाणिज्य. ते सोमल, वछनाग, अफीण, म नशिल, हरताल, गांजो, भांग, चडस, तंबाकु प्रमुख. तथा हथी यार ते धनुष, तरवार, कटारी, बरछी, तोमर, फरशी, कुहाडा, कोदाली, छुरी, पेस, कबज, बंदुक, ढाल, गोली, दारु, बक्तर,पा खर, झिलम,टोप प्रमुख जेना बलथी संग्राममां मनुष्य,मजबूत था

य, तथा हल,मुंशल,उखल, कोश,कोदाली,दंताली,करवत,दावडा,
हात्रा, डोनी, नाल, गोला, हवाड, कुहक, शतघ्नी प्रमुख सर्वे हिं
सानां अधिकरणले एउनो जे व्यापार, ते विषवाणिज्य कहेवाय.
अहींया शिष्य प्रश्न करेछे के, अमल प्रमुख विषने तो विष क
हु पण धनुष्यादिक हथीयारने विष केम कह्योछो? ते वारे गुरु क
हेछे के सांजल, तुं तत्व नथी पाम्यो. जे विषथी काम थायछे, ते
एनाथी पण थायछे. विषें करी मरता प्राणीने तो कोइ माणस,
तेनुं विष उतारी पण शके. परंतु शस्त्रनो मार्यो तो कोइ बचे प
ण नही तथा ज्यारे हथीयार ले, त्यारें तेना विषरूप परिणाम
थाय. जेम जेम जलद शस्त्र होय, तेम तेम खुश थइने तारीफ
करी मूल्य लइने वेचे, तेथी आगलानो परिणाम पण वगडे. ए मा
टे हथीयारने पण विषरूप कह्यिएं ए विषवाणिज्यमां वळनागळे,
ते तो एकेंडियादिकथी मांमीने पंचेंडिय पर्यंत जीवोनो घात करेछे.
सोमल तो वली एथी पण वधारे घात करनारोछे. जे सोमल खाय,ते
घणुं कष्ट पामे, मरीने डुर्गतिमां जाय. विष खाइने जे गतिमां उपजे,
त्यां पण विषरूप थाय जो क्रोधथी विष खाय, तो मरीने सर्प थाय,
कां वींछी थाय,अथवा जेरी जीवोमां उपजे ए माटे तेनुं फल पण
विषरूप थाय छे. तथा विषवस्तुंना गंधथी जीवनो नाश थाय.
हरताल अने मनशिल ए पाणीमां वाटयां होय, ते उपर आवीने
माखी बेसे,तो ते संताप पामीने तत्काल मरे. अफीण पण ज्यारें
खाय, त्यारे आत्मघात करे. अमलीना शरीरनुं मल मूत्र पडे, त्या
त्रस अने स्थावर जीवो हणाय खानारनी चेतना मुंजाय,तेथी डु
र्ध्यान थयो थको मरीने डुर्गतिमां जाय तथा जांग प्रमुख पण चे
तनाने मुंजावे. रात्रीजोजनादिक अविरति पणुं वधारे, अब्रह्मचर्य प
णुं करे, तेथी ते असत्यपणुं वधारे, व्रतनी दृढता जति रहे, कषायनी
वृद्धि करे, तुछ पणुं आवे, निद्रा वधारे, मतिनी अज्ञानता करे, सा

री तबीयतने बदलावे, निरुद्यमी थाय, परनिंदा अनें वाचालपणुं वधारें, मुखथी गमे तेम वचन बोलतो आघुं पाछुं न जुए, चित्त भ्रम थयेलानी पेठें अवस्था थाय, तेना आश्रित बहु जीवने हणावे. इत्यादि अफीण खाधाथी आ लोकें दुःख अने परलोकने विषे गहन दुर्गतिमां पडे, ए माटे विष कहीएं. तथा सर्व हथीयार तो प्रगट पापना हेतुछे. ए माटे विषवाणिज्य निषिद्धछे. इति विषकुवाणिज्यत्याज्यस्वरूपं ॥ एटले पांच कुवाणिज्य थयां. ए सर्व मली दश थयां. हवे पांच सामान्य कर्म कहेछे.

१ तेमां प्रथम यंत्रपीलनकर्म. ते घाणी, शेरडी पीलवानो शींचूडो, चरखा, चरखी, लीसा, उखल, मुशल, कंगइ, सावरणी, वेगडीयंत्र, सराण, जलयंत्र, पातालयंत्र, आकाशयंत्र, भोलिकायंत्र प्रमुख यंत्रजाति, शतघ्नीयंत्र प्रमुख जे जे काष्ठ, पाषाण, लोह, वस्त्रादि अनेक अनेक अंगमेलापथी जे जीवघातकारक पदार्थ होय ते यंत्रपीलनकर्म कहियें. ए यंत्रपीलनकर्ममां घणो आरंभछे. घाणीयंत्रमां तिलादिमिश्रित जे त्रस जीवो होय, तेनो घात थाय. एवीज रीतें रहूपीलनकर्मयंत्रमां पण अनेक जीवघात छे. एम जे जे यंत्रछे, ते मुकरर करीने जीवघातना हेतु छे, एमाटे आजीविकाहेतुयें यंत्रपीलनकर्म निषिद्धछे.

२ बीजुं निलंछन कर्म छे. ते एमके, बलदनुं नाक विंधावें, घोडाने भाग देवरावे, गाय, बलदना कान कपावे, शिंगडां छेदावे, पुछ छेदावे, उंटनी पीठ उपर लदावे, गाल नासिका प्रमुखने विंधन करावे. बलद घोडाने खासी करावे, भाम देवरावे, खोज करे, करावे तथा कोटवाली खिजमत लेइने नवो कर बेसाडे. इजारो लेइने आकरो कर बेसाडे, चोरधाडमांवासीनी पेरें दोडा दोडी करे, मनमां एम जाणे के मारुं नाम जगत्मां प्रसिद्ध थाय; ए माटे निर्दय शस्त्र चलावे. इत्यादिकनो रसिक थइ जे नरसां कार्य

होय, ते करे. तेने निलंछन कर्म कहीयें. ए निलंछन कर्ममा घणा पंचेंद्रियोने कदर्थना थाय ; घात थाय. आपणा परिणाममध्यें अतिनिर्दय पणुं थाय. अने एथी करी, दुर्गति प्राप्त थाय. ए माटे ए निलंछन कर्म अति निषिद्धछे.

३ त्रीजुं दावाग्निदान कर्म ते केटलाएक जीव मिथ्यात्व अने अज्ञानना जोरथी विपर्यास कहेछे के, आ वन घणुं मोहोटुं थइ गयुंछे, भिल्लादिक लोको दुःख पामता हशे, ए माटे ए वनने दव लगाडी दइये तो बधुं वन बलीनें साफ थइ जाय,अने एथी महा धर्म थशे फरी नवी कुंपल निकलशे, ते वृक्षो ज्यारें फलशे त्यारे लोको तेना फल फूल खाशे, एथी धर्म थशे. एवो उपदेश दे तथा देवरावे वली वनमा दव लगाडवाथी धरती माताने बोजो उतरशे, ते जग्या खाली थशे, त्यारें तेमा धान्य निपजशे, खेती नवी निपज शे अने लोको सुखी थशे वली जूनां तृण, काष्ठ, बली जशे अने नवां तृण रस भर्यां थशे, तो एने गाय,वाछरडां सहु सुखथी चरशे. वली बलेली भूमिमध्ये धान्य पण सारुं नीपजशे. एवी रीतें मूढ पुरुष, पोतानी मातबरी देखाडे लोभनी लगनथी पापकर्म करतो शंका पामे नहीं वली चोर चखार भिल्लनो एमां वासछे,ए सौनो भय मटी जशे एवी न्यायरीतीथी वनमा दव लगावे, वनकटी करावे तथा आजीविका निमित्तें महोटा महोटां गहन वन, जेमां आववुं जवु दुष्कर पडे , ते माटे पण वनने अग्निसंस्कार करे, त्यारे त्रसजीवो वाघ, रींछ. चित्ता, गेंडा ए सर्व भागी जाय. पोताना स्थानथी छूटे सर्प्पादिक भुजपरिसर्प्प, वली कीडी, मंकोडी प्र मुख तो सर्व हणाय एवुं मनमा न आवे के, वनने अग्निसंस्कार करतां, ए जीवो हणायानु पातक आपणने चढशे ? तेम तो क हेज नहीं पण कहे के, वनमा दव दीधाथी सुखें हरवुं, फरवु त था आववुं जवु थशे. रस्तो सारो थशे. पण एवी हिंसा निश्चये

नरक गतिमां पहोचाडे. एमा संदेह न करवो. अहींयां केटली एक पालसो, गुलाब, बालो, लकडी, इत्यादिक वनस्पति नवी नीपजे. परंतु ज्यारें पहेली जमीनमां अग्नि दिये ने जमीन बलीने साफ थाय, त्यारें प्रबल योनि थाय तेथी वनस्पति सारी उत्पन्न थाय, ते पण दवदान कर्म एमांज आवे, ए माटे व्रती थइने धर्मरुचि पुरुष एवो उपदेश, पोतें कोइने दिये नहीं, अने बीजा पासें को इने पण एवो उपदेश देवरावे नहीं. इति दवदान कर्म.

४ चोथुं शोषणकर्म कहेछे. ते सरोवर, तलाव, अने द्रह प्र मुख जलाशयोने शोषावे. पाणीने बहार कढावे; त्यारें मिथ्याम ति, अज्ञानी, लोभांध थइ विपर्यास बुद्धिथी धर्म बतावे, त्यहां लो भी, पोताना क्षेत्रमां धान्य थवाना निमित्तें जलने वहेवरावे. अने कहे के, शेरडी बहु तरशीछे ते माटे आ तलाव, क्षेत्रनी साथें मे लवीएं एथी करी धान्य नीपजे. एवी रीतें पाणी लइ जाय. पछी कादव रहे. तेमां जलजीव मछादिक अनेक त्रस जीवो भूखथी अ ने तापथी अवश्य मरी जाय. तथा त्यां मांसार्थी डुष्ट लोक आवी मछादिक जीवोनो घात करे. तेम छतां ते मूढ पुरुष, धर्मबुद्धिथी एम कहे जे ए पाणी गंधाई गयुंछे तेथी ए पाणी पीनारने रोग थायछे. ए माटे आगलुं पाणी घणा दिवसनुं छे, ए हाल कढाढी नाखीयें. अने नवुं सारुं जल आवशे, त्यारें ते पाणीयें जलाशय भराशे. एम कुतर्क करे पण एम न जाणे के, आ कोटानकोटी जीवनो संहार थशे. तथा कूपनी सेर बंध थइ गइ. तेने खुलावीने पाणी कढाढी नाखो के जेणे करी बीजुं सारुं पाणी आवशे, त्यारें पीशुं. आगलथी एवी अधर्मबुद्धि करे, अने पछी कहे के एमां पुण्य छे. ए वुं शोषणकर्म पण समजु पुरुष, न करे. अने करावे पण नहीं ॥ इति चोथुं शोषणकर्म.

५ पांचमुं असतीपोषणकर्म. ते कौतुक अर्थें असती जानवर

कुतरां, बीलाडा, मरघा ने सूडा, मोरने पाले, बीजा पण केटला एक जीवो कौतुकने अर्थे बंधनमा राखे, पंखी जीव जे दुष्ट होय, अ ने बीजा पखीनी हिंसा करे, तेवा पंखीने पाले, तथा दुष्ट नार्या अने दुष्ट पुत्रादिकने मोहें करीने गाढ पोषे, साच जूठ न गणे अने जेम तेम करी तेउने खुशी राखे तथा वेचवाने माटे दास दासीनुं पोषण करें, ते पण असतीकर्मछे. तथा माठी, कसाइ, वाघरी. चमार प्रमुख बहु आरम्भी जीवनी साथे व्यापार करवो, एउने द्रव्य खरची प्रमुख आपवी, ते पण दुष्ट जीवनु पालण थयुं अहींयां थो डाने माटे घणुं पाप माथा पर लीए ए माटे ए कर्म निषिद्धछे अ हींयां अनुकंपायें श्वान प्रमुख अथवा काक प्रमुख जीवने देवुं, ते पुण्य हेतुये देवु, तेनो दोष नथी, अने पोताना महोल्लामा जे जी व थया, तेउनी खबर लेवी तथा लोक रीतिये तथा नीति माफक पोताना पाप कुटुंबनुं भरण पोषण करें. एमां कोइ दोष नथी ॥ इति असतीपोषणकर्म पाचमुं ॥ इति पंदर कर्मादान कथनं.

॥ हवे कर्मादान राखवानी विगत लखेछे.

१ अहींयां अंगारकर्मनी आजीविका निषिद्धछे, ए माटे अंगारकर्म न करे तो पण गृहस्थ छे तेनाथी निरवशेष छोडयुं जाय नहीं ए मा टे एनी समज करी ले. पोतानी शक्ति प्रमाणे विचारीने रूपु सोनु ग लाववु, तेना घाट करावववा, सिक्का पडाववा तथा तपाववु प्रमुख वर्ष प्रत्ये आटलुं करवुं, तेनो नियम राखे तथा वस्त्र जे अग्निपक्क रंगमा रगाववुं, तेनु मान राखे तथा इट. चूनो, विगेरे घर कामने माटे लेवानो आगार. व्यापारने अर्थे लेवानो निषेध एमां पण पो ताने माटे इट प्रमुख लेवामा आवी होय, एवामा कोइ संबंधी तथा मित्रादिक महोत्सवालो तेमाथी मागे ने देवु पडे ने तेनी किम्मत प्रमाणे पैशा लेवा पडे तेनो आगार. तथा भाडभुंजानुं कर्म, घर कुटुंब संबंधीकराववु पडे, तेनु वर्ष प्रत्यें परिमाण राखे

केशेर, पांच शेर, अधमण अथवा मण पर्यंत सर्व धान्य शेकाववुं प
डे, तेटलुं छूट राखे. अग्निकर्मनी चीज लेवा देवामां आवे, तेने अग्नि
कर्म कराववुं पडे, तेनो आगार. तेने वेचवानो आगार. बीजुं सर्व
निषिद्धछे. कंसारा, ठंठारा तथा लोहार प्रमुख पासेंथी घरसंबं
धी वाशण कुशण प्रमुख करावे, तेनो आगार. लज्जा, दाक्षिण्य,
कुटुंबादि कार्यें सहाय आपवानी, आदेशादिक देवानी जयणा.

२ तथा वनकर्ममां घरसंबंधी बलद, घोडा, गौ, उंट प्रमुखने
वास्ते घांस प्रमुख राखवां तथा मंगाववानी जयणा. पोताना ब
गीचाने माटे उत्तर प्रत्युत्तर देवानो आगार.

३ शाडीकर्म मध्यें नाव, गाडी, छकडा, वेल, रथ, बलद जे घ
रना होय तेने सुधारवा पडे, तेनो आगार. निकामां शकटादिक
होय, तेने वेचवानो आगार, लहेणामां आव्यां होय तेने राखे
अथवा वेचे, तेनो आगार.

४ चोथुं भाडीकर्म. तेमां पोतानां घर, हाट, नाव, गाडी, हरे
क वाहन प्रमुखने भाडे देवानी जयणा. तेनो पण आगार.

५ फोडीकर्ममां पोताना घरसंबंधी कूउ, भोंयरुं, टांकुं, ताजखा
नुं प्रमुख कराववानो आगार. घरनी खाल कराववानो आगार
तथा घर कराववानो आगार तथा झवाहीरनो व्यापार, घरसंबंधी
नंग, घाट घूटने माटें तोडाववुं, फोडाववुं तथा मोती विंधाववां,
तथा घरने माटे पथ्थरनी खाण कढाववी, ते पथ्थरनो घाट घडाववो
पडे, तेनी जयणा. लज्जा, दाक्षिण्यं, साहाय्य करवुं पडे, तेनी
जयणा. घर खरचमां फोडीकर्म जे जे आवे, तेनो आगार.

६ छठ्ठा दंतवाणिज्यमां घरखरचने विषे पोताना भोगना अधि
करणमां लेवा मंगाववानो आगार. आगल व्यापारनी विगतमां
जे परिमाण करी छूट राख्युं होय, तेनी जयणा. लेणा देणामां
आवे, तेनी सरभरा करवानो आगार.

७ सातमुं लाखवाणिज्यकर्म तेमां पण दंतवाणिज्यनी परें जा णवुं घरखरचने माटे कोइ कार्य पडवाथी लेवुं वेचवुं पडे, तेनो आगार. इति सातमुं लाखवाणिज्यकर्म

८ आठमा रसकुवाणिज्यमा घरखरच संबंधी जे परिमाण क री राख्युं होय, तेनो आगार. व्यापार संबंधी जे राख्युं होय, तेनी जयणा. लहेणामा आवे तेने वेचवानी जयणा. लज्जा दाक्षिण्यथी के फरमासथी सरजरा करवी पडे, तेनी जयणा तथा आपणी तैय्या र चीज कोइ सारा माणसें मागी तो यथायोग्य ते वस्तुनुं मूल्य लेइने देवी पडे, तेनो आगार. इति रसवाणिज्य आठमुं

ए नवमुं केशवाणिज्यकर्म. मूल आजीविका हेतुये आदर करी व्यापार करवानो निषेध घरसबंधी पशु वेचवानो आगार. लहे णामां आवे, तेने राखवा वेचवानो आगार. घरमां पुत्रादिकना उपरोधे करी तोता, मेंना प्रमुखने लेवां पडे तेनो आगार पोताना भोगनिमित्ते घोडा प्रमुख वेचीने, बीजां लेवां पडे, तेनो आगार. कोइ ससारीने स्नेहथी उचित घोडा प्रमुख खरीद करी देवानो आ गार. राजादिकने प्रसन्न करवा माटे कोइ जातिना चतुष्पद वेचातां लेइने नजराणो करवानो आगार फरमासे करी केशवाणिज्यनी न चालता सरजरा करवी पडे, तेनो आगार ए केशवाणिज्य.

१० दशमुं विषवाणिज्य. ते ए के, जे जे आगल व्यापारमा राख्यां होय, तेनो आगार तथा घर खरचमा जे विषचीज औष धमां आवे, तेनो आगार. तथा पोतानी भोजने माटे घरवखरी मा जे जे शस्त्र लेवामां आवे, तेने राखवानो आगार वली ते क राववां, समरावा तथा मगाववां पडे, तेनो आगार. लहेणामा आवे, तेनी जयणा. इति दशमुं विषवाणिज्य

११ अग्यारमुं यन्त्रपीलनकर्म. तेमा आगल जे जे व्यापारने अर्थें राख्याछे ते व्यापारमां जे जे यन्त्रपीलन क्रिया आवे, तेनी

जयणा तथा घरखरचमां जे जंत्रपीलन आवे, तेनी जयणा. तथा पोताना अंगना भोगादिक निमित्तें अत्तर चूआ प्रमुखना यंत्र. तथा रोगादिक कारणे कोइ औषध करवानो यंत्र करवो, कराववो पडे, तेनी जयणा. लज्जा दाक्षिण्यें तथा फरमाशें नहीं छूटतां जे करवो पडे, तेनो आगार. इति यंत्रपीलनकर्म.

१२ बारमुं निलंछनकर्म. तेनो व्यापार करवो निषिद्धछे. पण कोइ राजादि, आग्रह करीने अधिकार आपे, तेमां जे निलंछन कर्म आवे, तेनो आगार. तथा घरसंबंधी पशु बालकादिकने करवुं पडे, तेनो आगार. लहेणामां आवे तेनी तजवीज करवी पडे, तेनी जयणा.

१३ तेरमुं दवदानकर्म. तेनो निषेधजछे, पण रस्ता वच्चें एटले मार्गें जतां कोइ ठेकाणे रहेवुं थाय, त्यां रसोइ प्रमुख करतां वायुना प्रयोगें करी यत्न करतां पण अग्नि, वनमां पसरी जाय, तेने उलववानी शक्ति नथी तो मारुं व्रत एथी न भांगे. ए अग्नि उलववानी शक्ति होय, तो हुं ते अग्निने शांत करवामां आलस करीश नहीं. वली घरखरचमां कोइ रीतें दवदान कार्य करवुं पडे, तेनी जयणा. इति दवदानकर्म.

१४ चौदमुं शोषणकर्म. तेमां सरोवर, द्रह, तलाव प्रमुख जलाशयोने शोषाववानो निषेध, परंतु घरप्रमुखना कूवाने सुधार वा गलाववानो आगार, टांकुं धोवानो आगार. नदीमां वीरडो करवो पडे, तेनो आगार. बीजा पण घरसंबंधी कार्यमां जे महोल्लामां रहेता होइएं, तेमांना उचित पंचनी सरासरीयें कूवाने निमित्तें कांइ खरच देवो पडे, पाणी सारुं पीवा माटे आगलना कूवाने शोषावीने नवो करवो पडे, तेमां तेना खरच निमित्तें पंचनी सरासरीएं कांइ खरच आपवुं पडे, तेनो आगार. इति चौदमुं शोषणकर्म.

१५ पंदरमुं असतीपोषणकर्म. तेमां घर परिवार संबंधी न छूटे, तेनी जयणा. पण चाह धरीने, तेउनुं पोषणकर्म न करुं. प

रिग्रहपरिमाणमां पशु राख्यांछे, तेउने पोषण करवानो आगार. तथा म्लेछादिक राजानी साथे व्यापार आजीविका अर्थे, पोतानी गरजने माटें आहारादिके पोषण करवु पडे, तेनो आगार, पण पोतानी इछायी तूट नथी, तथा पोताना उदयिक नावथी मल्युं जे पाप कुटुंब, तेउनुं नरण पोषण करवानो आगार , पण एथी करी हु मह्यारो अवतार सफल थयो, एम जाणुं नही. तथा लहेणामा आवे तेनुं प्रतिपालन पोषण करवु पडे,तेनो आगार. दया बुद्धियें श्वानादिकने पोषवानो आगार. एवी रीतें पंदरे कर्मादान दोष तजुं ए पंदर कर्मादानमां जे जें चीज घरसंबंधे, दाक्षिण्यता सबंधे, इत्यादि न चालतां लहेणा प्रमुखमां आवे, ते कारणें तेमां जे कर्मादान क्रिया करवी पडे तेनी जयणा अहीयां जे कर्मादान राख्यांछे, एमा एकेक कर्मादानमां बीजा बे, त्रण, चार, कर्मादान नलतां आवे,तेनी जयणा इति पंदर कर्मादान राखवानी विगत

हवे ए सातमा व्रतना पाच अतिचार लखेछे सचित्तेति–

१ त्या प्रथम सचित्त आहारनामा अतिचार छे ते मूल नागे तो श्रावकने सचित्तत्याग नियम होय कदापि तेम नहीं तो, सचित्तनी सख्या करी राखे. त्यहा सर्व सचित्तनो परिहार करे अथवा सचित्तपरिमाणवत थाय वली कोइ अनानोग दोषथी सचित्त आहार करे, तथा अपरिणतोदक तो त्रण उकाला पाणी उपर आवे, त्यारे शुद्ध पाणी थयुं तेमा एक, बे उकालानुं पाणी अपरिणतोदक कहेवाय ते पाणी अचित्त थयुं, एवु जाणीने पीए तथा सचित्तने फासु करता काही काचुं रही जाय, एने पण अचित्तबुद्धिथी खाए श्रावकने तो सचित्त चीज अचित्त करवाने अन्नी तरेहथी शस्त्र लागे, त्यार पछी अंतर्मुहूर्त वीत्या केडे खाए त्या अचित्तबुद्धियी सचित्तने खाय, अथवा अनानोगादिके खाय, तो ते प्रथमातिचार, सचित्ताहारनामा जाणवो.

२ बीजो सचित्तप्रतिबंध अतिचार. ते जेने सचित्त नियम छे, ते तरतनो उखाडेलो एवो जे खेरनी गांठनो गुंदर प्रमुख ते ने खाय. ते त्यहां गुंदर तो अचित्त छे पण सचित्तनो स्पर्श ला ग्यो हतो, ते दूषणछे. तथा पाकी केरीना समुदायने चूसे, रायण बोर, समुच्चय सहित मुखमां मेहेले, अने मनमां उपयोग एवो आणे के में तो ए फल पाकुं चूशुंछे. ए अचित्त थयुं एमां शो दोष छे ? पण एवो उपयोग न जाणेके ए फलनी अंदर, गोटली स चित्तछे. ए माटें सचित्त त्यागी होय, ते एवी चीज अचित्त बुद्धि एं खाय ; त्यारें तेने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अपक्काहारातिचार. ते अचालित आटो प्रमुख ते ने अग्निसंस्कार न कर्यो होय ने काचो आटो फाके. जे कारण माटे श्री सिद्धांतमां आटो, दल्या पछी केटला एक दिवस, सचि त्तमिश्र रहेछे, पछी अचित्त थाय, एवुं लख्युंछे. श्रावण भाद्रवा मां आटो, दल्या पछी पांच दिवस सुधी अण छाल्यो सचित्तमिश्र रहें, आश्विन मासमां चार दिवस सचित्त मिश्र रहे. कार्तिक, मार्ग शीर्ष अने पौष महीनामां त्रण दिवस, सचित्त मिश्र रहे. माहा अने फागण महीनामां पांच प्रहर, सचित्त मिश्र रहे. चैत्र वैशाख मां चार पहोर सुधी, सचित्त मिश्र रहे ; पछी अचित्त थाय. ज्येष्ठ आषाढमां आटो, त्रण पहोर सचित्त मिश्र रहे ; पछी अचि त्त थाय. ए माटे काचो आटो अण छाल्यो अचित्तनी बुद्धिएं खाय, तो तेने त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो डुष्पक्काहारातिचार. ते कांइ काचो, कांइ पाको एवो, जेम सर्व जातिना उंला, पोंक उंबी, जुवारनो पोंक इत्यादिक सर्वजातिना लीला पोंक बीजथी भरेला ते अग्नि संस्कारमां केट ला एक दाणा अचित्त थाय, केटला एक दाणा सचित्त रहे अने ते

ने अचित्त बुद्धिथी जाणे,केमके अग्निसंस्कार थयो त्यारें अचित्त थया, एवुं जाणी खाय, तो तेने चोथो डुष्पक्काहारातिचार लागे.

५ पांचमो तुछौपधिनक्षणातिचारछे, ते तुछ एटले असार, जेना खावाथी कांइ तृप्ति न थाय अने आरंन तो घणोज थाय जेम बोडा प्रमुखनी अति घणी असार छीमी, जे बोडानी अंदर था यछे, एना खावाथी कांइ आत्मानी क्षुधा प्रबल नांगे नहीं अने प्रसंगदोष लागे वली कोमल वनस्पतिमां कोइ रीतेंथी अनंतकायनी शंका रहेछे रसगृद्धिपणुं वधे कोमल फल फली प्रमुखने अचित्त करीने खावानो व्यवहार पण नथी. ए माटे बोडा प्रमुखनी कोमल फली खाय अने मनमा जाणे के, बोडानी फली तो मारे खावी योग्यछे. एवुं जाणी करीनें खाय ; पण एम न जाणे के तुछौपधिनक्षण दोष लागेछे इति पांचमो अतिचार. ए पांच अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे सप्तम नोगोपनोगविरमणनामा द्वितीयगुणव्रते पंमित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतनाषा संपूर्ण ॥७॥

॥ अथ ॥

॥ अष्टम अनर्थदंम विरमणव्रत प्रारंन ॥

॥ दोहा ॥

द्वादश व्रतकी टीपमें, कहे साल निरधार ,
अष्टम अनर्थ दंमका, नेद लिखुं सुविचार ॥ १ ॥

१ प्रथम अर्थदंम एटले जे सप्रयोजन धन धान्य क्षेत्रादिक नवविध परिग्रह सबंधि हानि वृद्धिरूप. जे कारण माटे धनवृद्धि निमित्त, संसारी जीवनें घणां पापनां कारण सेववां पडे, तेवारें साचु जूठुं बोल्या विना रहेवातु नथी पापोपकरण मेलववां पडेछे, मनसुबा करवा जोइयें अनेक विकल्परूप आर्त्तध्यान करवुं

पडे. जे कारणे धनादि परिग्रह, आजीविका हेतुयेंछे. ए माटे धनवृद्धि निमित्तें जे जे आश्रवसेवन करवुं पडे, ते सप्रयोजन छे, ते कारण माटे ए अर्थदंमछे.

२ बीजुं एमज ज्यारें धनहानि थाय, त्यारें पण एवुं कारण पामीने गृहस्थने ते धनहानि निवारवाने अर्थें अनेक विकल्प करवा पडे, पापनां स्थानक सेववां पडे, ते पण अर्थदंमछे, जे कारण माटे संसार संबंधी सुखनुं मूलकारण व्यवहारें तो धनजछे; ए माटे एने वास्ते आत्मा दंमाय, ते अर्थदंमछे.

३ तथा त्रीजुं पोतानां स्वजन कुटुंब परिवारादिकने वास्ते तथा आबरुना योगें जे जे अवश्य, पापस्थानक सेववां पडे, ते पण अर्थदंमछे, जे माटे ज्यांसुधी प्रबल कषाय निवार्युं नथी, त्यांसुधी स्वजनादि पाश छूटे नहीं. संसारमां इंद्रियसुखनां पुष्टहेतु ए स्वजनजछे, व्यवहारमां हेतु कहेवायछे. आपणा सुखें सुखी, अने आपणा दुःखें दुःखी. एमाटे एउने सारु पापस्थानक सेवे, ते पण एक अर्थदंमछे. जे माटे संसारी जीव, पुजलविलासी, पुजलानंदीछे. ते प्रबल अविरतिकषायोदयथी एउने छोडी शकतो नथी.

४ अने चोथुं पंचभोगना आसेवनथी केटली एक वेला इंद्रियो तृप्त रहेछे. आत्मा प्रमुदित रहेछे, ते पण अर्थदंमछे. ए चार प्रयोजनमां कोइ पण प्रयोजन होय नहीं, अने जे पापवृत्ति करे, ते अनर्थदंम कहेवाय. कारणविना फोकट ज्यहां ज्यहां आत्मा दंमाय, तेथी जे जे दुष्कर्मनी वृद्धि थाय, ते अनर्थदंम कहेवाय. एना चार भेदछे, ते लखेछे.

१ प्रथम अपध्यान अनर्थदंम. २ बीजो पापोपदेश अनर्थदंम. ३ त्रीजो हिंसाप्रदान अनर्थदंम. ४ अने चोथो प्रमादाचरित अनर्थदंम. तेमां अपध्याने अनर्थदंमना बे भेद छे. १ एक आर्त्तध्यान. २ बीजो रौद्रध्यान. त्यां वली प्रथम आर्त्तध्यानना चार भेदछे.

तेमां १ प्रथम अनिष्टसंयोगार्त्तध्यान. २ बीजो इष्टवियोगार्त्तध्यान ३ त्रीजो रोगनिदानार्त्तध्यान ४ अने चोथो अग्रशोचनार्त्तध्यान

१ तेमां इंड्रियसुखने विघ्नकारि अनिष्ट शब्दादिक तेउना संयोगनी त्रणे काल चिंता रहे के, रखे मने ए अनिष्ट शब्दादिक मले ? आ मने नवविध परिग्रह जे मल्याछे, तेउनो रखे वियोग पडे ? अथ वा इष्ट एटले वाहाला माता, पिता, स्त्री, पुत्र अने मित्र प्रमुख नुं विदेशगमन अथवा मरण थाय, तेणे करी घणी चिंता करे, खाय पीए नहीं वियोगना डुखें करी आत्मघात करवानी चिंतव ना करे, आदरे,आखो दिवस गुस्सामां रहे,तथा घरमां आ कपुत छे, ए नाइ, वे दिलछे, ए बापनुं दिल मारा पर नथी, आ स्त्री न ठारी मली छे, ए स्त्री माराथी वेदिली करे छे, एनो कशो उपा य पामुं तो ठीकछे. एमज स्त्री विचारे के, मारी शोक्य मने नूंडी मलीछे, नर्त्तारने नोलवे छे, कोइ दिवस नर्त्तारने माराथी जूदाइ करावशे, ए माटे एनो कांइ उपाय पामुं तो सारुं थइ जाय. सेव क होय ते एवुं विचारे के स्वामिना महोढा आगल फलाणो मह्ना रो डुश्मन चढयो छे, ते मारो नाश करशे, मारी राह रीति छे ते गमावी देशे, स्वामिने कांइ मारुं साचुं जूतुं कहेतो हशे, मारी चा करी छोडावशे, त्यारें हुं शुं करीश? एनो कांइ उपाय पामुं तो सारुं छे. एना निग्रहने माटे कोइ यंत्र, मंत्र, कामण, मोहन, वशीकरण शोधे. कोइ साचु अथवा जूठुं तेनुं छिड् ताके,तेने अछतुं आल दे, लोकोना मुख आगल तेनु बुरुं बोले वली ते पूछतो फरे के, एनो निग्रह करवावालो कोइ छे ? तेवामां कोइ धूर्त्त जटिल प्रमुख बो ली उठे के, फलाणा त्रस जीवनो घात करीने बलिदान कर, तो श त्रुनिग्रह होय. ते सांनली ते मूढ, ते जीवघात पण करे अने ते पुरुषनुं मरण वांछे ; पण मूढ एम न विचारे के, जे पोताना शुद्धमार्गे अने साचे दिलें सेवा करशे, तो तेने कोण काढी मे

लशें ? पुण्योदय ज्यां सुधीछे, त्यां सुधी कोइ बुरुं करी शके नहीं. ए प्रमाणे जूठी आर्त्ति विचारे. इत्यादिक सर्व संबंधें संसारी जीव, अ नर्थे दंमायछे. तथा आगलथी पोतानी आतुरतायें अशुभ कारण मल्या विना प्रथमज मनमां कुविकल्प करे, जे दुश्मनना कुलमध्यें फलाणो सामर्थ्यवान् पेदा थयोछे, ते मने दुःख देशे; एमाटे राज्य द्वारादिकें एनी आबरु जाय, अने दंम पामे तो सारुं थाय. जो ए घणी तस्दी पामे, तो ए गाम छोडी करीने नागी जाय; एनुं जो कोइ छिद्र पामुं तो फलाणाने कहुं; अने ते राजदरबारमां जाहेर करे, एटले पोतानी मेले दुःख पामशे. एवी विचारणा ते मूढ करे, अने ते जेने वेरी गणतो होय, तेना दिलमां तो कांइ पण होय नहीं; परंतु ए अज्ञानी एवा अनर्थमां पडे.

वली बीजुं पण ते मूढ विचारे के, ए क्षेत्रमां चोर घणा थया छे. एउने हाकेम, छानी फोज राखीने ए चोरो ज्यारें एना दावमां आवे त्यारें सर्वनो निग्रह करे, तो सारुं थाय. पण ते चोरोनो तो ज्यां लगी पूर्वपुण्योदय प्रबलछे, त्यांसुधी एउनुं कांइ पण बगडे नहीं; परंतु ते कुविकल्पवालो जे चिंतवेछे तो तेने चोर मारवानी आर्त्तध्याननी हिंसाक्रिया बेठी. वली कोइ अमुक मातबर थयोछे ते, ए आपणी बरोबरी करशे, अमाराथी आगल पग धरशे, ए माटे ए हरामजादानो एवो उपाय करवो के, एने फरी उपर आ ववाने दाद फरियाद लागे नहीं. इत्यादिक अनर्थोंने बेठो बेठो विचारे, पण ते मूर्ख मनमां एवी विचारणा न विचारे के, मारे कहे शुं थवानुंछे ? एनो पापोदय थशे, त्यारें पोतानी मेलें होण हार हशे, ते मटवानुं नथी; तो शा माटे ए विचारवुं ? इत्यादिक अपध्यानार्त्त अनर्थदंम छे. विना मतलब एवी रीतें पापजाल पोतें बांधे, ए अनिष्ट संयोग अने इष्टवियोग बे आर्त्तध्यानना नेद कह्या.

३ तथा त्रीजो रोगनिदानार्त्तध्यान. जे रखे मारा शरीरमां कदा

पि कोइ वखत रोग थाय ? सर्वरोग माराथी दूर रहे तो सारुं ? एवुं विचारीने कोइने पूछे के फलाणो रोग केम करी थायछे ? त्यारे ते कहेके, फलाणी चीज खाय तो उतावलें रोग थायछे, अने फलाणी अनक्ष्य वस्तु खाय, तो कदापि पण रोग थाय नही त्यारे ते अनक्ष्यादिक खाए वली ते बीजाने बतावे तथा ज्यारे शरीर मां रोग उत्पन्न थाय,त्यारे घणी हाय हाय करे,घणो आरंन करे. घणुं इव्य खरचे, अने विलाप करे के हाय हाय, आमारो रोग क्यारें जशे !!! वली ते पलें पलें अने घडीये घडीये ज्योतिषीने पूछे के, मारी दिनदशा केवीछे ? आ रोगनी व्यथा क्यारे मटशे ? वली वैद्यने पूछेके, हे महाराज ! मारा दिलमां महोटी शंकाछे तमाराथी काइ कर्त्तव्य छानुं नथी. मारा उपर कोइये जाडु कर्युं हशे ? फलाणो माणस मारा उपर खुनस राखेछे. तेणे मारा उपर कोइ पासे कांइ जाडु कराव्युं हशे, ते केवी रीतें जशे कराव्युं होय तो हवे तमे साजो करो. एवी रीतें नवी नवी शंका धरे अने रोग जवा माटे कुलविरुद्ध धर्म आचरे, अनक्ष्य खावाने तैय्यार थाय अने अक रणीय करवाने पण लागे. एना मनसुबामां सदाय एम रहे ने जे जे रोगछेदननी चीज जडी, बुटी, औषधि, यंत्र, मत्र, उतारो, जा डो, हजराय ए सर्वनी चाहना राखे के ए चीज कोइ वखत मारा काममा आवशे नजरमां राखे के ए सर्व मारा कामनीछे. एने आपणी पासे अमलमां राखी होय तो सारुं,फरी एवी चीज हाय नहीं चढशे एवु जाणीने ते जडी बुट्टी सर्व एकठी करवा लागे, ए सर्व रोगनिदानार्त्तध्यानछे.

४ तथा चोथो अग्रशोच आर्त्तध्यान जे आगला कालनी चिंता करे के, आगली शालमां आ विवाहनु काम करीशुं, एवी तरेहथी विवाहना उत्सव सरनजाम करीशुं, तथा फलाणा साथे कजियो थशे त्यारे आवी वातोथी अने आवा छुबापथी एने हरावीशु.

एवी रीतें काम करीशुं, तथा ए मेहेल, हवेली एवी तो बनावी शुंके, तेने देखी करीने सर्व अचंबो पामे, तथा फलाणा पुरुषें क्षेत्र बगीचो बनाव्योछे, तेवो हुं पण बनावीश. अने ते एवो बनावीश के, बीजा सर्वना बगीचा एना आगल नाकार थइ जाय, अने सर्व डुश्मननी बाती बले एवो बनावीश.

तथा वली आ शोदो जे आपणे कर्योछे, ते आगल जतां ज्यारें घणो मोंघो नाव थशे, त्यारें अमें पोताने मोढे माग्युं मूल्य लेइशुं, बीजा कोइनी पासें ए माल नहीं मलशे, तो पोतेंज गरजना मार्या लइ जशे, एवां वचन, आर्त्तध्यानथी बोले, अने विचारे के, एटला पैशानो हाथ मारी लेइशुं. हवे शी फिकर छे! एवी रीतें दिलमां आगलथी मलकाय.

तथा आ चीज नवी छे, कोइनी पासें नथी. माटे कोइ सारा शिरदार; राजा, पादशाहने ठेकाणे देखाडीशुं तो तेउ पण एने देखी, चाहना करीने लेशे, मने पण मान आपशे, प्यार करशे, उपर शिरपाव मलशे, आपणुं पण काम थइ आवशे. पैशा मोढे माग्या लेइशुं, अने तेणें करी सारी सारी मोज मारिशुं, अने लोको सर्व जोइ रहेशे. एवा एना मनोरथ प्रमाणे कांइ थयुं तो छे नहीं, अने ते पहेलांज मनमां महामग्न थइ रहे. खोटां कर्म, आगलथी बांधे. आगलथी शुं जाणीयें के शुं थशे? चीजमां नफो मलशे के नहीं मले? अथवा ते चीज, कांइ खोवाइ जशे के रेहेशे? एवी तो खबर रहेती पण नथी, अने वातो करवा थकी कर्म तो साचां बांधेछे. ए पण आर्त्तध्यान.

अथवा महारा घरमां अनाज संग्रह घणो छे, अने आगला वर्षनां चिन्ह मागां देखाय छे. अने ज्योतिषवाला पण एम कहेछे के, आगलुं वर्ष बहु निषिद्धछे, ए माटे जो चार दाणा कोइ राखशे तो चार पैशा सारी पेरें मलशे, मारें अवश्य डुष्काल पडशे, तो पण वेचीश नहीं, तो धान्यमां त्रगणो चोगणो नफो मलशे, तो पण नहीं

वेचुं. एम जतां जतां धान्यनो जाव अमारा मनमानतो थशे, त्या रें आठ गणो नफो, अने ते उपर वली व्याज खाइशुं, त्यारें वे चवानी वात काढशुं ते वखतें पैशा घणा मलशे,त्यारे फरी वली दूर देशांतरथी बीजुं अनाज मगावशुं, तेमां बीजा घणा पैशा मल शे.ए प्रमाणे द्रव्य वधशे, लाखो रुपैय्यानी मोज करशुं. पढी वली कोइ अनेक तरेहना व्यापार करशुं आपणी नजरमां सर्व व्यापार ढे, सर्व व्यापारनी आपणने माहिती ढे, कोइ व्यापारमां ठगाइयें नहीं, कोइ शेहेरमां शाहुकार साथे सारुं शोदो लगावशुं, कोइजग्या यें आपणो गुमास्तो रहेशे, त्यांनी हुंमी अमारा उपर लखी मोक लशे, अने वली त्यहांथी हुमी विगेरे अमो मगावी लेशुं अथवा कोइ बंदरथी आपणने गम पडे तेवी चीज, मंगावी लेइशुं, तेमां पण चार पैशा मलता जशे. अने कोइ वर्षमां चार पांच रकमो सारी आ वशे तो लक्षाधिपति, कोटिध्वज नाम काढीने उना रहीशुं. तेवारें आपणुं पण नाम सर्वोपरि सर्वशिरोमणि थशे. सर्वरीतें आपण ने आसान थइ जशे, आपण कोइने पण खातरमां नहीं लावशुं. एवामां कोइ ठेकाणे सगाइ सादीनो पण जोग बनी जाय, तो घणुंज सारुं. पढी घर, बार, हवेलीउ, अहीयांज फरी बनावशुं, अने ढोकरा, ढेय्यां सर्वनो योग मली जाय, मनना मनोरथ सर्वे फले. त्यारें डुश्मननी ढाती उपर साहेबी करी मग दलीशुं, त्यारें हैडुं ठरशे. ए शत्रुउ पण दीन थइ रहेशे, एम वली राज्यदरबारमां पण प्रख्यात थइशुं त्यारें आपणा प्रिय मित्रोने उंचे अधिकारें चढा वशुं, सुहृइउने काढी मेलावशुं. एटले जेम जेम आपणो जापतो थशे, एम एम मननी इछा प्रमाणे सर्व करीशु. जोग विलास सर्व करशुं अने जो अहींया अमारी सादी थइ तो घणीज खु शवखती करीने कोइ समयें स्त्रीयादिक पोताना जीवथी गुस्सो करी बेसशे, तो ते समयें तेने मनावशु, सारी सारी रीतें वस्त्र

जरीयान विगेरें सारी सारी वस्तु आपशुं, त्यारें ते राजी थशे, इत्यादिक मन कल्पना जूठी साची बांधे,अने घणां कर्म उपा र्जे. ते माटे ए आर्त्तध्यान गोडीने जो धर्मनी करणी करे तो सारी छे. अने आगले कालें आ नवने विषे धन, समृद्धि, यश, प्रतिष्ठा, मान, मरतबो चाहे, परनवने विषे देवत्व, इंद्रत्व पदवी चाहे, ते अग्रशोच आर्त्तध्यान कहीयें.

हवे रौद्रध्याननना चार नेद लखे छे. तेमां पहेलो हिंसानंदरौद्र,बी जो मृषानंदरौद्र, त्रीजो चौर्यानंदरौद्र अने चोथो संरक्षणानंदरौद्र.

१ तेमां प्रथम हिंसानंदरौद्र. ते त्रस, स्थावरजीवोनी हिंसा क रीने पोताना दिलमां हर्ष करे, घणा आरंनी चीज जे घर, हवे ली, बगीचा प्रमुख, ते बनावे. पछी तेनी तारिफ, लोकोना मुखेंथी सांनले, अने मनमां बहुज खुशी थायके, जूउ! में पोतानी खबर दारीथी केवुं काम कहीने कराव्युं छे! के जे कामनी सर्व लोको तारिफ करे छे. अमरा जेवी अक्कलनो फेलावो थोडाज जणो नो हशे. मारा पैशा जे खरचाया, ते सर्व सफल थया. तथा रसो ई, खावा प्रमुखनी चीज बनावे, तेमां बहुजातिनो मशालो, तथा नक्ष्य वस्तु साथें अनक्ष्य वस्तु मेलवी अनेक अग्निसंस्कार देइ ने स्वादिष्ट वस्तु बनावे. पछी सर्वने बोलावी करीने नात, जात, मिजमान प्रमुखने जमाडे, त्यारें ते रसिया लोक, नोजन करी करीने रसोइनी तारिफ करे, अने कहेके आवी बनेली वस्तु घणी वार खाधी हशे, पण नाइजी! आजनी मजा तो उरजछे. आज नी मजानी शुं तारीफ करियें? जेटला मशाला दीधाछे, तेनी खुश बोइ घणी प्यारी लागे छे. एवी एवी बहु तारीफ सांनले, तेथी मनमां खुशी थाय. अने विचारेके फलाणे माणसें, मिजमानी क री हती, तेनी निंदा थायछे अने अमे केवुं नोजन कराव्युं? जेणे करी, सर्व अमारी तारीफ करेछे. फरी वली आवो अवसर पामी

शुं तो वली एनाथी पण घणी सारी रसोइ बनावीशुं, तथा राजभोज न अनक्ष्य चीजनी नकल बनावीने, तेनो आशय धरीने खाय, खवरा वे, ज्यारें रसिया लोको जमणने वखाणे, त्यारे जाणेके सर्व सफल थयुं अने पोताना मनमां खुशी थाय. जुवो! हुं केवी चीज बनावुं बुं? मारा जेवो कोइ होंशवालो तथा नोगी जन नथी अथवा राज विग्रह युद्धादिकनी वात सांनलीने खुशी थाय, अने विचारे के ए राजायें सारुं कर्युं, राजा महोटो शमसेर बाहादूरछे. आगल पण एना बाप, दादा, पादशाहीमां महोटा प्रख्यात हता अने शिपाइ गीरीमां घणा मजबूत हता, तेना वशनो एछे. एना वडवाउयें. आ जग्यायें फतेह मेलवी, किल्लो पण खाली कराव्यो, वडा अक्कल बहादूर हता महोटा मोहोटा संग्रामोमा डुश्मनोने जेर कर्या हता, सर्वने पोताने चरणे शिर नमावी करी. चोतरफ पोताना अमलनो मंको वगडाव्यो हतो, हमणां पण सर्व जुवान एवाजछे, एउनी ज्यहां ज्यहां चोकीछे, त्यहां त्यहारस्तामां पडी चीजने कोइ पण उपाडतो न थी; तो बीजुं शुं कहीयें? फलाणो सुनट, एकज चोटमां सिंहने मारी ने पोतें एकलो निर्नय थइ तेने उनो चीरी नाखेछे, बीजाथी एवुं शुं थशे? एम कहीने शाबाश, शाबाश कहे, तथा डुश्मनने आप दा अथवा मूवो सांनलीने बहुज खुशी थाए, सीरणी वाटे, मुख म रोडे, मूछे हाथ फेरवे, हाथना पोहोचा मसले, अने महोढेथी कहेके, ए हरामखोर अमारा पुण्यथी मरी गयो, एवा एवां कूडां कर्म बांधे, पण एवी खबर न राखेके, तुं कोण मारवा वा लो? एनी नवस्थिति आवीने पूरी थइ, एना उदयमा हती ते नोगवी, एक दिवस, तमे पण एज रस्तो पकडशो, एनो नूठो गर्व करवो तेमां कांइ सारुं नथी, अने तु मारनारो हतो. तो आटला दिवस शुं काम ढील करी? माटे एवी जे व्यर्थ विचारणा करवी, ते हिंसानंदरौद्रध्यान कहीएं. ए सर्व मतलब विना कर्म बांधवुछे.

२ बीजुं मृषानंदरौड्ध्यान कहेछे. ते एमके, जूठुं बोलीने
पामे, अने मनमां विचारेके में केवी केवी वात बनावीने कह्
जे वात, सर्वे लोकोयें कबूल करी ? मारुं कपट कोइएं पण न जा
बीजा कोइने एवी कला आवडे नहीं. एटला महोटा महोटा
अक्कल वाला सर्वे मल्या हता पण कोइ बोली शक्या नहीं. में
सवाल जूवाब कस्या. बोलवामां तो घणी करामतछे. बोलवुं
तो कांइ कामज आवेछे. आ वखतें अमें नहीं होत, तो ख
पडत ? ए सर्वेंनी शी गति थात ? एवी रीतें मनमां फूलाय. व
पोताना दुश्मनने माथे जूठुं तहोमत मेले, अने ते दुःख पा
त्यारें पोतें हरखायके में एने केवो जेर कस्यो छे ? तथा पोत
फरजंदसंबंधी प्रमुखनी आगल वातो बनावी बनावीने कहे
अरे मूर्खाउ ! तमे शुं करशो ? अमे केवां केवां फेल कस्यां
पण ते कोइने मालमज नथी. पोतानुं फेल कोइ जाणे, त
अक्कल शानी ? तथा दरबारमां जइने, चुगली करतां राजानो ख
करे अने मनमां हरखेके, में राजाने केवो वश कस्यो छे ? एवा
मनमां कुविकल्प करे. इत्यादिक मृषानंदरौड्ध्यान कहीयें.

३ त्रीजुं चौर्यानंदरौड्ध्यान. ते एमके, जडक जीवोनी स
कूड कपटनी वातो बनावीने घणा मूल्यनी चीज छेक थोडा मूल्
ले, तथा पारकुं ड्व्य, व्यवहारथी अधिक ले,तथा चोरी करीने
इनी गुमास्तीमां जूठुं साचुं नामुं मांमी दे, अने पैशा खाइ जा
कपट कला बनावीने शेठने प्रसन्न करी, पछी मनमां हर्ष पा
के, अमारी केवी कलाछे आटलुं ड्व्य पण खाधुं अने शेठने पण
राजी राख्या. मारुं केवुं मृहापणछे ?

तथा व्यापार करे, तेमां जूठ जूठा सोगन खाइने अने मी
बोली करीने बीजाने प्रतीति करावीने अधिक मूल्यनी वस्तु,थोडे
मूल्यमां ले अने थोडा मूल्यनी वस्तु अधिक मूल्यमां वेचे, तोल

उधुं आपे,अने वधारें ले, तेथी पोताना घरनां संबंधीथी वधारे क माय त्यारें मनमां हर्ष पामे अने घरमां फूलाय के,मारा घरमा ए जाइ प्रमुखछे, ते सर्व नकाराछे. कोइमां कोइ वातनी सझुकाइ नथी, तो व्यापारनी कला क्याथी आवशे ? व्यापार करवो तो बहु मुश्केलछे, अने मोह्टोटी अक्कलनुं कामछे अमे न होत तो ए सर्वेनी शी गति थात ? जूउ ! आ चीजना शोदामां तमे केटलो न फो लीधो ? अने तेज चीज अमे वेची, तो सर्वेनी हजूर आटलो नफो लीधो ए अक्कलनुं कामछे. हमारी कलाने तमे नहीं पामो, एम पोताना जीव साथें फूले

वली राजद्वारमां पोतें जातो होय तो त्यहा साचा जूठां फेल बनावीने लोकोने मर देखाडीने राज्यमा पैशा लेवरावे, अने पोतें पण वच्चेथी कांई लइने सुखेंथी खाई जाय चार वातो सारी तरेहथी बनावे. कोइने त्यां विद्यानुं फेल बनावीने, इंद्रजाल प्रमुख चमत्कार बतावीने विश्वासघात करी, तेनी पासेथी पेशा ले, अने मुखथी कहेके, अमे तमारुं द्रव्य फोकट गमावनार नथी तमे अमारी तरफनी खातर जमा राखजो एवी रीतें कही ने पारकुं द्रव्य, खाइ जाय अने वली खरचावे, अने लोकोमा मह्टोटो विद्वान् कहेवाय, अने मनमा जाणेके जुउ ! मारा जे वो कोण अक्कलवान् बीजो हशे, के आवी रीतें पारकु द्रव्य खा य ? लोकमा पण हुं सर्व ठेकाणे विख्यातछुं,महारा जेवा प्रख्यात तो मारा पिता पण न हता हुं बालपणामांथीज कमाइ करीने लावुंछु एवी खोटी कुगतिनी सहायता बांधे. अने फेल करे.

क्यारेक औषध, जडी, बुट्टी प्रमुख यद्वा तद्वा कइकथी लावीने तेनी लोकोना मुख आगल घणी तारीफ करे, के हुं आजे औप ध बनावुं छुं. ते रसायनछे ए औषध, खानारने बहु गुण करवा वालुं छे. में ए औषध उपर घणो पैशो खरच्योछे. एना उपर रात

दिवस घणीज मेहेनत थइछे. ए औषध, हुं तमनेज आपुं छुं, तमे अमारा छो माटे आपुंछुं. वली तमने दररोज खरच पडे छे, तो जे औषधनी तमे तारीफ करता हता, तेज औषधि आज हुं तमने आपुंछुं. तेनी तमारे अमोने एक दमडी पण आपवी पडशे नहीं, मात्र मोबतने खातर आपुंछुं. तमोने गरमी रहेछे, ते माटे ते गरमीने मटाडवाने आज, मने यादगिरी आवी. तेथी में तमने औषध आप्युंछे. ते सांभलीने ते औषध लेनार कहे के, मारी उपर आप साहेबें महोटी महेरबानी करी. तमे अमारी खबर न ल्यो, तो बीजुं कोण लेशे ? एवी तजवी जथी वातो बनावीने पैशा लीए, महोटी लायकी बतावीने, आग लानी पासेंथी पैशा लेइने खुशी थवुं. इत्यादिक खराब विकल्पना करवी, ते पण चौर्यानंदरौद्र कहीएं.

४ हवे चोथो संरक्षणानंदरौद्र कहेछे. संरक्षणानंदरोद्र, एटले परिग्रह, धन, धान्य, घणुंज वधारे. वली अधिक वधारवानी इच्छा करे, पाप कुटुंबनुं पोषण करवाने माटे परिग्रह वधारवानी बेहद कुबुद्धि विचारे. अने तेवां कर्म पण आदरे. लोकविरुद्धादिकनी अपेक्षा न करे. एम करतां वली कोइ प्राचीन पुण्ये करी पाप परिग्रह पामे, अने घणुं द्रव्य मले, त्यारें मनमां घणो हर्ष पामे अने कहे के, जुओ ! आ सर्व में एक जीवें पेदा कर्युंछे. एवो मारा जेवो कोण हुशीआर थशे ? अने मारा जेटली दोलत कोण मेलवशे ? एवा अहंकारें करी, मग्न रहे. अने तेज परिग्रहमां पोताना मननी वृत्ति लागी रहे. रखे ए परिग्रहने कांइ नुकशान थाय ? एवी रात दिवस चिंता करे, अने द्रव्यने घणा यत्नथी जालवी राखे, ताला प्रमुखनी खबरदारी राखे, रात्रे सुखें करीने सूए नहीं. सगा पुत्रनो पण विश्वास करे नहीं. अने पुत्रादिकने कहेके, तमारामां शुं अक्कलछे ? तमारी बुद्धि जती रहीछे कारण

के, तमे निरुद्यमी गो, माटे अक्कलवाला थाउ. अमारी पठे शुं तमे क्यारें पण कमाशो? तमे तो धनने बगाडवा वालाबो अमे ज्यारें नहीं होइशुं, त्यारे कोण जाणे पाछल तमारा शा हाल थशे? तमारां लक्षण तो हमणांथीज जाहेर दीगमा आवेछे, जे तमोने आगल जता मोहोटी आपदा पडशे. कमाववानी युक्तितो कोइमा पण नथी, तो आ पेट, केम नरशो? अरे मूर्खाओ!!! धन कमावबुं तो महा मुश्केलछे कमाइ करीने सलुकाइथी एकलुं राखवु ते तो वली घणुंज मुश्केल छे हमणां तमे सारी रीते जूउके, हुं धन कमायो अने कमाउं पणबुं. आज सुधी लोकोमां प्रतीत, आबरु अने व्यवहार राखता आव्या छैयें, ते अमारी खबर दारी जाणवी अने डुश्मनोने पण जेर करीने पग नीचें राख्या छे मारा छतां कोइ दावो मुद्दो पण काढनार नथी. तमारा जेवा होत, तो धन कमाववुं तो दूर रह्यु, परतु ते डुश्मनो तमने खावा पण देत नहीं, एवा डुश्मनो लागी रह्याछे, ए माटे अमारी अक्कल शीखो, के जेणे करी तमारुं नलुं थाय, ए प्रमाणे परिग्रहमा चेतना लागी रहे, तेने संरक्षणानुबंधिरौद्रध्यान कहेछे ए सर्व अपध्यानाचरित अनर्थदंम कहेवायछे.

एटले प्रथम अपध्यान अनर्थ दंम तेना पूर्वे बे नेद कह्या, ते मां एक आर्त्तध्यान, अने बीजो रौद्रध्यान ए बेउ ध्यानना नेद, विस्तारथी कह्या. हवे बीजो पापकर्मोपदेश अनर्थ दंम लखेछे

२ बीजो पापकर्मोपदेश अनर्थदंम. ते हरेक वखतें कोइने घर संबंधीने लज्जा दाक्षिण्यता विना पापोपदेश करे,ते एम के तमारा घरमां वाछरडां महोटां थयाछे ते अमारे देखवामां आज आव्यां,ते माटे तमने कहीये छैये के,तेउने हवे समारो के जेम ए वाछरडां सुध रे तो पछी गाडी, हल विगेरे सर्वस्थानमां सारी रीतें जोतरी शकशो, नहीं तो तेउना शरीरनुं बल वधशे. तेथी गायने जो

इने उन्मत्त थशे, ने लोकोने मारशे, ए माटे एने पलोटो, अने उतावलथी खासी करावो, पोताना मालने शा माटे बगाडो डो ? हमणां एने नहीं पलोटो तो, पडी ए जूतमां जूपशे नहीं. अने फेरवशो तो चमक मटी जशे. नाथ्या विना तो चालेज नहीं, ते माटे नाथवो तो पहेलोज जोइयें. एवो पापोपदेश करे. वली कहे के, आ घोडीनो वडेरो महोटो थइ जायडे. हवे एने फेरणीथी एटले दोरीथी फेरववो जोइयें जेथी करी ए वडेरो,सारी चाल शीखे, एने चोकडुं, लगाम चढावो. हवे एना उपर काठडो विगेरे साज मांमया करो. बांध्युंने बांध्युं राखवाथी जानवर खराब थइ जायडे.

तथा वली एम कहे के, वरसादना दिवस आव्याडे माटे आपणा खेत्रमांथी गांठ, गुंठ, घांस, खाडा विगेरे होय, ते कपावी नाखीने सुधारोके जेथी करी जमीन साफ थाय, अने वरसादनुं पाणी खेत्रमांज जरी जाय. पाणीएं पचीने जमीन तर थाय तो तेमां धान्य सारुं नीपजे. वली वरसाद पण आव्यो, माटे घरनी मरामत करावो. ए घर जाजरुं थइ गयुंडे, माटे फरी बंधावो. आ वखतडे. अने हंमणां मशालो मजुरी सौ शस्तां थयांडे. हवे मूलथी नवी हवेली बनावो. ए बाबत तमोने खबर न होय, तो मने पूडी लेजो. अमें जे मनसुबाथी कर्युं एवी तजवीजथी तमे पण बनावशो तो सर्व कोइ जोइने आश्चर्य पामशे. एवो उपदेश देइने खोटां कर्म बांधे; तथा फरी वली एवुं कहेके, नाइजी ! तमारी दीकरी तो घणी महोटी थइडें. एनी फिकरमां तमे डो के नहीं ? हवे विवाह करवा योग्य थइडे. ए माटे तमारी पासें कांइ न होयतो, मारी पासेंथी लियो, पण बीजा कोइनुं करज करशो नहीं. जो करजें काढवा होय तो मने कहेजो, एटले मारी मातबरीथी तमोने कोइनी पासेंथी अपावीश ; परंतु तमारे आ काम

करवुं जोइएं ए धर्मनुं कामछे, माटे एमां ढील करो नहीं. एवी रीतें संसारने वधारनारो उपदेश करे

वळी कहे के, हे भाइजी ! बगीचो समरावो. कोइ ठेकाणे जमीन सखत होय, तो त्यां आग लगाडो एमा जगलनी पठे घांस कुशनो घणो वधारो थयोछे, ते कपावी नाखीने ए जग्यायेज बाळी नाखो एटले ते जमीन साफ थशे एवी रीतें कहे.

वळी बीजी प्रेरणा करे के, फलाणो माणस, तमारी साथे दुश्मनाइ करेछे. तेने जेर करवानो हमणा तमारो वखतछे राजदरबारमा तमारे तो वग छे ए माटे कोइ ठेकाणे कोइ पेचमां लेइने फसावी नखावो आपणुं चालतु होय, त्यारे तो दुश्मनने जेर करवानो उपाय कर्या विना रहीएं नहीं मारी तो एवी अक्कलछे. आवो अवसर तमें फरी क्यारें पामशो ? पोताना चालता चलणमा सारुं नगरुं करवामां न आव्युं, तो जीदगीनुं फलशुं ? ते माटे दुश्मननो नाश करी, तेने नाबुद करवो, तेज सारुं. ए तो तमारी वडगोइ लोकोनी आगल घणीज करेछे, एक वे वखत तो में पण सांभली हती ते माटे तमे मूर्ख देखाउछो, ते दुश्मन शीर उपर चढतो जायछे एटली पण तमोने काळजी नथी दुश्मनने तो उगतोज जड मूलथी कापी नाखवो, लोकोनी एवी कहेवतछे के, "करतेसेती कीजीयें अथवा हणताने हणियें,एमा पाप दोष न गणीये" एवो एवो उपदेश आपे.

वळी बीजाने एवी रीतें कहेके आटलो वधो दिवस चढ्योछे तो पण हजी रसोइनी तो कांइ वातज नथी उठो जइने रसोइनी कांइ तजवीज करो ! चोको प्रमुख देवरावो, स्नान करी रसोइ कर्या पछी, सर्व काम थायछे अमे तो उठतां वेत, महोटा परोढीयामां रसोइ करी खाइयें तो पछी अमने कांइ काम काज सुजे इत्यादिक उपदेश आपे, प्रयोजन विना जूठुं साचु कहेवु, तेमां

शुं फायदो? उलटुं एवुं करीने पोताना आत्मानें बंधन करवुं. ए बीजो पापोपदेश अनर्थदंड कह्यो.

३ हवे त्रीजो हिंसाप्रदान अनर्थदंड कहेछे. पोताना संबंधीने दाक्षिण्यताथी तथा कोइ पण गरज विना हरकोइने कहेवुं के, केम रसोइ करता नथी? अग्नि न होयतो अमारे घेरथी अग्नि लेइ जाउ. वली ज्यारें जोइयें, त्यारें घेरथी सुखें अग्नि लइ जजो. अमारे त्यां तो ज्यारें जोइयें त्यारें अग्नि रहेज छे,मार्टे सुखेंथी लइ जाउ. वली एवो उपदेश करेके, अग्नि देवानुं तो महोटुं पुण्यछे. वली कहे के, आज बजारमां तरकारी एटले शाक भाजी घणुंज आव्युंछे, ते जलदी लेइ आवो. एक बे दिवस चाले, एटलुं लेइ आवो, पछी फलाणी तरकारीने तो चाकुयें करी, आपणे हाथे छोलीने सारी बनावशुं; पछी तेमां हिंग, हलदर,विगेरें मशालो, सर्व नाखीने रांधशुं, तो पछी खावानी वखतें तेनी मजा पामशो; त्यारें कहेशो के, शाबाशछे. वली आगल पण तमे निरंतर एज तरकारी खाशो, जे खावानी चीज छे, ते सारी रीतें बनावीने खाइयें, कारण के कोइ जुए तो पण कहेके, ए घणा चतुर पुरुषोछे. एवी रीतें कोइना पुछ्या विना कहे तथा माग्या विना अग्नि प्रमुख आपे, अधिकरण क्रियानी अक्कल शिखवाडे, ते पण अनर्थदंड.

तथा बीजा यंत्र. जेवा के घंटी, खारणीउं, सांबेलुं,गाडी, रथ, वाहाण, चरखो, चरखी, घाणी, सूडी, दाव, छूरी, चीपीया, कातर, पावडो, तरवार, खंती, कुहाडो, फरशी, बीजा पण सर्व हथीयार नाना मोहोटा जेटला होय. ते तरवार, बंदूक, कटारी, कबाण प्रमुख तथा वली बीजां अधिकरणमां सावरणी, पावडी, पंखो, घांसनी टट्टी, जीडवुं आदि दइने तथा बीजां मंत्र, साप वींछी उतारवानो तथा तीड वर्षादना दिवसमां क्षेत्र खायछे, तेमनी भाढ मंत्रथी उतारे तथा खिलावणी करे, तथा भाकिनी,

व्यंतर, चूडेल, जूतडी प्रमुख नूत, प्रेत, जोड, व्यंतर, ग्रहीत एटले एउथी पीडाताउने ठोडाववाना जाडा प्रमुख उपचारो करा ववा, तथा धूणाववा, खेलाववा, शीशामा उतारवा तथा मा रण, मोहन, मुखबंधन करवाना, तानां, तुना, जाडु प्रमुखना करवां, तथा काष्ट कपावीने नवां उखल मुशल, चक्की, मांची, खाट. चोकी, अने खडाउ प्रमुख जे थकी जीवहिंसा थाय, एवां अधिकरण बनावे. बीजा पण जे थकी हिंसा थाय, एवां सर्वे उपाय एमा जाणी लेवा तथा मूलगर्न एटले गर्नादि थवानी जडी, उंषधि, यंत्र. मंत्र प्रमुख करे, करावे तथा कोइ स्त्रीने कुकर्म थकी गर्न रह्यो होय, तो ते स्त्रीने ते गर्नपात थवाना उंषध प्रमुख करी खवरावे, अथवा कोइ शातन, पातनना इलाज योनि प्रमुखमां बत्ती अथवा गोली चढावीने गर्नपात करें, अथवा बीजानी पासें करावे तथा मोहन वशीकरणनी जडी, बुट्टी, तो डावे, होम करावे, त्या बलि प्रमुख जीवनो आपे, अथवा अ पावे, तथा बीजा पण उंषध करवाना पत्र, मूल, कंद, फूल, फल प्रमुखनो हुन्नर शीखवाने तेने जमीनमाथी तोडाववा, कोइ उपा य करीने खोदी कढाववां, कोइक चीजने पीलावीने तेनो रस कढा ववो, ते पण अधिकरणक्रिया अनर्थदंम जाणवो

तथा बीजी रसायननी क्रिया करवाने आठ प्रहर, शोल प्रहर सुधी अग्नि आपे, ए रीते हरताल, पारो, सोमल, त्रांबुं, रूपु, सोनुं, तथा लोहनें मारवानो हुन्नर करे. करावे, बीजाने बतावे. ए रसायन करवानो विधि, ए पण सर्वअधिकरण पापोपदेशनां बे तथा बीजी तेलक्रिया, ते अनेक जडियोना रस काढे, अथ वा अनद्मयादिक कोइ चीज उकलता तेलमा नाखे, अग्नि निचें आपी बे, तेनी तो गणती पण न राखे एवा आरंन करे. नारायणी तेल, लाक्मयादिक तेल, विषगर्नतेल, तथा शतपात,

सहस्रपातादिक तेल प्रमुख, तेनुं कराववुं तथा बीजां जे जे जडी, बुट्टीथी औषधक्रिया, जाडुक्रिया, वशीकरण करावबुं अथवा विरोधकरण, उच्चाटन, आगीयो, कतरीयो, रगतीयो, प्रमुख तथा वीरोने चलावबुं. इत्यादिक क्रियामां पोतें कुशलछे, तेवारें कोइने संबंध विना दाक्षिण्यताथी पोतानी सिद्धाइ देखा डवानें अर्थें अथवा पोतानी बाबु,बुजरगी वधारवाने अर्थें लौकिकमां यशनी वृद्धि थाय एवा कारणे तथा महोटाइनो फांको राखवानुं वि चारी ते मूढ पुरुष, धर्मसंज्ञाथी मंत्रादिक प्रयुंजे, मंत्रादिक पोतें करे, अथवा बीजो कोइ तेनी सेवना करे, तेने शिखवाडे अने हिंसानी परंपरा वधारे,परंतु ए बद्धां, कृत्यो, परंपरायें पापबंधन करवाना उ पायरूपछे. तथा बीजुं पण घणा आरंभ रूप विविध प्रकारनी जडी, बुट्टी मंगावीने तेनुं तेल काढी,घरमां राखे.अने वली लोकोने कहे के,अमारा घरमां एटली चीज हाजरछे, जेने जोइयें, ते सुखेंथी मं गावी लेजो. अमें तो लोकोने आसन थवाने अर्थें बनावीछे. एवी पोतानी प्रभुता वधारवी तथा वली बीजुं कहेके,फलाणा माणसजी! आज काल तमे फिकरवान् केम रहोछो? अमारी पासें आवजो जे कहेशो, ते तमारी फिकर, अमे मटाडी आपीशुं. तमारुं कार्य करी आपशुं. अमे आ अमुक चीज,राखीछे ते बद्धी परोपकारने अ र्थेज राखीछे. एवी वातो करे, पण ते मूर्ख एवुं न विचारेके एथी महोटो अनर्थ थाशे. पोतानी तुछ बुद्धिना प्रमाणथी सर्व पापयोग करी आपे, त्यारें आगलाउना पुण्ययोगें करी धारेलुं कार्य थाय, तेवारें ते वखाण करीने कहेके तमारी शुं तारीफ करियें! तमे तो महोटा परोपकारी छो, लायक माणस छो. परलोक सुधारोछो, तमारा जेवो बीजो कोइ पण आ शेहेरने विषे अमारी नजरमां आवतो नथी. तमारा जेवो कोण थशे, तमें तो रत्नरूप छो. बद्धी वातोथी आप दयाना सागरछो. सर्वलोक, पछवाडेथी

तमोने धन्य धन्य कहेछे. ते वारें एवी रीतनी पोतानी तारीफ सां
नलीने पोते घणोज खुशवखत थाय. अने मनमा फुलायने जा
णेके महारी बडाने चाहना रहेछे. फरी एवी पोतानी घणी ता
रीफ सांनलीने आगल करता वधारे अधिकरण मेलववानो उद्य
म करे. वली बीजाने पण अधिकरण पोते आगल थइने बनावी
आपावे डुनियांमा आरंनक्रियानी उस्तादी आपे, लोकोने कहेके
कोइ शिष्यने महारी विद्या बधी शीखवाडुं, हवे हुं वृद्ध थयो छुं
माटे आ क्रिया, सर्व शीखो. ए हुन्नर रूडोछे, एमा कमाइ पण
छे, अने बहुज शोना, यश, कीर्त्ति छे, जीवदया पण पलेछे. वली
अमारुं पण नाम कायम रहेशे. तमें लोकोमां कहेशो के, अमुक
माणस पासेथी अमे ए विद्या पाम्या छैये.तेथी महारो पण लोकोमां
यश वधशे. वली ए क्रिया शिखीने कोइनी उपर उपकार करशो,तो
तेने आराम थशे, तेथी तमारु पण नाम थशे. एवी वातो करे,
पण ए समग्रक्रिया पाप रूपछे,तेनी खबर अज्ञानना प्रबलथी तेने
रहेती नथी इत्यादिकने हिंसाप्रधान अनर्थदंम कहिये

४ चोथो प्रमादअनर्थदंम कहेछे. ते एमके, छता सामर्थ्य अ
ने छता योगें जयणा करे नहीं. चालता चाले, तेटलामां खाली
गडबड करे, कारण विना पाप लगाडे, ए केवल, पोतानी अज्ञान
ताथी तथा विस्तार पणाथी लागे जेम घणी जातिना तेलमर्दन
करावीने उपर उवटणा, पीठी अने सुगंध द्रव्य निष्पन्नथी तेलनी
चीकणाश मटाडे. ते पीठीमा कडवी,तीखी,घणी गरम चीज आवे
तेथी अंगुछणा करावीने, पछी जीवोये करी परिपूर्ण एवी नूमि
होय, ते जग्या उपर बेशीने स्नान प्रमुख करे, त्यहां ते पीठीना
पाणीनो रेलो चाले, तेथी करी त्या जे जीवो होय, तेउ कडवा
रसना गंधथी विनाश पामे, तथा ज्या थोडा पाणीनुं काम होय,
त्यां घणुं पाणी रेडे अहींया तज वीज करी शुद्ध नूमि जोइ

करीने स्नान मज्जन करे, तो दया पले. प्रमाददोषथी धर्मनी कोइ क्रिया गडबडनरी करे तथा कौतुक, नाटक, पेषणा प्रमुख, पोतें जोवाने जाय अने बीजाने साथें लेइ जइने देखाडे, त्यारें ते दोडा दोडीथी चालता आवे, तेणे करी घणा जीवनी विराधना थाय. त्यां जइ तमासो जुए; खुशी थाय, बीजाउनी पासें तारीफ करे. पोतानो आ लोक परलोकनां साधननो जे व्यापार, जप पूजादिकनो उगरेलो वखत पण थइ जाय,तेथी ते काम पण बगडे. फरी ते, घणा तमासा जोइ ने घेर आवीने परिजनोनी आगल वर्णन करे. तेणे करी पोतें चीकणां कर्म बांधे. बीजाना पण परिणाम बगाडे तथा कोइ सती,सत करवाने माटे काठ लेवा चाले,अथवा कोइ चोरने मारवा माटे लेइ जता होय, त्यहां जोवा माटे दोडे. जोवा उजो रहे, त्यां एना मनमां ए परिणाम रहेके हवे ए चोरने क्यारें मारशे ? अने सती एनी मढुलीमां क्यारें पेसशे? अग्निमां केम बेसशे? वली ते शिवाय बीजुं पण मिथ्यात्वीनी अनुमोदना, तारीफ करे. चोर मारे, त्यां चोरना पापनी निंदा करे. त्यहां चीकणां कर्म बांधे. फरी फरी ज्यारें ते वात काढे, त्यारें तारीफ करे, ते वखतें पण चीकणां कर्म बांधे. एम केटलाएक वखत वारं वार कर्म बांधे. तथा काम शास्त्र जे कोकशास्त्रादिक तेनो घणो परिचय करे. चोराशी नोगासन शीखे तथा बीजाने शिखवाडे.पडवादिकथी मांमीने पूर्णिमा तिथि सुधी शुदि तथा वदिमां चढतो उतरतो कामदेवनो वास तेने पोतें धारे,अने बीजाने धरावे.नखशिखनां वर्णनादिवालां शास्त्रने नणे अने नणावे तथा नावनेद अंग उपांगने बतावे. वली नदीने तट, जलक्रीडा करवाने जाय. बीजाने बोलावे. ते नदीमां ज्यां सुधी पोतानो परसेवो मेल धोवाइने ते मेलनुं पाणी चाले, त्यां सुधी सर्व जल जीव जे सूक्ष्म होय, तेउनो नाश थाय. वली होशें करीने पोतानी

कामसंज्ञा वधारवाना हेतुए केफी वस्तु जे माफम, गोली, चूर्ण प्रमुखछे ते खाय वली पचेंद्रियवधोत्पन्न एवी, मलमनी पट्टी लगाडे, बंधेजनुं औषध करे. बीजाउने शिखवाडे.तथा जे वचने करी पोताने तथा पारकाने कामसंज्ञा वधे, अने चेतना बगडे, एवा वचन बोले, बीजा पासे बोलावे, तथा हाथना, मुखना, नेत्रना, अने भ्रकुटीना चाला करे जे चाला देखीने बीजाने हसवु आवे. वली कोइनी मश्करी पोतें करे, बीजा कने करावे, तथा अत्यंत मर्मनां वचन बोले

१ तथा राजकथा, ते राजानी दोलत वखाणे, राजानी लढाइ वखाणे के एवी रीतें फोज चढी अने एवी रीते लढाइ थइ. ते अमे पण उभा रहीने दीठीछे एवी रीतें मनसुबो करीने डुश्मनने जेर कर्या. ए महोटो शमसेर बाहादूर कहेवाय छे वली राजाना भाग्यने वखाणे कहेके ए राजानी बराबरी कोण करे ? आजे तो, ए बीजो इंद्रतुल्यछे. अने राजाना काम भोग वखाणे ने कहे के, आटला शेर अत्तर तो नित्यभोगमा आवेछे, वली राजाना अंगबलनुं वखाण करे

२ तथा काम काज विना देशकथा तजत जे इंद्रियसुख जे खानपानादिक, तेने वखाणे, अथवा वखोडे. ते सांभलीने बीजाउनी पण चेतना तेवा विषयो उपर राचे पोताने आरंभनी अनुमोदना थाय, तेथी ते क्षेत्रविपाकी कर्म बंधाय.

३ तथा स्त्रीकथा जे स्त्रीनुं रूप, रंग, चतुराइ, तेना वदफेलनी निपुणता, तथा शुकबहोत्तेरीनां दृष्टांत संभलावे, जारी विजारी करी जाणे. ते महोटो चतुर केहेवाय, ते वातो सांभलीने कइक पुरुषनुं परिणाम बगडे, स्त्री सांभलीने फेल शीखे, पोताने विषय कर्म जूदी जूदी भांतिना बंधाय.

४ तथा भक्तकथा जे खावु पीवु अशनादिक चारे प्रकारना आ

हारनी कथा कहे, वखाणे, तथा वखोडे. कोइ रसवतीना संस्कारनी वात तरेह तरेहनी करीने तेने वखाणे, ते रसवती बीजाने शिखवाडे. अने कहेके फलाणी रसोइ, फलाणी तरकारी आ रीतें बनावीयें तो ते एवी स्वादिष्ट थायके देवता पण पोतें आवीने आरोगे, परमेश्वरने पण तेनो नोग चढे, एवी बनेछे. अहींयां निष्कलंकने पण कलंक लगाडे. वली एणे करी गाढ, मिथ्यात्वनुं पोपण थाय. केटला एक जीव. ते सांनलीने एवा आरंनमां प्रवर्त्ते. तथा एक दिवस बहु आरंन करीने खाधुं, ते फरी फरी याद करीने वखाणे, त्यारें वारंवार चीकणां कर्म बांधे. ए चार विकथा कथाथी लाज, मर्यादा, नीति तथा धर्म अने गंनीरतानी हानि करे, एथी लबाड कहेवाय. वली ए चार विकथा न करे, तो तेथी कांइ पोतानुं काम वगडे नहीं, अने कांइ इंड्रियसुखमां पण हानि न थाय, केवल नकामुं चीकणुं कर्मबंधन थाय. ए प्रमादथी थायछे. ए कुचाल जो मटाडीदे तो मटे, ए रीतें कामकाज विना फोकट आत्मा दंमावे, ए प्रमादाचरित अनर्थदंम कहीयें.

हवे ए व्रतना पांच अतिचारछे, ते लखेछे.

१ प्रथम कंदर्प्प कुचेष्टा अतिचार. ते एमके मुखविकार, ब्रकुटीविकार, नेत्रविकार अने हाथनी संज्ञा बतावे, पगना विकारनी कुचेष्टा करे, अने ए चेष्टा करतां थकां बीजाने हसवुं आवे. कोइने कषाय उपजे, तेथी क्यांनी क्यां चाली जाए, ए कारणे पोतानी लघुता थाय, धर्मनी निंदा थाय, एवी कुचेष्टा करे, तेने प्रथम अतिचार जाणवो.

२ बीजो मौखर्य अतिचार. मुखथी अतिशय वाचाल पणुं करे, एटले असंबंध वचन बोले ; जेणे करी बीजानी एब प्रगट थाय, अने ते कष्टमां पडे. वली पोतानी लघुता थाय, वैर वधे, धिक्का

ड, लबाड, चुगलिउ, इत्यादिक नाम पडे. लोकमां लाज गमाडे. एवी रीते घणुं वधीने बोलवुं, ते बीजो अतिचार

३ त्रीजो नोगाधिक आरन अतिचार. ते एमके नोग,उपनोगमां, स्नान. पान, आहार, धोवन, विलेपन, इत्यादिक शौचता प्रमुख आरंननी क्रियाउंडे,ते पोताना खप करतां वधारे करे. नकामो आरन करे,एऐकरी इव्यनो व्यय थाय घणो इशक धरे, ते त्रीजो अतिचार

४ चोथो काममर्मकथन अतिचार. ते एमके, कामनां मर्म बोले जेना बोलवाथी पोतानी तथा बीजानी चेतना काम क्रोध मय थइ जाय. एवुं बे तरेहनुं बोलवुं तथा विहरनी वात डुहा, साखी, रेखता, फुलणा, कवित्त, परजीया, श्लोकमा श्रृं गाररसनी कथा कहेवी ते चोथो अतिचार.

५ पाचमो अधिकरणदोप अतिचार कहेछे. ते एमके पोताना काम काज करता अधिक अधिकरण मेलवीने तैय्यार करी राखे सर्व अंगोपाग मेलवीने सुधारीने राखे, ते अधिकरण कहीयें. जे णे करी हिंसादिक पापस्थाननी पुष्टता थाय एवा रथ, उखल, मुशल. घण, चक्की, छरी, तरवार,कटारी, बंदूक, कमान तीर, त रकस, ढाल, बरछी. सूडी, छिनी, फरशी, पावडो, कोदाल कंची, आरा, सांडसी, दांती,कोदाली प्रमुख हथीयार पोताने जरुर जोइयें तेथी सर्व वधारे बनावे अने ते हथियार, विना सबंधें अने मा ग्या विना दाक्षिण्यताथी बीजाने चाहीने आपे ए पाचमो अ धिकरण |दोपनो अतिचार. ए आठमा व्रतना पांच अतिचार जा णवा. पण आदरवा नहीं. समजु श्रावकछे, तेतो त्याग करे. ए एमने मह्रोटो लानछे.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे अष्टमअनर्थदंमविरमणनामा तृती यगुणव्रते पंमित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतनापा सपूर्णा॥८॥

॥ अथ ॥

॥ नवम सामायकनामक प्रथमशिक्षा व्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अब चो शिक्षा व्रत कहुं, नवम सामायिक नाम ;
दोष बतीसे छांमि करि, बैठे एकंत धाम ॥ १ ॥
द्वादश कायाके प्रथम, पुनि दश वचन प्रमान ;
मनके दश दोष जु मिली, सब बत्तीस सुजान ॥ २ ॥

एवी रीतें छठुं, सातमुं, अने आठमुं ए त्रण गुण व्रतो कह्यां. हवे पूर्वोक्त आठे व्रतने अने आत्मगुणने पुष्टिकारक, अविरति विषय कषायमां तदात्मभावें मल्यो, अनादि अशुद्धता जे विभाव परिणामनी टेव ते मटाडवाने, अने आत्मिक गुणानुभव करवाने, सहजस्वरूप रसास्वादनी मजा पामवाने, नवमुं सामायिक करण रूप पहेलुं शिक्षा व्रत लखेछे.

त्यहां सामायिक ते जघन्य बे घडी प्रमाण, ते आर्त्तरौद्र ध्याननी परिणति रूप क्रिया ते अशुभ सावद्य व्यापार कहीएं ; तेनो त्याग करीने आत्माने समता परिणाममां राखे, ते सामायिक कहियें. अथवा सम आय सामायिक एटले सम के० सम्यक् प्रकारें रत्नत्रयी जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप सहज रूप उदासीनवृत्ति मुक्तिनो मार्ग, ते सम कहीएं. तेनो जे आय के० लाभ थाय जेने विषे तेने सामायिक कहीयें. ए सामायिक व्रत, बे घडीनी मुनिना भावनी वानकी अथवा निशानीछे. अने अनादि कालना संसार परिभ्रमण थकी विश्राम करवानो रूडो उपायछे. हवे जे साधक होय, ते बे घडी स्वरूप सन्मुख चेतना करीने अने सहज स्वरूपनी चाहना धरीने अने सकलसावद्य त्रिकरणयोगें तजीने सामायिक करे. ते बत्रीश दोष टालीने करें त्यारें शुद्ध थाय. तेमां प्रथम कायाएं करी बार दोष थायछे, ते बतावेछे.

१ प्रथम दोष.सामायिक करती वखतें पग पर पग चढावीने उंचे आसने पलांठी वालीने बेसे, ते माहात्म्य पर्यायथकी विनय गुणनी वृद्धिनी हानि करे, अथवा वस्त्रवडे जानु एटले गोठण बांधी करी बेसे, ते प्रथम दोषछे, माटे जेणे करी विनयगुण रहे, उद्धता न जणाय, अजयणा न होय, एवा आसनें बेसे.

२ बीजो चलासनदोष.ते आसनने स्थिर न राखे,वारवार आ गल पाछल चलायमान करे, पोतें चपलता घणी करे, मूलमार्ग तो एवोछे के, श्रावक एकज आसनें बेसीने सामायिक पूरुं करे. अम्गपणे रहे, कदापि रोग निर्बलताटिक कारणे एकासनें टस्युं न जाय ने फेरववुं पडे, तो उपयोगसयुक्त जयणापूर्वक उठी उठीने चरवलाथी पुजन प्रमार्जन करीने आसन फेरावे. पण एम कीधा विना चपलता राखे, तो बीजो चलासनदोष लागे

३ त्रीजो चलदृष्टिदोष ते सामायिक लेइने पछी दृष्टिने ना सिका उपर राखे, अने मनमां शुद्ध श्रुतोपयोग राखे, मौन पणे ध्यान करे. तथा जे सामायिकवंतने शास्त्राभ्यास करवो होय, तो जयणायुक्त थइ मुहपत्ति मुखे बांधीने पुस्तक उपर दृष्टि राखीने भणे तथा सांभले तथा सामायिकमां काउसग्ग करवो होय, तो चार अंगुल आगल अने साडा त्रण अंगुल पछवाडे एटली बन्ने पगनी वच मां मोकलाश रहे, एवी योगमुद्रायें उभो रहे,बन्ने बाहुउ प्रलंबित रा खे अने दृष्टिने नासिका उपर राखे, अथवा जमणा पगना अगुंठा उ पर राखे, ए शुद्धसामायिकनी शैलीछे. ते शैलीने छोडी करीने चपल पणे चारे दिशाउये चकित मृगनी परें नेत्रो फेरवे, ते त्रीजो दोष.

४ चोथो सावद्यक्रियादोष तेमा कायायें करी कांइक साव द्यक्रिया करे, अथवा सावद्यक्रियानी सज्ञा करे, ते चोथो दोष.

५ पाचमो आलंबनदोष. ते जे सामायिकमां भिंवालप्रमुख नो आशरो छोडीने निरवष्टंभ एकासने वेसवुं, एवी रीतछे, ते रीत

त्यागीने दिवाल अथवा थांभलाने पीठ लगाडीने बेसे, अथवा बीजा कोइ पदार्थनो आशरो लइ बेसे, तो आलंबननामें पांचमो दोष लागे, कारण के, पुंज्या विनानी दिवाल उपर घणा जीवोनो विश्रामछे, त्यहां पीठ लगाडतां घणा जीवोनी विराधना थाय; तथा निद्रादि प्रमाद वधे, ए माटे आलंबन नामें ए पांचमो दोषछे,

६ छठो आकुंचनप्रसारणदोष. ते एमके सामायिक लेइने नकामो कारण विना हाथ पग संकोचे, अथवा लांबा करे, अने सामायिकमां तो पुष्ट कारण विना हालवुं चालवुं कांइ कह्युं नथी. जरुरथी लाचार थये थके, चरवला प्रमुखथी पुंजन प्रमार्जन करी हाथ पग हलावे. मनमां आकुंचनस्थिति न सहवानो खेद धरे. एवी शैली विना नकामा हाथ, पग, हलावे, तो छठो दोष लागे.

७ सातमो आलस्यदोष. ते एमके, सामायिकने विषे अंगें आलस मोडे, टाचका फोडे, करडका करे, कम्मर वांकी करे. ए प्रमाणे प्रमादनी बहुलताथी व्रतमां खेद उत्पन्न थाय; त्यारें शरीरमां अरतिभाव जागे, ते वखत आलस मोडीने असुहामणो उठे, ए सातमो दोष.

८ आठमो मोटनदोष. ते सामायिकमां अंगुलि प्रमुखने वांकी करीने करडका काढे, ए पण प्रमादनी प्रबलताथी थाय. ए आठमो दोषछे. छठो, सातमो अने आठमो, ए त्रण दोष, निद्राप्रमादनी उपाधिथी थाय अने दर्शनावर्णी कर्मना उदयथी थायछे.

९ नवमो मलस्यदोष. ते सामायिक लेइने अंगमां खस थएली होय, तेने वलूरे, मूल भांगें तो सामायिक लीधा पछी खसप्रमुखनी उपाधि थइ तो समजवुं के, चेतना ठीक पणे रही नहीं, विकल्प थवा लाग्या. ए प्रमाणे शुभ आलंबनमां चेतना स्थिर रहे नहीं, त्यारें लाचार थइने चरवला प्रमुखथी जयणा पूर्वक पुंजन प्रमार्जन करीने मनमां पोतानुं अखण्ड मन न रह्युं, तेनो पश्चा

त्ताप करतां, मह्दा पुरुपनी धीरजता मनमां नावतां, धीमे धीमें खसने वळूरे, एवी शैलीछे. तेम न करे, तो नवमो दोप लागे

१० दशमो विमासणदोप ते सामायिकमा अंग विमासण करावे, एटले हाथनो टेको दे,गले हाथ देइने वेसे, ते दशमो दोप.

११ अगीयारमो निद्रादोष ते सामायिक लेइने निद्रा करे ते सर्व घनघाति कर्मनी प्रकृतिछे, ते सामायिकने निष्फल करेछे.

१२ वारमो दोप एके, सामायिकमां टाढ प्रमुखना प्रबलथी पोताना समस्त अंगें सारी पेठें वस्त्र उढे.

ए वारे दोप, सामायिकमां कायाथकी उत्पन्न थाय छे, ते त जवा. हवे वचनना दश दोप छे. ते कहेछे

१ प्रथम कुत्सित वोलनो दोप. ते एम के, सामायिक लेइनें कुवचन बोले. नला उत्तम पुरुपने कुवाक्य बोलवा लायकज नथी, तेम छतां जे वचन सानली कोइने लज्जा,नय, कपायादिक उपजे, तेवा वचन बोले, ते कुवचनदोप कहियें ए प्रथम दोप

२ बीजो सहसात्कारदोप ते सामायिक लीधा पछी जे व चन बोले, ते आगल पाछल उपयोग दीधा विना बोले तथा अ विचार्यु बोले, अने जेम मनमां आवे तेम कहे, ते वीजो दोप

३ त्रीजो असदारोपणदोप, ते सामायिकमा कोइनी उपर खोटुं तोहमत आपे, नकसाने कयुं कहे, ते त्रीजो दोप.

४ चोथो निरपेक्षवाक्यदोष. ते सामायिक लेइ शास्त्रनी अपे क्षा विना पोताना छंदें वोले जैनमार्गीने तो निरंतर सापेक्ष वच नज बोलवुं जोइएं,निरपेक्ष वचन न बोलवु, तेम छतां सामायिक लइने पोताने नावे तेम बोले ते चोथो दोप.

५ पांचमो संक्षेपदोप. ते सामायिकमा सूत्रपाठें वचन संक्षेप करी बोले, अक्षर पागादि हीन करीने कहे, यथार्थ कहे नहीं.

६ छठो कलहकर्मदोप ते सामायिकमा साधर्मीसाथे क्लेश करे.

अने सामायिकमां तो कोइ मिथ्यामति गाल पण दे, अथवा उपसर्ग करे, कुवचन कहे, तो पण तेनी साथें कलह न करवो. शुद्ध जैनमार्गी तो विना सामायिकें पण कोइ तेना उपर कुवचननी प्रेरणा करे, तो पण तेनी साथें कलह न करे, जेम तेम करी क लहने समाववानी चिंता करे, तो ते साधक, सामायिकमां सा धर्मीनी साथें क्लेश केम करे? अर्थात् नज करवो जोइयें, अने जो करे, तो छट्ठो दोष लागे.

७ सातमो विकथादोष. ते सामायिक लेइने राज्यादिक विगेरे नी चारे विकथा करे. सामायिकमां तो सिझाय अने ध्याननी मु ख्यता कहीछे. कदापि ते न करे तो बेगो बेगो धर्मकथा करे अथ वा महापुरुषनां चरित्र अथवा तीर्थादिकनो महिमा कहे,पण जेवी तेवी कर्मबंधनी विकथा न करे, जो करे तो सातमो दोष लागे.

८ आठमो हास्यदोष कह्यो छे. ते एमकें सामायिक लेइने बी जानी मश्करी करे नहीं. कारणके, हास्यरूप मोहनीना उदय थी हास्यरसवडे आ लोकमां कोइनी मश्करी करे, ते लघुताने पामे, वली लोकमां पण कहेवतछे के "अनर्थनुं मूल हांसी, अने रोगनुं मूल खांसी" वली परलोकमां तो, ते हास्यरसकर्म उदय आ वे त्यारें ते कर्म, रुदन करतां पण छूटे नहीं. ते कारण माटे साध कें,सहेज मश्करी पण कोइनी करवी नहिं, त्यारें सामायिक लेइने कोइनी मश्करी करायज केम? जो करे, तो ए दोष लागे. नीति शास्त्रमां पण उत्तम पुरुषने हास्य करवुं निषेध्युं छे, माटे ए हास्यदोष त्याग करवो.

९ नवमो अशुद्धपाठदोष. ते जे सामायिक लेइने सामायिकना सूत्रादिक उच्चार करे, तेमां मुखथी संपदाहीन, अथवा ह्रस्व अक्ष रने ठेकाणे दीर्घ बोलावे, दीर्घने ठेकाणे ह्रस्व बोलावे, कोइ ठे

काणे मात्राहीन, अधिक उच्चरे. एम अशुद्ध पाठनो उच्चार करे, यद्वा तद्वा सूत्राक्षर कहे. ते नवमो अशुद्धपाठदोष

१० दशमो दोष, मुणमुण बोले, एटले जे सामायिक लेइने उतावळे पाठनो उच्चार करे स्पष्ट प्रकट अक्षर न उच्चारे पदनुं, गाथानुं, ठेकाणुं कांइ मालम पडे नहीं, मुख थकी अक्षर कांइ ठीक पडे नहीं. कोइ जाणे माखी वण वणाट करेछे ? एम गडबड करीने पाठ पूरो करे, ते दशमो दोष जाणवो.

ए दश दोष वचनना जाणवा. हवे मनना दश दोष कहेछे.

१ प्रथम अविवेकदोष. ते सामायिक लेइने, सर्वक्रिया करे पण मनमां विवेक नहीं, एटले सामायिक शुं चीजछे. विवेक सहित सामायिक करीने कोण तर्या छे ? एनाथी शुं फळछे ? ए कोनुं साधनछे ? एमां कोण परसाध्यछे ? व्यवहार सामायिक कयु ? अने निश्चय सामायिक कयुं ? समायिकनी शु शैलीछे ? एवा विवेक विना जे सामायिक करे, ते अविवेकनामा प्रथम दोष

२ बीजो यशवाछादोष ते सामायिक करीने यश एटले कीर्त्तिनी इच्छा करे सामायिक तो निर्जरानुं हेतुछे, अने शिवपदनुं मुख्य साधन छे. ते सामायिक करीने यश इच्छे, ते बीजो दोष.

३ त्रीजो धनवांछा दोष. ते सामायिक करता धनादिकनी इच्छा करे के आ सामायिक कर्याथी मने धन मळजो. अथवा सामायिक करतां मनमा विचारे के, कोइ एक भव्यप्राणी, धर्म जाणीने अथवा सामायिकना प्रसादे मने धन आपे ए त्रीजो दोष

४ चोथो गर्वदोष. ते सामायिक लेइने मनमा गर्व आणे के, हुं धर्मने जाणनारो छुं वळी जाणे के, अहो ! हुं केवु सामायिक करुंछु ? बीजा मूर्ख लोको सामयिक करवामा शु समजे ? हुं तो ससारी कामकाजमा पडयोछुं, तोपण सामायिक करुंछु, एटले महारा जेवु सामायिक बीजो कोण करी शके ? बीजा तो बच्चा बिचारा

पेट जरवावालाछे, बत्रीश दूषण टालीने शुद्ध सामायिक तो हुंज करुंछुं, एवो गर्व करे. ते चोथो दोष.

५ पांचमो जयदोष. एटले जय पामतो थको सामायिक करे, ते एमके, लोकमां हुं मुख्य श्रावक कहेवाउं छुं, माटे जो हुं सामायिक नहीं करुं, तो लोक कहेशेके श्रावककुलमां उपज्यानुं फल शुं? एवी सहु कोइ मारी निंदा करशे. वली लोक कहेशे के जूउ! फलाणो आवो वृद्ध थयो छे,तो पण कांइ धर्मनी निष्ठा तेना मनमां आवतीज नथी. बीजुं तो सर्व रह्युं, पण दररोज एक सामायिक करवुं, तो ते पण करी शकतो नथी. एवुं ते शुं छे? नाम तो महोटुं धरावेछे, पोसह पडिकमणां करवानो तो हालज वखत छे, ते पण नथी करतो, एवो लोक ठबको देशे, माटे मनमां सामायिक करवानो जाव नहीं, पण अपवादजयथी सामायिक करे, ते पांचमो जयदोष.

६ छट्ठो निदानदोष. ते सामायिक करीने, धनादिकनुं अथवा बीजी कोइ पोतानी इच्छित वस्तुनुं नियाणुं करे के, आ सामायिकनुं फल होय,तो आ लोकमां घणुं धन पामु, परलोकमां पण देवतानां सुख पामु, एवो आशय राखीने करे, ते कोडीने अर्थे क्रोडनी चीजने हारेछे, सामायिकनुं फल महोटुंछे, तेम छतां नियाणुं कर्याथी ते वेची नाख्युं, एवुं करे ते छट्ठो दोष.

७ सातमो संशयदोष. ते एमके जे सामायिक करे,पण संशय मटे नहीं, संशय जर्युं ते सामायिक करे, पण तेने तत्वनी प्रतीति नहीं. मनमां एम विचारे के कोण जाणे सामायिकनुं शुं फल मलशे? करीयें छैयें तो खरा, पण आगल उपर एनुं फल थशे के नहीं? एवो संशय धरीने करे, ते सातमो दोष.

८ आठमो कषायदोष. ते एमके कषाय जर्युं सामायिक करे. अथवा कोइने साथें रोष वर्त्ते तेथी तेने जवाब देवो नथी, तो

तेटला वास्ते सामायिक करी बेसे. एवी रीतें कपाय नखुं सामायिक करे, तेमां शुं फल मले ? सामायिकमा तो पूर्वे जे कपाय कखो होय, तेनो पण परित्याग करे , एवु रहस्यछे तेम छता जो ते क पाय सहित सामायिक करे, तो तेने आवमो दोष लागे

ए नवमो अविनयदोष. ते एमके, विनय रहित थको सा मायिक करे विनय ते गुरुनो अथवा थापनाचार्य प्रमुखनो जाणवो जैनशैलीमां तो सर्वधर्मनी करणी, विनय विना नथी धर्मनुं मूल पण विनयछे, विनयें करीने बहुमाननी पुष्टताथी अ गणित फल थायछे, थोडी घणी धर्मकरणी करे, त्यहां पण जो विनय, बहुमान अति घणुं होय, तो एथी करी ते महाव्रत जेवुं फल पामे ए माटे सामायिकमां तो विनयसहाय सामायिक सफ ल छे. ते विनय जे न करें, ते नवमो दोप.

१० दशमो अबहुमानदोष. ते एमके, बहुमान रहित सा मायिक करे, पण नक्तिनावथी न करे सामायिक उपर तो घणुं बहुमान राखवु जोइये जेम कोइ डुखी जीव, रोग, शोक, डुख, दरि द्रतामां पची रह्यो थको महा डुख नोगवे छे, एटलामां कोइ कृपावत महोटो उपकारी सुजन होय, तेने जोतावेत तेना उपर दया उप जे. त्यारे ते दरिड्रीने पोताना घरमा लावीने औपधादिक करी स र्वेडुख मटाडे, धनादिक आपी दरिद्रता मटाडे, बीजी पण सर्व रीते सहायता करे ए प्रमाणे पोतानी बराबर करी बेसाडे, त्यारे ते दरिड्रीने ते उपकारी पुरुष उपर केवुं बहुमान अने केवी नक्ति रहे ? मनमा विचारे के ए उपकारी उपर मारा प्राण पण कुर बान छे. हवे ए तो एक आ लोकना पुजलिक सुखनो उपकारी छे, तेनी उपर एटलु बहुमान रहे छे, त्यारें सामायिक, तो आ लोक अने परलोकने विपे पुजलिक तथा मोक्ष, ए उनय सुखनुं दाता छे अने बाह्याभ्यंतर डुखनु मटाडवा वालुंछे, ए माटे

ते सामायिक उपर तो एना करतां पण महोटुं बहुमान अने अधिक भक्ति राखवी जोइयें. ते प्रमाणे न करे, तो दशमो दोष लागे.

एवी रीतें मनना दश दोष, तेम वचनना दश, अने कायाना बार, ए सर्वे मलीने बत्रीश दोष थाय. तेउने टालीने जे शुद्ध सामायिक करे, ते सुखनुं कारण कहीयें. बत्रीश दोष रहित एक सामायिकनुं फल श्री जैनागममां व्यवहारथी तो आ प्रमाणे कह्युंछे, जे बाणुं करोड, उगणशाठ लाख, पचीश हजार, नवशें पचीश, एटला पल्योपम अने वली एक पल्योपमना नव भाग करवा. तेमाना आठ भाग उपर एटला पल्योपम देवतानुं आयुष्य बांधे, अने नरकगति कापे, ए माटे श्रावकने प्रतिदिन सामायिक करवुं, जेणे करी जन्म सफल थाय. ए व्यवहारशुद्ध सामायिकनुं फलछे; अने निश्चय शुद्धोपयोगथी सामायिकनुं फल, अनंत गणुंछे, एटले ते यावत् सिद्धिस्थानकें पहोचाडे. ए माटे सामायिक छे, ते एकांत उपादेय छे. ते सामायिकना पांच अतिचार छे, ते कहेछे.

१ प्रथम कायदुःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, पोताना शरीरना अवयव जे हाथ पग प्रमुख, ते अणपुंजे, अण प्रमार्जे हलावे. भींतने पीठ लगाडीने बेसे, निद्रा प्रमुख करे, ते कायदुःप्रणिधाननामे प्रथम अतिचार.

२ बीजो मनदुःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, मनमां कुव्यापार चिंतन. ते क्रोध, लोभ, द्रोह, अभिमान, ईर्षा, असूया प्रमुख दोषसहित कार्यव्यासंगासक्तसंभ्रमचित्तसहित सामायिक करे, ते मनदुःप्रणिधान नामे बीजो अतिचार.

३ त्रीजो वचनदुःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, सामायिकमां सावद्य वचन बोले, अथवा पद अक्षरादिक अशुद्ध बोले, ते उच्चारतां थकां सूत्रनी स्पष्टता मालम पडे नहीं अने अशुद्ध सूत्र उच्चारे, अर्थनी पण मालम पडे नहीं. अतिशय चपल पणा

यें गडबडथी कही जाये , ते वचनडुःप्रणिधान त्रीजो अतिचार.

४ चोथो अनवस्थादोपरूप अतिचार ते एम के,सामायिक जे वखतें करवुं जोइयें, ते वखतें करे नहीं, अने करे तो यद्वा तद्वा करे, अथवा हुरथी पाले अथवा उतावलथी पाले, आदर विना करे, स्वेच्छायें क्रिया करे, ते अनवस्थादोपरूप चोथो अतिचार

५ पांचमो स्मृतिविहीन अतिचार ते एमके, सामायिक लेइ ने जूली जाय क्रियादिकमां भ्रांति पडे. सामायिकदंमक सूत्र उच्चार्यां के नथी उच्चार्या ? अथवा पाल्युं के, नथी पाल्युं ? एवी भ्रांति, प्रबल प्रमादना उदयथी थाय सर्व साधननुं मूल तो स्प ष्ट यादगिरीछे. जाग्रतनो उपयोगछे ते तो विसरी गयो, त्यारें सा मायिकना फलमां बट्टो लागे. ए विस्मृतिरूप पाचमो अतिचारछे.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे नवम सामायिकनामा प्रथम शिक्षा व्रतकथने पंमित श्री उद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्ण ॥ ए ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री दशम देशावगाशिकनामा द्वितीय ॥
॥ शिक्षाव्रत प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीपारस पदकमलयुग, वदू बडे उमेद ;
देशावगाशिक दशम व्रत, तिसका कहों सुभेद ॥ १ ॥

हवे देशावगाशिक एटले देशावगाहीनो तो, छठा व्रतमा राख्युं जे दिशिपरिमाण, ते तो यावज्जीवनु कर्युं छे ते दिशिक्षेत्र घणांछे, ते उनु काइ नित्य काम पडतुं नथी ए माटे दिनदिन प्रत्यें तेमां संक्षेप करें, के आजना दिवसमा दश कोश वा पन्नर कोश, वा पाच कोश अथवा नगरना दरवाजा सुधी, अथवा कोश, अर्द्ध कोश, वाग वगी

चा सुधीनो जग्यानी दिशि राखे. अथवा अमुक घरनी हद सुधी इत्यादिक हदपर्यंत जवुं आववुं उपरांत जावानो नियम करे. एवुं करवुं, ते देशावगाशिक व्रतछे. ए छठा व्रतनुंज विशेषछे, तेतो याव जीव संबंधनो नियम कस्योछे अने एतो चोमासुं, वीश दिवस, दश दिवस, पांच दिवस, अहोरात्री, अथवा दिवस सुधी अथवा प्रहर अथवा मुहूर्त्त सुधीनुं पण. एटला व्रतमां पूर्वे बहु क्षेत्र रह्यां हतां तेउनो दोष अहीं संक्षेप कस्यो. क्रिया उतारी, एटले दिग् व्रतनुं देशावगाशिक नित्य प्रत्यें परिमित क्षेत्रगमननुं परिमाण राखे जे, हुं कायायें करी फलाणे गाम, फलाणी जग्यायें, देवलें, दरगाहें अथवा देवीना गामें, अथवा कोइ बीजी जग्यायें जइश. ते उपरांत जवानो मने निषेध छे. एमां जे दिग्व्रती प्राणीने देश परदेशनो व्यापारछे, ते व्रती एम कहेके, मारे कायायें करी अमुक क्षेत्रथी उपरांत जवानो निषेधछे. पण दूर संबंधनो कागल प्रमुख लखवो ने वांचवो ते अथवा कोइ माणसने मोकलुं ते मने माफ छे तथा ते देश संबंधी वात प्रमुख सांभलवी पण माफछे अने जेने दूरनो व्यापार नथी, ते तो परिमाण उपरांतनी हदनो आवे लो कागल पण वांचे नहीं. कोइने कागल लखीने मोकले पण नहीं. अने जो चित्तनी प्रकृति संकल्प विकल्पमां न होय तो ते दूर देशनी वातो पण सांभले नहीं अने वात करे पण नहीं. परंतु जो एवी रीतें न रही शकाय तो व्रतना भांगामां छूट राखे अने जाणतां थकां परिमाणमां दोष लगाडे नहीं. ए देशावगाशिक नित्यव्रत करे, ते सदा सर्वदा सवारना पहोरमां चौद नियमनी याद गिरीमां सर्व संभारीने राखे. वली पण एने संक्षेपीने रात्री संबंधी जूदां राखे, अने जे अहोरात्रनां करे, ते सवारना पहोरमांज याद करे. एवी रीतें गुरुपासेंथी विधिसहित व्रत धास्यां होय; तेम पाले. ए देशावगाशिक व्रतना पांच अतिचार छे. तेनां नाम लखेछे.

१ पेहेलो आणवण प्रयोगातिचार ते नियमनी नूमिका वाहेरनी कोइ चीज होय, तेनी गरज पडे,त्यारे विचारे के मारे तो नियम उपरात नूमिये जावुं नथी अने जीवनी चाहना तो ते चीज माज लागी रहीछे. त्यारे कांइ पोतानी बुद्धि उपार्जे अने ते नूमि नणी जनारा कोइने देखीने कहेके हे नाइजी! फलाणी जग्या सुधी जाशो तो अमारुं पण कांइ कामछे, ते पण तमे करता आवजो ते सानली ते माणस कहेके हाजी, हुं जइश ते समये ते व्रती कहेके,त्यारे तो अमुक चीज मारे माटे जरूर लेता आवजो त्यारे ते तरफ जनाराने ते जणश,तेनी महोबते करी लाववी जोइयें एवी रीतें ते चीज, नियमबाहेरनी नूमियी मगावी ले अने पोताना शाणपणाथी ते व्रती विचारे के, मे मारुं व्रत पण राख्युं, अने मारे कामें जे चीज जोइती हती, ते पण आवशे, अने एतो पोताने कामे जायछे तेनाथी हुं महारुं पण काम करावुं छुं, एनो बोजो मारा माथा पर नथी एवी रीतें बुद्धिनुं अज्ञानपणुं करे,पण एम न विचारे के, एथी करी उलटो तोटो थाय छे केम के, जे कारणे देशावगाशिक व्रत जे कर्युंछे, तेमा तो जाता आवता हिंसा प्रमुख दोप बहुज लागे ते दोपनी क्रिया मटाडवा माटे कर्युंछे अने जेवारें बीजा माणस पासे नियम क्षेत्रथी बाहेरनी चीज मगावे, ते वारे ते अजाण्यो पुरुप, अजयणा करतो जइने ते चीज लइ आवे, तेनाथी तो पोतेंज जइने लइ आवे तो सारुं? कारणके पोते तो धर्मरुचियुक्तछे, तो तेथी जयणाथी जवाय, तेनाथी हिंसा केम थाय? अने ते अज्ञानी तो अनेक हिंसादि दोप लगावीने ते चीज लावें, फरी तेनी पाप क्रियानी अनुमोदना करी जाय जुउ! फलाणो अमुक क्षेत्रे गयो हतो तेथी सारु थयुं अमारुं पण काम थयु ए माटे व्रतधारी थइने एवा कपटव्रत नो नांगो न करे. व्रतधारी तो गुरुनी आज्ञाये अने शास्त्रनी रीते

जे कह्युं होय, तेज करे, ते माटे नियम लेइने बाहेरथी बीजानी पा सें कोइ चीज मंगावे, ते आणवणप्रयोग प्रथमातिचार जाणवो.

२ बीजो पेसवणप्रयोग अतिचार. ते एमके जे नियमनूमि काथी बाहेर कोइ चीज मोकलवी होय. त्यारें पहेलांथी मन सुबो करे के आ चीज तो मारे जरुर मोकलवी छे. पछी नियमनूमि कानी बाहेर कोइ आदमी जतो होय, तेनी साथें ते चीज मोकले ने मनमां खुशी थायके मारुं व्रत पण अखंम रह्युं, हुं पण नियम नूमिकानी बाहेर गयो नहीं, अने में मारुं कार्य पण साध्युं. एवी रीतें करे, तेने तेमां उलटो तोटो पडे.अने वली एम करवा थी तेने बीजो पेसवणप्रयोग अतिचारदोष लागे. ए माटे जे स मजु श्रावक होय, ते अतिचार न लगावे.

३ त्रीजो सद्दाणुवाय अतिचारछे, ते कहेछे. शब्दानुपात अति चार. ते एके, पोताना नियमक्षेत्रनी बाहेर कोइ पुरुष जतो होय, तेनी साथें कोइ काम नियमक्षेत्रनी बाहेरनुं होय त्यारें व्रती श्रा वक विचारे के माराथी त्यां सुधी जवाय एमतो नथी; माटे तेने नाम देइने बोलावीश, तो मारा व्रतनें दाग लागशे. एवी शंका थी फरूखे अथवा अगाशीनी छत उपर जइने उन्नो रहे, के, जेम मार्गें जता आवता सर्व लोकोने ए जुए, अने मार्गें जता आवता सर्व लोको, एने पण देखे. ते वखत एवी रीतें उन्नो रहीने मार्गें जता आवतानें देखे, त्यारें ते व्रती खुंखारो करे, अथवा नाकमां दोरो घालीने अथवा तमाकु लेइ नाकमां सुंघीने उंचा सादें करी छींक करे, तेवारें मार्गें चालतो माणस, खांसी छींक प्रमुखनो शब्द सां नलीने उपरनी तरफ जूए, एटले ते बन्नेनो दृष्टिमेलाप थाय. त्यारें पछी ते त्यां चलावीने आवे. एवी रीतें मेलाप करे, तेवारें ते बन्ने जणा पोताना कामसंबंधी एकांत वातचित्त करीने व्रती श्रावक, मार्गें हालवा वालाने विदाय करे; त्यार पछी ते व्रती

पोताना मनमां अज्ञानना विलास करे के,जुउ ! में कोइ उत्पातनी बुद्धि रची तो तेथी करी मारुं व्रत पण में निर्मलताथी राख्यु, अने बीजाने बोलावीने जे कार्य करवु हतु,ते कार्य संबधी पण वात चित्त करी लीधी एवी रीतें मूढ, अज्ञानी क्रियानी नूलवणी करे, तेने त्रीजो शब्दानुपाति अतिचारदोष लागे ए माटे समजु शुद्धव्रती यइने अने बुद्धिमान् थइ, ते अतिचार न लगावे

४ चोथो रूपानुपाति अतिचार कहेछे. ते एमके कोइ व्रतीएं पोताना घरना आगणा सुधी क्षेत्र मोकलुं राख्युं, अने बाकी बीजुं बधुं त्याग कर्युं. हवे एवामा कोइ पोताना कामनो माणस घरना आंगणानी पासेना रस्ताये चाल्यो जायछे, तेने व्रतीये घर अंदरनी खडकीना रस्ताये अथवा जाली प्रमुखमांथी जोयो , त्यारे व्रती विचारे के,ए माणस साथें मारे जरूरनु कामछे, ने ए माणसनुं घरतो अहींथी घणुं दूरछे , त्यहा सुधी तो माराथी जवाय नहीं. कारण के, जो जाउतो व्रतजूमि परिमाण उल्लंघ्यानो दोप लागे वली अहीं पण एने बोलावु तो व्रतमा खोंच लागे ए माटे एवुं करुं के जेम ए उलटो मने बोलाववाने पोतेंज चाल्यो आवे एवो अज्ञाननो मनसुवो धारीने पोते पोताना घरमाथी नीकलीने दरवाजा उपर आवी उनो रहे ते माणस पण चाल्यो चाल्यो त्या आगल आवीने नीकले , एटले ते बन्नेनी नजर एक थइ तेवारें ते चालो जनारो माणस पोतेज,व्रतीने बोलावे अने परस्पर मली जूहार विगेरे करीने पछी ते व्रतीये जे वात, पोताना मतलबनी चितवी हती, ते करी लीधी त्यार पछी पेलो माणस, पोताने ठेकाणे गयो अने व्रती पण घरमां आव्यो , अने मनमां अज्ञानपणे विचार करवा लाग्योके, में म्हारा शाण पणे करीने मारा व्रतने पण खोट न लगाडी, अने मारुं कार्य पण साध्यु. एवी मे बुद्धि करी, पण एवु न विचारें

के एमां अज्ञानपणुंछे. जे जाणीबूजीने पोतानुं कार्य चतुरताथी करे, तो तेने चोथो रूपानुपाति अतिचार लागे.

५ पांचमो पुद्गलप्रक्षेप अतिचार कहेछे. पुद्गलप्रक्षेप अतिचार ते नियमना क्षेत्रनी बाहेर कोइ पुरुष, पोताना कामने माटे जतो होय, त्यारें तेने जोइ व्रती अज्ञान दोषथी खोटी माया केलववा ने तत्पर थयो, जे हुं ए जता माणसने साद करी बोलावी लउं, अथवा हुं तेनी सामो जइने उभो रहुं तो म्हारा व्रतने दूषण लागे. माटे साद कर्या विना अथवा एनी सामु जवा विना कोइ बीजी कलायें करी एनें बोलावुं. के जेथकी ए पोतें आवी म्हारी आगल उभो रहे. एवो विचार करीने आवनार पुरुष उपर कांकरी फेंके समस्या करे, कपडानो छेडो बतावे. त्यारें ते कांकरी ते माणसना देहने लागे एटले ते पण पाछुं फरीने तेनी सामुं जुए. त्यारें व्रती माणसनी अने तेनी दृष्टि एक थाय तेथी ते पोतेंज चाल्यो आवे,पछी ते व्रती मोहोबतथी पोतानुं कार्य करी तेने विदाय करे, त्यारें विचार करे के, में केवी बुद्धि वापरी ? जेम लौकिक मोनि बोलता नथी अने संज्ञा चेष्टा करीने कार्य करे छे, तेम में पण बुद्धि बलथी मारुं व्रत राख्युं अने कार्य पण कर्युं.एवी अज्ञानक्रिया ते पांचमो पुद्गलप्रक्षेप अतिचार जाणवो. माटे समजु व्रती होय, ते एवी अज्ञान पणानी वात जो न करे, तो ते म्होटा लाभना हेतुने पामे. अहींयां पहेला बे अतिचार अज्ञानताथी थाय, अने पाछला त्रण अतिचार,कपटपणे थायछे;ते माटे ए अतिचार न आदरवा. ए बीजुं शिक्षाव्रत थयुं.अहीं छठा व्रतना भेदथी दशमुं व्रत संक्षेप छे. ए थकी कहेवामां एवुं जाणी लेवुं के जेम ए व्रतमां संक्षेप छे, तेम परिग्रहादिक सर्वव्रतमां संक्षेप थायछे. इति तत्वं.

इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे दशम देशावगाशिकनामा द्वितीयशिक्षा व्रतकथने पंमित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा॥ १०॥

॥ अथ ॥

॥ श्री एकादश पौषधोपवासनामा तृतीय ॥
॥ शिक्षाव्रत प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

अब अग्यारम व्रत लिखुं, नाम पोसह उपवास,
जो विधिसहित करे व्रती, तो पामे उल्लास ॥ १ ॥

तिहां पोसह व्रतना चार भेदछे,ते लखे छे तेमां प्रथम आहार पोसह, बीजुं शरीरसत्कारपोसह, त्रीजुं अब्रह्मपोसह, अने चोथु अव्यापारपोसह ए चारे पोसहना प्रत्येके बे बे भेदछे एक देशथकी पोसह अने बीजुं सर्वथकी पोसह

१ तेमा प्रथम आहारपोसह. ते देशथी जे त्रिविहार उपवास करीनें पोसह करे, अथवा आयंबिल पोसह करे, अथवा त्रिविहार एकाशना करी पोसह करे. ए त्रणे प्रकारनां पोसह करे, ते देशथी पोसह कहेवाय तेनी शेली कहेछे. पोसह लीधा पहेलां पोताना घरमा कही राखे जे हुं पोसह करीश ने आयंबिल अथवा एकाशणु करीश ते माटे भोजन कालें हुं आहार करवाने आवीश, अथवा तमे पोसहशालामा आहार लेइ आवजो एवुं कहीने पछी पोसह लीए, त्या पोसह लीधा पछो जेवारें मध्यान्हना देववंदन करी रहे. तेवार पछी चरवलो, मुहपत्ति अने पोंछणुं, ए त्रणे उपकरण. साथे लेइ पछेडी ओढीनें साधुनी रीतें उपयोगी रहेतां थकां मार्गमा जयणा सहित चाल्यो जाय अने भोजन स्थानकें जइने इरियावही पडिक्कमे, गमणागमण आलोवे, अने पछी पोंछणुं बीछावीने बेशीने आहारनुं पात्र पडिलेहे पछी पोताने लेवा योग्य जे आहार, ते जिये अने ते लेइने साधुनी रीतें अगृद्ध थकां आहार करे. मुखथी आहारनुं वखाण न करे, आहारने

वखोडे पण नहीं, आहारनी जूठ, गीरावे नहीं, आहार करी रह्या पछी गरम पाणीथी आहारनुं वाशण धोइने ते पाणी पी जाय. पछी पात्रने शुद्ध करीने नितारी पाणी प्रमुख सूकाइ जवा देइ, ते पात्र कोरुं करीने पाछुं आपे. त्यार पछी फरी उपयोगी थको पूर्व नी पेरें पौषधशालामां पूर्व स्थानकें जइ बेसे. मार्गमां कोइ ज ता आवतानी साथें वात करे नहीं. ए प्रमाणे स्वस्थानकमां आ वीने इरियावही पडिक्कमे, चैत्यवंदन करी धर्म क्रियामां प्रवर्त्ते. अ थवा जो कोइ संबंधी तथा सेवक सामो आहार, पोसहशालामां लावे, तो पण पूर्वोक्त रीतें आहार करीने पात्र कोरां करी तेनें पाछां आपे ; अने पछी धर्मक्रियामां प्रवर्त्ते. जो त्रिविहार उपवास होय तो एकलुं पाणीज मात्र पूर्वनी पेरें जइने लइ आवे, एवी रीतें आहारपोसह करे, तेने देशथी पोसह कहीएं अने चौविहार उप वास करी पोसह करे, तो तेने सर्वथी पोसह कहीयें.

२ बीजुं शरीरसत्कारपोसह. ते सर्वथा शरीरनो सत्कार एट ले धोवन, धावन, तैलमर्दन, वस्त्राभरणादि शृंगार प्रमुखथी को इ रीतें शरीरनी शुश्रूषा न करे. साधुनी पेरें अपरिकर्मित थको र हे ; ते सर्वथी शरीरसत्कार पोसह कहीएं. तथा देशथी शरीर सत्कार पोसह ते पोसहमां हाथ पग प्रमुखनी शुश्रूषा करवानी छूट राखे ; ते देशथी शरीर सत्कारपोसह कहीयें.

३ त्रीजुं अब्रह्मचर्य पोसह. ते जे त्रिकरण शुद्धें पोसहमां ब्र ह्मचर्य पाले ; ते सर्वथी ब्रह्मचर्य पोसह जाणवुं अने जे मन, वचन अने दृष्टि प्रमुखनी छूट राखे अथवा परिमाण राखे, ते दे शथी ब्रह्मचर्य पोसह जाणवुं.

४ चोथुं सर्वसावद्यव्यापार त्याग करे ते सर्वथी अव्यापार पोसह कहीयें, अने जो एकादि अने जो एकादि वस्तुनी अथवा उघरा यवा आदेशादिकनी छूट राखे, ते देशथकी अव्यापार पोसह कहीयें.

ए प्रमाणे चार प्रकारनां पोसह छे. ते दरेकना बे बे भेदछे ते प्रथम ज्यारें आगमविहारी गुरु विद्यमान हता, त्यारे ते भव्य जीव श्रावको पण शुद्ध उपयोगी घणा पापभीरु हता, अने तेउ पोतें जे जे प्रतिज्ञा करता हता, तेवीज शुद्ध पालता हता. तेवीज रीतें उपयोगमां राखीने चालता, पण विस्मृति कर ता न हता, तथा तेमां कमवेश करता न हता अने गुरु पण अतिशय ज्ञानना प्रभावथी योग्यता जाणी लेता हता के आ देश थकी पोसह करवा लायकजछे, अथवा सर्वथकी पोसह करवा लायकछे वली छद्मस्थ भावथी कदापि कमवेश थइ जाय तो ते तरत जाणीने विचारता के मारी प्रतिज्ञामां आटली खोंच लागी आटलुं अविरति पणुं लाग्युं एवु जाणीने तेनी तरत आलोय णा लेता, अने पडिक्कमतां पण महोटी भूल न पडवा देता अ ने हमणां तो एवा उपयोगी जीव नथी. काल दोपना प्रभावथी वक्र जडछे, ए माटे पूर्वाचार्योंये उपकारने अर्थें लाभालाभनी तुल्यता विचारीने आ मुजब जीतव्यवहार बांध्योछे. तेमा प्रथम जे आहारपोसहछे, तेना बे भेद कीधाछे ते आहारपोसह दे शथी पण करे अने सर्वथी पण करे. एम जेवी पोतानी शक्ति होय ते प्रमाणे करे. अने बाकीनां जे त्रण पोसहछे, ते तो स र्वथीज करे देशथकी तो थायज नहीं. ए व्यवहारशैली बांधीछे. एवी रीतें वर्त्तमान कालें पोसहनी प्रवृत्तिछे. हवे पोसहनो प्रभाव आगममां जे कह्योछे, ते लखेछे.

जे,पापना समूह तेणे करी भारयुक्त थयेला एवा बहु सावद्यव्या पारी गृहस्थने आरंभनो बोजो उतारवाने पोसह,ते विश्रामनु स्था नकछे विश्राम करता अल्प बोजो थाय. जेम भार उपाडनारो पोताना मस्तक उपर मोहोटी गासडी उपाडी वे, चार कोश चा ले एवामां कोइ विश्रामनु स्थानक आवे, त्यारें ते प्रसन्न थइने

बोजो उतारे. जे माटे शीतल गया विश्रामनुं स्थानक होय तथा घडिवार जलाशय होय त्यां बेसे, त्यारें आनंद थाय, थाक मटे, शरीर हलवुं थाय, फरी बोजो उपाडीने चालतो थाय. ए प्रमाणे बे,चार विश्राम लेतो थको सुखें धारेले ठेकाणे पहोची जाय ; तेम श्रावकें पण दररोज सावद्य व्यापारनो बोजो घणो उपाड्योछे. अने तेवो महोटो भारे बोजो उपाडीने चालेछे ; ते ज्यारें पांखी प्रमुख पर्वना दिवस आवे, त्यारें प्रसन्न थइने घरनो जे सावद्य कर्मरूप बोजो, तेने उतारी घरमांज राखीने विश्रामरूप क्षेत्र पौषध शालामां जइने बेसे, अने पोसह धारे त्यारें, सावद्यरूप बोजानो परिश्रम एटले थाक उतरी जाय. अने भावना उपदेशरूप शीतल पवनथकी विषयकषायरूप गरमी, विकल्प पशीनो मटी जाय, आत्मा शीतल थाय. अने जिनशासनरूप कल्पतरुनी गयामां बेसीने पोताना स्वरूपचिंतवनरूप जलें करीने घणा कालनुं पाप धोइ नाखे. आत्माने ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप भावभोजनथी पोषे.ए प्रमाणे वचमां वचमां पोसह करण रूप विश्राम लेतो थको आराधकभावना स्थानकें जइ पहोचे. अहींयां आठे दिवसें अथवा पंदरे दिवसें पोसह करे, तो पण फल एक पोसहनुं एटलुं कह्युंछे. शास्त्रमध्ये एक पोसहनुं फल कह्युंछे, ते जाणवुं, जे प्रभुनी आज्ञापूर्वक एक अहोरात्री पोसह करे, ते जीव बे हजारने सातशें कोडी तथा ते उपर सीत्तोतेर कोडी सीत्तोतेर लाख,सीत्तोतेर हजार, सातशें ने सीत्तोतेर. एटला पल्योपम तथा एक पल्योपमना नव भाग करीयें तेवा सात भाग उपर एटलुं देवतानुं आयुष्य बांधे ; अने एटलीज नरकगतिथी छूटे. अहो ! एक पोसह कस्याथी जीव, एटलो लाभ उपार्जे ? तेना अंकसंख्यानी स्थापना. (२७७७७७७७७७७ अने ७/९) एटलुं फल, एक शुद्ध व्यवहारपोसहनुंछे. अने वली जो व्यवहारपोसह क

रतां थकां चेतनाने निश्चयपोसहनी लीनता लागी, तो ते पोसह ना फलप्राप्तिनुं तो परिमाण पण न थाय तेनो अगणित लाभछे. यावत् रत्नत्रयी क्षायकभावे थइ जाय त्रणे लोकना भव्य जीवने पूजनीय थाय ए माटे पोसहछे, ते गृहस्थने अवश्य करवुंज. ए पो सहछे, ते कर्मरूपी भावरोगनुं औपधछे माटे गृहस्थे पर्वदिवस आवे त्यारे जरुर पोसह करवुं हवे ए व्रतना पांच अतिचार लखेछे

१ प्रथम अप्पडिलेहिअ, डुप्पडिलेहिअ, सिज्जासंथारक अति चार. ते जे स्थानकने विषे पोसह संथारो करे,ते भूमिनी तथा सं थारानी पडिलेहणा करे नहीं एटले संथारानी जग्या पोतानी आंखे थी सारी पेठे निगाह करीने जूए नहीं अने कदापि जूए तो प्रमाद थी कांइ दीठी काइ न दीठी, एवी रीतें जूए, ते पहेलो अतिचार.

२ बीजो अप्पमज्जिय, डुप्पमज्जिय, सिज्जासंथारक अतिचार ते एम के, ते संथारो,रजोहरण प्रमुखथी पुजे नहीं.कदापि पुजे, तो जेवो तेवो गडवडथी संथारो पुजे, पण चरवाचलें दंमाशणथी पुजे नहो, अने कोइ जीवनी रक्षा करे नहीं. ते बीजो अतिचार. जे प्रमाणे श्री जैनशासननी शैली एवी छे, ते प्रमाणे मार्गी जीव क्रिया करे, ते आवी रीतेंके प्रथम तो हरेक क्रियामां दृष्टिपडिलेहण करे सारी रीतें सर्व स्थलें चीज ने निगाह करी जोइने पछी पुज णा प्रमुखथी पुजें, पछी ते वस्तु वापरे, एवो तो सहेज चाल छे त्यारें पोसहादिक क्रियामा तो निपट उपयोग धरीने पडिलेहणा प्रमुख करवी जोइयें अने एवी रीतें जयणाथी जो न करे, तो तेने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अप्पडिलेहिअ, डुप्पडिलेहिअ. उच्चारपासवण भूमि अतिचार. ते एमके लघुनीति अथवा वडीनीति परठवानी भूमिने सारी रीतें दृष्टिये करी अवलोकन न करे, अने अवलोक

न करे, तो जेम तेम काम चलावी दे. जीवयत्न कीधा विना लघु नीति प्रमुखनी परठवणा करे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो अप्पमज्जिय, डुप्पमज्जिय, उच्चार पासवण भूमि अतिचार. ते मात्रानी, तथा पोसहशालनी भूमि अप्रमार्जित देखीने न पुंजे. अने पुंजे तो यद्वा तद्वा करीने काम करे. एम वडीनीति, लघुनीति प्रमुख यत्नथी परठवे नहीं ; ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो पोसहविधि विवरीए अतिचार.ते आहार त्याग पोसह कीधे, क्षुधादि परीसह लागे,त्यारें पारणुंकरवानी चिंता करे, के प्रभातें फलाणी रसोइ अथवा फलाणी चीजनो आहार करशुं तथा एम चिंतवे जे अमुक काम सवारें करवुंछे,ते त्यां जइश अने तेनी उपर तागादो करीश.तथा प्रभातमां पोसह पालीने पछी सारी रीतें तेलमर्द्दन करावीने खुब गरम पाणीथी स्नान करीश.तथा अमुक पोशाक पहेरीश,अने कुलस्त्रीनी साथें खूब तरेहथी आवी रीतनो भोगविलास करीश. एवुं सावद्य चिंतवे,तथा संध्यासमये स्थंडिलशोधन न करे,पोसहमां विकथा करे,निद्राकरे अने नीचें लखेला अढार दोषोने टाले नहीं. ते अढार दोषोनां नाम लखीएं छैयें.

१ पोसहमां व्रती विनाना बीजा श्रावकनुं आणेलुं पाणी न पीवुं.
२ पोसह निमित्तें सरस आहार लेवो नहीं.
३ पोसह करवाना आगले दिवसें उत्तर पारणामां विविध प्रकार संयोग मेलवीने आहार करवो नहीं.
४ पोसहअथवा पोसह निमित्त आगले दिवसें देह विभूषण नकरवुं.
५ पोसह निमित्तें वस्त्रादिक धोवरावंवां नहीं.
६ पोसह निमित्तें आभूषण घडावीने पहेरवां नहीं, वस्त्र लेवां नहीं, अंगें घरेणां पहेरवां नहीं. स्त्रीने पण नथ तथा कंकण प्रमुख जे सौभाग्यनां कुशल चिन्हछे, ते पहेरवां परंतु ते विना पोसहमां बीजां नवां घरेणां घडावीने स्त्रीयें पहेरवां नहीं.

पोसह निमित्त, वस्त्र रंगावीने पहेरवा नहीं.
पोसहमां शरीरथी मेल प्रमुख उतारवो नहीं.
पोसहमा शयन करवुं नहीं निद्रा करवी नहीं
पोसहमां सारी वा नगारी स्त्री सबंधी कथा करवी नहीं.
पोसहमां आहारने सारो नगारो कहेवो नहीं
पोसहमा सारी वा नगारी राजकथा तथा युद्ध कथा करवी नहीं
पोसहमां अमुक देश आवो रुडो छे अथवा अमुक देश जूंमो छे, एवां देशकथाना वचन, बोलवां नहीं.
पोसहमां पुज्या विना जूमिए लघुनीति अथवा वडीनीति परठववी नहीं, अने परठवे तो पोताथी वोसिरावे. इरियावही पडिक्कमे.
पोसहमा बीजानी निंदा करवी नहीं
पोसहमा स्त्री, पिता, माता, पुत्र, जाइ विगेरे सर्व संबंधी साथे वार्तालाप करवो नहीं.
पोसहमां चोरनी कथा न करवी
पोसहमा स्त्रीनां अंगोपांग दृष्टि लगावीने जोवां नहीं.
ए अढार दोष पोसहना छे ते त्याग करीने पोसह करे, ते शुद्ध पोसह कहीये. तेथी जो विपरीत करे, तो पाचमो अतिचार लागे.
इति श्री द्वादशव्रतविवरणे एकादश पौषधोपवासरूपतृतीय शिक्षाव्रत पंमित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतजापा सपूर्णा ॥ ११ ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री द्वादश अतिथिसंविभागनामा चतुर्थ ॥ शिक्षाव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अब बारम व्रत हे "अतिथि, संविभाग" यह नाम,
कहुं दोष आहारके, पुनि अतिचार हे ताम ॥ १ ॥

हवे अतिथि एटले जेने लौकिक पर्वोत्सवादिक दिवसोनुं प्रयोजन नथी, ते अतिथि कहीयें. एटले लोक व्यवहारमां जे संसार वृद्धिनी हेतु तिथि, तेहेवार,विवाहादि लग्नतिथि इत्यादिक सर्वे जेणे छोडी दीधांछे. सर्वे दिवसोमां जेनी धर्माराधन करवानी एक निष्ठाछे, तेने अतिथि कहीयें. अथवा जेम अतिथि एटले प्राहुणो, मिजमान माणस कोइने घेर आवे, ते कांइ तिथि तेहेवारनो दिवस जोइने न आवे, गमे ते दिवसें पंथेंथी चाल्यो आवे. तेने कांइ तिथिके तेहेवारनुं प्रयोजन नहीं, अणचिंतव्यो आवीने उभो रहे ; तेम साधु पण निमंत्रणादि कीधा विना भोजन कालें आवी हाजर थाय. प्रायें साधु श्रमणो तो गुरु आज्ञा विना गृहस्थने घेर कदापि जाय नहीं, अने भोजन कालें मधुकर एटले भ्रमरनी वृत्ति करे. निमंत्रण विना गृहस्थने घेर विचरता जाय. ते पण गृहस्थने अकलामण न उपजावे. एवी रीतें आहार लिये, ते अतिथि जिनाज्ञाकारी शुद्ध साधु तेनो जे संविभाग करे. एटले न्यायोपार्जित शुद्धव्यवहारें कमाएलुं जे द्रव्यादिक ते मांथी पोताना उदर भरणने माटे उत्तम कुलाचार पूर्वक जे शुद्ध निर्दोष आहार नीपजाव्यो अने ते पण पूर्वकर्म पश्चात्कर्मादि दोष रहित होय, एवो शुद्ध अने निर्दोष आहार ते बहुमान सहित भाग्ययोगें गृहने विषे साधु आव्या थका अतिहर्षवंत थयो थको आहार आपे. अने ते पण दानना पांच गुणें करी युक्त दातारनी शुद्धता धरी आपे. ते दानना पांच गुणनां नाम लखेछे.

१ प्रथम जे जैनमार्गी दातार. ते शुद्ध पात्रनी प्राप्ति पामीने प्रथम पोताना घरना आंगणाने विषे मुनिनां दर्शन मात्र थयां अने तेणे करी घणा दिवसनी अंतरंगनी चाहनाना उल्लासथी आनंदनां आंसु आवे,जेवी रीतें कोइ आपणो प्रिय अने परम हितकारी प्राणप्रिय एवो वल्लभ सज्जन दूर देशांतरें गयो होय,तेने कदी

पण मनथी विसारतो नथी; मनमां एज वांछा लागी रहे के ते आपणने क्यारें मलशे? एवी चाहना राखता राखतां घणो काल वीत्या पछी लांबी मुदतें कोइ वखत ते सज्जन अणचिंतव्यो एका एक आवी उनो रहे, त्यारे ते परम वल्लभने जोइने अंतरंग रागनी धारा उल्लासथी आंखमाथी हर्षनां आंसु पडे. ते शीतल होय जे कारणे वियोगना आंसु गरम होयछे अने हर्षना आंसु शीतल होयछे तेम श्रावक पण साधुने आवतो देखी करी प्रशस्त रा गभक्तिना उल्लासे उठे; अने मनमां विचारे के अहो! आज हुं महोटो भाग्यशाली के जे हुं अनादिनो भूट्यो, स्वद्रव्य संबलरहित, भाव दरिद्रें पीडित, ज्ञानलोचन रहित अंधभावें पीड्यो, अपारसंसारचक्रमां पड्यो भटकतो हतो, एवो जे हुं, ते बहु अकथनीय दुःख पामतो अने कशी गणतीमा नहीं हतो, एवो महादुःखी मने जोइने आ म्हारा मोहोटा हितकारी मुनि राजे महोटो करूणाभाव धारण करी मारा उपर महोटी मेहेर बानी कीधी जे प्रथम तो मने ज्ञानाजनशलाका फेरवीने मा रां सम्यक्ज्ञान लोचन खोली दीधा अने ए मुनियें त्रण तत्वसे वारूप आजीविकानो व्यापार शीखवाड्यो, तथा मुजने रत्नत्रयी धारणरूप नियमा करी दीधी एवी रीतें म्हारो अनादिनो दरिद्रभाव मूकाव्यो, मने सारा आदमीनी गणतीमां आण्यो एवा निष्कारण अने गरज विना महोटा उपकारी महामुनिराज ते मारा घर आं गणाने विषे आव्या, ए भावनानी पुष्टिथी,प्रशस्तरागना भाव उल्ला सथी हर्षानंदना आंसु आवे, ते दाननो पहेलो गुण

२ बीजो जेम ससारी जीवने अत्यंत इष्ट वस्तुनो संयोग पा मवाथी रोमावलि उभी थाय, तेम महोटी भक्तिना प्रभावथी मु निने जोइनें ते श्रावकनी सर्व रोमावलि उल्लसित थाय, अने हृदय मां हर्ष समाय नहीं, ते दाननो बीजो गुण

३ त्रीजो मुनिने देखीने मुनिप्रत्यें बहुमान उत्पन्न थाय. जेम कोइ संसारी सामान्य गरीब गृहस्थने घेर राजा पोतें चालीआवे त्यारें ते गृहस्थ, ते राजाने केवुं मान आपे? अर्थात् घणुंज मान आपे. मनमां घणोज आश्चर्यमय थइ उमेद भर्यो हर्ष भर्यो थाय. अने मनमां विचारेके अहो! आज म्हारे घरे महा राज आव्या, माटे घरमां कोइ सारी अने नवाइ जेवी चीज होय ते हुं एमने भेट करुं,फरी फरी एवा मोहोटा लोको मारे घेर क्यां थी आवे? आवो संयोग फरी क्यारें मलवानो छे? आ दुर्लभ यो गतो मारा मोहोटा भाग्योदयथी मल्योछे. एवो विचार करी घर मां जे सर्व करतां सारी अने नवाइनी चीज होय, ते राजाने भेट करवा माटे काढे. वली विचारेके आ म्हारा घरनी चीजने महा राज कबूल करे, तो म्हारां मोहोटां भाग्य हुं मानुं, एवा उल्ला सथी ते गृहस्थ, राजाने पोतानी वस्तु भेट करे, तेम श्रावक पण साधुनें पोताने घेर आव्या देखीने तेउ प्रत्यें घणुं बहुमान करे. अने विचारे के एवा निस्पृहीमां शिरोमणि, जगद्बंधु, जगत् हि तकारी, जग वत्सल, निष्कामी, आत्मानंदी, आत्मारामी, करुणा निधि, परमोपकारी, परमपात्र, करुणासागर, संसारजलधिउ द्धरण, परमउपकार करवामां दक्ष, क्रोधादिकषायभक्षक. पोतें तरेला, परने तारनारा, एवा महामुनिराज चालीने म्हारे घेर आव्या,तो आज म्हारां म्होटां भाग्य जाणवां. आज रूडो सुवि हाण थयो, आज म्हारे आगणे कामधेनु, कल्पवृक्ष, चित्रावेली अने चिंतामणि ए अणचिंति चाली आवी अने आज म्हारी जा गृत दशा सफल थइ. एवो हर्ष भर्यो ससंभ्रम होतो थको ते मुनि नी सन्मुख जाय अने त्रिकरण शुद्ध प्रणाम करीने कहे के हे स्वा मि! दीनदयालुजी! पधारीयें. माह्वारा घरनुं आंगणुं पावन करियें. एवुं बहु मान दइ करीने घरमां पधरावे, पछी मनमां विचारे के,

अहो! म्हारां अतुल नाग्यनो उदय थयो होय तो आज आ साधु म्हारां आहार पाणीनो अनुग्रह करे.जे कारण माटे साधुजीने आ हार लेवामां म्होटी तजवीजछे आहारनी गवेषणा करे,शुद्धनिर्दो पनी प्रतीति आवे,त्यारें तो साधु आहार ले. ए कारण माटे रखे कोइ दोष माराथी उपजे? एवो विचार करी त्रिकरण योगें वहुशुद्ध, मान नखो उपयोगी थको विधिपूर्वक आहार लावे,अने मीठां व चनोथी ते साधुनी विनति करे के हे स्वामिजी! हे गुरुजी! आ शु द्ध निर्दोषी आहारछे, ए माटे हे कृपानिधान! मुज सेवक उ पर परम शुन दृष्टिनो पसाय करी सपात्रकर पसारीयें. म्हारो निस्तार करीयें एवां मीठ अने परम नक्तिवत वचनोयें विनति करतो थको आहार आपे, त्यारे ते मुनिराज, ते योग्य आहार जाणीने ले, अने श्रावक पण जेटली दानलायक निर्दोष वस्तु होय, तेज सर्ववस्तुनी निमंत्रणा करे. एवा विधिये करी दान आपीने फरी ते मुनिप्रत्यें हाथ जोडी, नीचो नमी, पृथ्वीपर मस्त क लगावीने नमस्कार करे. पछी वली मीठां वचनोयें विनति क रे के हे स्वामि! कृपानिधान! मुज गरीबनी एक विनतिछे, ते सां नली लेइये. सेवक उपर मोहोटी कृपा करी मने म्होटो कखो, मारी पर म्होटो उपकार कखो,आज म्हारुं घर पावन थयुं उत्कृ ष्ट नाग्योदय विना मुनिना चरण कमलनी रज घरमा क्याथी पडे? (गुणिपदकजधूलरजकंचन सेवहुं मूल मेरा) आजनो दिवस सफल थयो फरी पण हेस्वामिजी! अशन,पान, खादिम, स्वादि म, औषध, नेषज, वस्त्र, पात्र, शिक्षा, संथारकादि प्रयोजन उप जे, त्यारें सेवक उपर कृपा करी अवश्य अनुग्रह करवोजी स्वामि जी! आप तो म्होटा मुनिराजछो, गुणवान्छो, निस्पृहीछो. आपने कोइ चीजनी कमती नथी, कोइ वातनो प्रतिबंध नथी, वायुनी पेरें अप्रतिबंधछो. तो पण हे करुणानिधान! मुज सेवक उपर

कृपा करीने फरी अनुग्रह करवो. ए प्रमाणे कहेतो कहेतो पोता नी हद्दसुधी ते मुनिश्रेष्ठने पहोचाडवा जाय.

४ चोथो गुण एके, त्यांथी ते मुनिने वंदना करी,पाछो फरी घेर आवी, भोजन करे. पण तेने मनमां हर्ष समाय नहीं. म्हारो मुनिना आगमनरूप भाग्योदय थयो, तेणे करी हर्षवंत थयो थको विचारे के आज कोइ माहारे भली वात थइ गइ, मने महोटो कोइ लाभ थयो. कारण, जे मुनिराज निस्पृही तथा तृष्णारहित, गतप्रतिबंधी, सहजउदासी, निरीह, एवाने में विनति कीधी, एटले तरत म्हारे घेर आव्या.वली में जे आहार आप्यो, ते पण सर्व लीधो. वचमां कोइ अंतरायरूप विघ्न न थयुं. एथी करी म्हारो कोइ सारो वखत प्रगट्यो जणायछे. फरी आवो योग क्यारें मले? अने जो मले, तो जाणुं जे म्हारे अतुल्य पुण्यनो प्रसाद थयो. एवी अनुमोदना वारंवार करे.

५ पांचमो गुण. ए जे जेम कोइ मंदभाग्यवान् पुरुष, व्यापार करतां करतां थोडुं कमाय, तेने कोइक दिवसें एकज शोदामां लक्षद्रव्यनी प्राप्ति थाय, त्यारें ते फरी व्यापारनी अनुमोदना केवी चाही चाहीने करे? तेवी रीतें एना करतां पण अधिक दाननी चाहना समकेती जीव राखे. ए पांचे गुणोयें युक्त दान आपवुं, ते शुद्ध दान कहेवाय, ए शुद्धदानथी अतिथिसंविभागव्रत थाय.

अहींयां श्रावकें साधुने दोष रहित आहार आपवो, अने साधुयें पण दोषरहित आहार लेवो. त्यां दोषनी विचारणा करतां प्रथम शोल दोष श्रावकथी लागे. अने शोल दोष साधुथी लागे, तथा दश दोष साधु अनें श्रावक बन्नेथकी उपजे, ए प्रकारे बधा मली बेंतालीश दोषनो त्याग करीने साधु आहार लीये, ते बेंतालीश दोषमांथी प्रथम श्रावकथी शोल दोष लागे, ते लखेछे.

१ पहेलो आधाकर्मी दोष. ते साधुने वास्ते ठकायनो आरन्न करी, आहार नीपजावे, ते आधाकर्मी दोष.

२ बीजो उद्देशिकदोष ते जेवारें रसोइ करवा मांमे, तेवारे पोतें रसोइ करनारने कहेके, रसोइ घणी करजो कारणके, साधु प्रमुख आवशे, तेमने सारी रीतें आपशुं. जो रसोइ घरमां पुष्कल होय, तो कोइने देवाय. कदापि रसोइ कमती होय, तो देवाय न हीं. त्यारे साधुने शुं अपाय ? ए माटे रसोइ वधती करजो. एवी रीतें साधुनुं नाम लेइनी वधारे रसोइ करावे, ते उद्देशिकदोष

३ त्रीजो पूतिकर्मदोष. ते आधाकर्मी प्रमुख हर कोइ दोषे दूषित एवो अशुद्धाहार होय, ते शुद्धाहारनी साथे जेलवे, ते पूतिकर्म दोष.

४ चोथो मिश्रजातिदोष. ते घरमा कह्या करे के, रसोइ उ तावलें बनावो. वखत थयोछे माटे जो वेलासर रसोइ बनावो, तो कांइ आपण जमीये अने कांइ साधुने पण आपीये. ए माटे ताकीदथी रांधो. एम कही कहीने जे आहार बनाव्यो, ते मिश्र जाति दोषे दूषित आहार जाणवो.

५ पांचमो थापनादोष ते जे गृहस्थ, जोजन वखतें एम क हे जे आज आ रसोइमांथी आटलो आहार वाशणमां जूदो काढी राखो. ते जेवारे साधु आवशे, त्यारे देवो पडशे. एवी रीतें व्यवहा र करीने आपवुं, ते पांचमो थापनादोष.

६ ठठो पाहुडीदोष. ते साधुने आव्या जाणी चीज वस्तु आगल पाठल खडन्नड करे, धका धकीमां सावद्यक्रिया करीने साधु आगल लावीने आहार आपे, ते पाहुडीदोष.

७ सातमो प्राडुःकृतदोष ते साधुने आव्यो जाणीने जो घरमां अंधारुं होय, तो तेने मटाडवानो प्रयत्न करे, खडकी, जाली, बारी, बारणां, ए सर्वेने तरत उघाडी नाखीने अजवालुं करे. मनमां

जाणे जे अंधारुं हशे तो साधु आहार लेशे नहीं. एम करी आ हार आपे. ते प्राडुःकृतदोष.

७ आठमो क्रीतदोष. जे साधुने आव्यो जाणी करी बजारमांथी मूल्य आपी करी आहार वेचातो लावी साधुने आपे, ते क्रीतदोष.

ए नवमो प्रामित्यदोष. ते कोइनुं उधार उछीनुं लेइने आपे, करज करीने आपे. ते प्रामित्यदोष.

१० दशमो परावर्त्तितदोष. ते साधु आव्या जाणी मनमां विचारे जे, महारा घरमां तो नीरस आहारछे; ते साधुने केम दीधो जाय ? वास्ते पडोशी अथवा संबंधीने घेर, ते नीरस आहार आपीने तेने बदले साधुने सारु सारो सरस आहार थोडो लावे, ते साधुने आपे. ए दोष, भक्तिथी अथवा अभिमानथी अथवा लोकलाजथी थाय. एटले लोकोमां वात चर्चा थाय, जे आवो मातबर गृहस्थ थइने एवो आहार साधुने आपेछे, अथवा कोइ नीरस आहार देतां थकां पाडोशी जोशे, तो आपणी निंदा करशे, ने कहेशे के ए एवो आहार साधुने आपेछे ! एमाटे लोकलाजथी सारो आहार लावीने आपे, ते दशमो परावर्त्तित दोष.

११ अगीयारमो अन्याहृतदोष. ते पोताना घरमां जे आहार बनेलो होय, ते भद्रकपणाथी आहारने सामो लइ साधुने स्थानकें जइने आपे, ते अन्याहृतदोष.

१२ बारमो उद्भिन्नदोष. ते कोठीमां तथा संजीरा प्रमुखमां घीज राखेली होय, ते चीजनो आहार, ते कोठी संजीरा प्रमुखनुं ताळुं उघाडीने तेमांथी आपे, ते उद्भिन्नदोष.

१३ तेरमो मालाहृत दोष. ते आहारने मेडी माल उपर, अथवा छीका उपर, अथवा छत उपर, अथवा बीजा कोइ स्थानक उपर उंचो राखेलो होय, ते निसरणी प्रमुख मांडीने त्यां पहोंची

ने पछी उतारी लावे अथवा भोंयरामां नीचें उतरी तेमांथी आ हार लावे, ते आहार, साधुने आपे, ते मालाहृतदोष

१४ चौदमो आछिद्यदोष. ते एके पारकाना हाथमां जे ची ज होय, ते तेनी कनेथी छीनवी लेइने साधुने आपे, ते आछिद्य दोष.

१५ पंदरमो अनिसृष्ट दोष. ते एके घणा माणसोनी कोइ साधारण चीज, वेंची लीधा विनानी होय. तेमांथी उपाडीने सा धुने आपे, ते अनिसृष्टदोष

१६ शोलमो अध्यवपूरकदोष ते कलकलता पाणीमां बीजुं पाणी पूरे. अथवा भात प्रमुख चूला उपर चडेलांछे, तेमां बी जा चोखा नाखे, एम तैय्यार थता आहारमां बीजी पूरणी करे, अने मनमां विचारे के आज गाममां साधु घणा आव्याछे, तेउ मांथी हरकोइ पण आहार लेवा माटे आपणे घेर आवी चडशे, ए माटे रसोइमां घणी पूरणी करी रसोइ वधारे कराविये एवुं क रीने पछी ते आहार साधुने आपे, ते अध्यवपूरकदोष. ए शोल दो ष, श्रावकथी साधुने लागे छे. एमां केटलाएक दोष अजाणप णे लागे, केटलाएक भक्तिथी लागे, केटलाएक दृष्टिरागथी ला गे अने केटलाएक अभिमानथी लागे. ए शोल दोष टाली तजवीज करीने श्रावक, शुद्ध आहार साधुने आपे अने साधु प ण त्यारे निर्दूषित आहार जाणीने ले.

हवे साधुथी शोल दोष उपजे, ते कहेछे.

१ प्रथम धात्रीदोष. जेम धात्री उदरपूर्णार्थें गृहस्थना बाल कने रमाडे, तेम साधु पण गृहस्थना बालकने रमाडे, तरेह तरेहनां वचनोयें करी बोलावे, चपटी वगाडी रीजवे, तरेह तरेहनां चाटु क वचन बोली करीने बालकने, हसावे, घणो प्यार देखाडे तेवुं जोइने ते बालकनां माता पितादिक जाणे के साधुजी अमारा छोकरा उपर बहु हेत करेछे. तेणे करी ते बालकना नि

मित्तें ते साधु उपर दृष्टिरागनो उल्लासी थाय, तेवारें साधुने आहार आपे. ते आहार साधु ले, त्यारें धात्रीदोष लागे.

२ बीजो दूतीदोष. ते जे साधु विचरवा गया थका श्रावक श्राविकाने कासीदनी पेठें परगामना समाचार अथवा कागल आणीने आपे पीयरनी हकीकत जावीने वहूने कहे. वली वहूप्र मुखने बीजी मुखचातुरी बनावीने कहे के, तमारी माताजी सुख चेनमांछे, अने तमारा नाइजी पण साजा ताजाछे. बीजा पण सर्व कुटुंबीयो कुशल क्षेम छे. वली कहेके फलाणानुं सगपण थयुं, फलाणाने छोकरो थयो, ते तमोने अमुक चीज मोकलशे, तेमणे अमुक चीज तमारी पासेंथी मंगावीछे. इत्यादिक संदेशा कही करी गृहस्थने राग उपजावी आहार ले. अहींयां कोइ गृहस्थें धर्मसंबंधी संवरवृद्धि कारणरूप संदेशो कह्यो होय, तेपण निक्षा अवसरें न कहे, बीजे अवसरें कहे पण संसार संबंधी संदेशो तो कदापि कालें कहेज नहीं, एवी रीतें गोचरी जायने संदेशा क हीने निक्षा लियें, ते बीजो दूतिकर्मदोष.

३ त्रीजो निमित्तदोष. ते गोचरी गये थके गृहस्थने, निमित्त बतावे, गृहगोचर, शुनदशा, अशुनदशा बतावे, तमोने आटला दिवसनी पीडाछे, तमोने बारमो वा आठमो शनिछे, एवुं कहे; तथा आटला वर्षनी तमोने पनोतीछे, माटे अमुक दान आपजो, जाप करावजो, एथी करी सुख थशे. आगल घणा सारा ग्रह आ वशे; त्यारें घणुं सुखचेन पामशो. तमारा दिलमां अमुक वातनी चिंताछे. एवी मनमानी वातो कहे, तेथी ते गृहस्थ खुशी थाय. चमत्कार पामे अने सारो आहार आपे, ते साधु लीए, तेवारें तेने निमित्तदोष लागे.

४ चोथो आजीविकादोष. ते वहोरवा गये थके त्यां गृहस्थ नी पासें पोतानी जाति ज्ञाति जाहेर करे ने कहेके, शेठजी! तमे

अमने नथी उलखता ? अमे फलाणा शाह्ना ठोकरा, फलाणा ना भत्रीजा, फलाणो अमारो भाइ थायछे, तमारी साथे पण अ मारे संसारनो नातोछे. तमे अमने उलखता हशो के नही उलखता हो ? पण अमे तो सर्व जाणीयें छैये. एक आहारार्थे एटला संबंध प्रगट करे, ते वारें ते गृहस्थने संबंध संबंधी राग उपजे. तेणेकरी ते खुशीथी आहार आपे, ते आहार साधु लीये, ते आजीविकादोष.

५ पांचमो वणीमगदोष. ते जे आहारने अर्थे साधु दीन पणुं बोले के, आज संसारमां सर्व स्वार्थीछे, परमार्थी कोइ नथी. तो अमारी खबर कोण लेछे ? तमारा जेवो कोइ धर्मरुचि, धर्मिष्ट, उपकारी अने उदारचित्तवान् होय, ते जाणे, बीजो कोण जा णे ? अमे तो निराधार, निरालंबनवृत्तिवाला छैये अमारो कोइ वालो सगो नथी. आ नगरमां तो एक तमारुंज घर धर्मात्माछे, जे आटली पण खर खबर तमे लीयो छो तमे अमारी तजवीज राखवा वालाछो. तमे तो साधुना मा बापछो तमेछो, तो अमारो आटलो पण निर्वाह थायछे. इत्यादि दीनतानां वचन निर्वाहने अर्थे कहे, त्यारें ते गृहस्थने काइ अनुकंपा अने काइ अभिमान तथा काइ राग उपजे, तेवारे आहार घणो आपे, ते साधु लीए, तो पांचमो वणीमगदोष लागे.

६ छठ्ठो तिगंछादोष. ते आहारने अर्थे गृहस्थने घेर गये थ के गृहस्थनी नाडी जूए, रोगना आदान, निदान प्रमुख कहे, औ षध, गोली, चूर्ण, क्काथ प्रमुख बतावे, रोगनुं मूल कारण कहे के फलाणी चीज खावाथी व्याधि उत्पन्न थयोछे, ते माटे जो गो ली खाउतो आ, रसनी गोलीछे ते खाउ. नहीं तो चार पांच दिवस औषधिनो क्काथ कूटावीने खूब तरेहथी उकालो करावी पीउ एवु गृहस्थ साभले, त्यारे खुशी थाय, अने मनमां जाणे जे ए साधु सर्वरीतें खबरदारछे. एने बीजुं काइ आपशुं तो

ए लेशे नहीं. माटे खूब तरेहथी आहार तो आप्या करो? एवुं वि चारी घरमां स्त्रीयादिकने पण ते साधुने सारी रीतें आहार आप वानुं कही राखे. एवी रीतें गृहस्थने रागवान् करीने आहार ले वो, तेथी छठ्ठो तिगंछादोष साधुने लागे.

७ सातमो क्रोधपिंडदोष. ते जे आहारनें अर्थें साधुजन कोइ गृहस्थने घेर जाय अने ते गृहस्थ तो महाकृपणछे, एवुं साधु यें जाण्युं. छती जोगवाइयें पण ते गृहस्थने कृपणतायें करी साधु ने आहार आपवानी सामर्थाइ नथी; तेथी ते मुखथी नाकारो क रे. ते समयें साधु क्रोध करीने एवी शापनी भाषा बोलेके छती श क्तियें पण साधुने आहार आपवानी ना कहोछो तो तमारे घेर लक्ष्मी नहींज रहेशे. जे छे ते पण नष्ट थइ जशे. आ नवविध परिग्रहनी जे जे वस्तु छे, तेनी सत्ता रहेशे नहीं: एवा आ शयथी बोले, त्यारें ते गृहस्थ शापना भयथी एम जाणे के, ए साधुछे, तपस्वीछे, माटे तपश्चर्यांना बलथी आवुं कहेतो हशे. शुं जाणीयें एना कह्या प्रमाणे थइ जायतो? माटे थोडाने माटे शुं करवा एवुं करीएं? एम विचारीने साधुने आहार देवानी समर्थाइ करीने आहार आपे, एवो क्रोध करी साधु आहार ले, ते क्रोधपिंडदोष. अथवा साधुने आहार आपवा माटे घरमां कोइ तरेहनो कषाय करवो करावचो पडे, ते पण दोष एमांज लेवो.

८ आठमो मानपिंडदोष. ते जें साधु, गृहस्थने घेर आहार लेवाने माटे जाय, त्यारें गृहस्थने जोइने तेनुं महोटुं मान तथा सत्कार करे. तेनी ऋद्धिने जोइने कहेके तमे महोटा धर्मात्मा अने ऋद्धिमान् गृहस्थछो. अथवा पोतानुं अभिमान देखाडवासा रु एवी रीतें कहेके, अमे पण कोइ दिवस आवा हता, अमारा घ रमां आटलुं द्रव्य हतुं, हुं आटला गामनो खावंद हतो, अमुक बद्धा

सिरदार अमारी सेवा करता हता, आवी लक्ष्मीनो लहावा लेता थका,खाता पीता हता,सर्व जग्यायें हुकम चलावता हता अथवा अमारो व्यापार हजारो कोश सुधी चालतो हतो. प्रत्येक गाममां अमारी डुकान हती,लक्ष्मीनी संख्या न हती,हजारो रुपैय्यानी तो काइ गणती पण नहीं राखता हता. जग्या जग्यानी डुकानना गुमास्ता तथा नलामणीया हता डुकानोना जवाब, खत पत्र विगेरे आवता हता देश परदेशमां कोण अमने नहीं जाणता हता? अर्थात् सर्व उलखता हता. हवे तो अमे साधु थया, बीजाने घेर आहार लेवाने अर्थे नीकल्या छीये, त्यारें हवे पाछलनी वात शुं याद करीये ? एवु ते साधुनुं कहेवु सानले, त्यारें ते गृहस्थलोक पण जाणे के " आ साधुपण असल महोटा घरनो छे, एवडी बधी संपत्ति छोडीने नावथी साधु थयो देखायछे , ए माटे एने नली रीतें विवेक पूर्वक आहार आपो, एमां महोटो नफोछे " एवो बुद्धिनो प्रपंच करी आगली गृहस्थावस्थानी संपत्तिना वखाण करीने आहार लेवो, ते मानपिंमदोष तथा साधुनी पासेंथी गृहस्थ मान पामे तें एवी रीतें के ते गृहस्थ, साधुनी पासें आव्ये थके महोटी पर्षदाने विषे तेने साधु उंचे सादे हाथनी संज्ञा करी बतावे के अहींया आवी बेसो एवुं मान आपे, त्यारे गृहस्थ जाणे के आटला लोकोनी वचमां अमोने आदर सन्मान आप्युं, माटे ए साधु सर्व तजवीज वालाछे महोटी उंलादनाछे एवु जाणी ते गृहस्थ, ज्यारें ते साधु घेर वहोरवा आवे त्यारे आहार आपे, अने ते साधु ले, त्यारे तेने मानपिंमदोष लागे.

ए नवमो मायापिंमदोष. ते जे आहारने अर्थे साधु, गृहस्थने घेर गये थके कोइ कूड कपट करी रूपपरावर्त्तनादिक कला करीने आषाढभूति साधुनी पेरें माया प्रपंच करे अथवा बाजीगरनी पेरे तंत्रख्याल देखाडीने चमत्कार उपजावे. तेथी करी

लोको आग्रह करें के, आ साधु तो करामतनुं वरजडे ; ए सर्वेवि द्या जाणे छे. एवुं जाणीने ते साधुने घणा सन्मानथी आहारादि क आपे. तथा वली कहे के हे स्वामीजी ! तमोने जे जोइयें, ते तमे बीजुं पण कांइ ल्यो. एवी रीतें मायाप्रपंच विधाने फोरवीने साधु आहार ले, ते मायापिंमदोष कहियें.

१० दशमो लोभपिंमदोष. ते जे साधु आहारार्थं गृहस्थने घेर जाय अने त्यां कोइ उदार अने प्रबल दाननो दातार जोइ ने ते साधु तेना पासेंथी पोताना खप करतां वधारे आहार लीए ; तेथी ते लोभपिंमदोष साधुने लागे.

११ अगीयारमो पुव्वपच्छासंस्तवदोष. ते आहारने अर्थें साधु गृहस्थने घेर जाय अने त्यां आहार ले, ते पहेलांज गृहस्थनी स्तवना करें के अहो ! आगल पण अमोयें घणा वखत आ घर मांथी घणो सारो अने स्वादिष्ट अशनादि चारे प्रकारनो आहार वहोरयोछे. एवुं कोइ न हशे के जे आ गाममां आवीने आ घर मां न आव्युं हशे. आ घर,सदाथी एवुंज धर्मात्माछे. आ घर कांइ आज कालनुं छे शुं ? वली एनां माता पिता पण एवांज सुधर्मा त्मा हतां. जे कोइ अभ्यागत साधु आवे, तेउने खुशी थइने आ हार देतां हतां. एमनी भक्तिनी तारिफ केटली करीयें ? सर्व जग्या यें आ घरनी यश प्रतिष्ठा प्रसिद्धछे. एमना पूर्वजोनी एवी, भक्ति सहित करणी हती तो आ पण एमनाज पुत्रछे. एमनी पण ते करतां सवाइ भक्तिछे, एमना वंशमां महोटा कुलदीपक थइ गया, तेमनां नाम हजी सुधी चाल्यां आवेछे. एवी एवी स्तुति करीने संभलावे, अथवा आहार लीधा पछी ते गृहस्थना महोढा उपर स्तुति करें के शेठजी ! तमे घणा लायक गृहस्थछो, साधुजन विषे भक्तिमान् छो, तमारा जेवो बीजो कोइ दाता नथी. आ गाममां ह मेशां तमारुं घर साधुने आहार आपवामां धोरी छे. तमे श्री जि

नशासनमां गजेंद्रछो, स्थंभछो, दीपक छो, अमारां माता पिता छो, तमे अवसरना जाणछो, परीक्षावत छो, अने भला भूंडाने स वेने उलखो छो. जे गाम जाइये छैये, ते गाममां तमारुं यश व्याप्त थइ रह्युछे. इत्यादिक रीतिये करीने साधु आहार ले, त्यारें पुवपश्चात्संस्तवदोष लागे.

१२ बारमो विद्यापिंडदोष. ते आहारने अर्थे साधु गोचरी जतां पहेलां अन्नपूर्णा देवीनुं आराधन करे. जेनी प्रसन्नताथी ज्यां जाय, त्यां घणो अने सारो आहार मले. एवी रीतें देवता नी प्रसन्नताथी सदा गृहस्थना घरथी आहार लावे, ते विद्यापिंडदोष.

१३ तेरमो मंत्रपिंडदोष ते आहारना निमित्ते गृहस्थने कामण, मोहन, वशीकरण अने उच्चाटन प्रमुख प्रयोग करे, तथा मुखबंधनादि कोइ यन्त्र प्रयोग करी आपे, अथवा गृहस्थने शीखावे, हस्तकला करे, अथवा कोइ तंत्रविधिथी जूठुं देखावा मात्र कांइ करे. एम मंत्रादि फोरवी चमत्कार देखाडीने आहार लावे, ते मंत्रपिंडदोष

१४ चौदमो चूर्णपिंडदोष ते आहारने अर्थे साधु, गृहस्थ ने घेर जाय, त्यां ते गृहस्थने अनेक जातिना औषध, चूर्ण, मेला वी आपे, अथवा ते चूर्णना विधि, रीति, क्रिया, कर्तव्यता, सद्ध करी आपे, त्यारें ते गृहस्थ, ते साधु उपर रागी थइने जाणे जे अमारी साथे गुरुजी कोइ वातनो अतर राखता नथी,माटे ए रूडा साधुछे ए प्रमाणे रागी थइने आहार आपे,ते साधु ले. ए वात पूर्वे तिगछादोषमां कहीछे; पण अहियां एटलु विशेष छे जे साधु पो ताने हाथे औषध, चूर्णादिक सिद्ध करी आपे. ते चूर्णपिंडदोष.

१५ पंदरमो योगपिंडदोष ते जे साधु आहारार्थे पादले पादिक करी, कोइ महोटो चमत्कार देखाडी लोकोने स्वानुकू ल करी आहार ले, ते योगपिंडदोष अहींयां पूर्वे मंत्रादि योग

दोष कह्या, ते तो सर्व क्षुद्रमंत्र, पण आमां तो महोटो चमत्का
र करे, माटे जूदो भेद थयो.

१६ शोलमो मूलकर्मदोष. ते साधु आहारने अर्थें गृहस्थने
अपुत्रीयो जोइने, गर्भ रहेवानुं औषध बतावे, अथवा पोतें ते
औषध बनावी आपे. अथवा कोइ अनाचरणी स्त्री होय, तेणे
परपुरुष साथें कुकर्म कीधुं होय ने तेथी ते गर्भवती थइ होय, पछी
ते गर्भपात करवा माटे, साधुने आव्यो जाणीने तेनी पासें आवीने
पोतानुं शल्य मटाडवा माटे गरीब थइने ते साधु आगल दीन भाष
ण करे; अने कहे के हे स्वामिजी! मुज हत्यारीनो उपकार करो.
आवुं पाप माराथी थयुंछे, ते उपकार करीने टालशो तो जीवीश,
नहीं तो मारे मरवुं पडशे. एवां वारंवार दीनवचन सांभलीने सा
धुने करुणा उपजे. त्यारें गर्भना शातन पातन प्रयोग प्रमुखनां
औषध, बत्ती प्रमुख होय, ते बतावी आपे, तेणे करी ते स्त्री खुशी
थइने सारो आहार आणीने आपे. अथवा मूलबंधन जे गर्भ
स्थिरीकरणप्रयोग करे अथवा शांतिकर्म करे. एवी क्रिया क
रीने आहार ले, ते मूलकर्मदोष. ए कर्म, साधुयें अवश्य नज
करवुं. ए कर्मने महादुःखदायि जाणीने जरुर त्यागवुं. ए शोल
उत्पादन दोष साधुथी थाय; अने पूर्वें जे शोल दोष कह्या, ते
श्रावकथी थाय. तेने उद्गमदोष कहीयें. ए प्रमाणे ए बत्रीशे दोष
टालीने आहार ले, ते एषणाशुद्ध कहीयें. अन्यथा अनेषणा कहियें.

हवे दश ग्रहणदोष कहेछे.

१ प्रथम शंकितदोष. ते आहारमां कोइ उद्गमादि दोषनी
शंका आवे तो आत्मार्थी साधु, ते आहार न लीए. जो लीये,
तो शंकितदोष लागे.

२ बीजो म्रक्षितदोष. ते जे अभक्ष्यादिक अयोग्य वस्तु ते
सचित्त अथवा अचित्त होय तेनाथी हाथ खरड्या होय तेवे हाथे

अथवा अयोग्य द्रव्यथी भाजन खरडयुं होय, एवा भाजनथी आहारादिक आपे, साधु ले, त्यारें म्रक्षितदोष लागे,

३ त्रीजो निक्षिप्तदोष. ते जे माटी, पाणी प्रमुख हरेक सचित्त वस्तुनो स्पर्श करीने अथवा परस्पर संघट्ट थवाथी अचित्त थाय, एवो आहार ले, ते त्रीजो निक्षिप्तदोष.

४ चोथो पिहितदोष ते एके, १ सचित्त वस्तु अचित्त वस्तुयें ढांकी होय, २ सचित्त वस्तु सचित्त वस्तुये ढाकी होय, ३ अचित्तव स्तु सचित्त वस्तुये ढांकी होय, ४ अने अचित्त वस्तु, अचित्त वस्तुये ढाकी होय. ए चार भांगामां चोथो भांगो शुद्धछे; अने बाकीना त्रण भांगा अशुद्धछे. एमाटे ए त्रण भांगे आहार ले, त्यारे पिहितदोष लागे.

५ पांचमो संहृदोष. ते जे आहार आपवाना वाशणमां अयोग्य वस्तु भरी होय, ते वस्तु बीजा वाशणमां नाखीने पछी तेज वाशणथी आहार आपे, ते पाचमो संहृदोष.

६ छठो दायकदोष. ते जे नपुंसक, बालक अतिवृद्ध, आंधलो, पागलो, कंपवायुथी जेनो देह कंपतो होय ते, जेना पगमां शृंख ला, बेडी प्रमुख जडी होय ते, धान्यने खाण्डतो होय ते, धान्यने द लतो होय ते, धान्यने भुसतो होय ते, चरखा चरखी फेरवतो होय ते, कपास लोढतो होय ते, कपासने कालामांथी तूटो पाड तो होय, वलोणुं वलोवतो होय, जमतो होय. छकायना आरंभनुं कार्य करतो होय, सात मास उपरांत गर्भवती स्त्री होय, बालकने धवरावती स्त्री होय, अने जे स्त्रीनु बालक रडतु होय, तेने पडतुं मूकीने. ए उपर कहेली क्रियाउमांनी हरकोइ क्रिया करता जे दातार आहार आपे, तेवा योगनो आहार साधु न लीये, अने जो ले, तो दायकदोष लागे.

७ सातमो उन्मिश्रदोष. ते योग्य आहारने अयोग्य आहा

रसाथें मिश्र करीने आपे,अने ते साधु ले, त्यारें उन्मिश्रदोष लागे.

८ आठमो अपरिणतदोष. ते आहारना वर्ण, गंध अने रस, ते कांइ परिणामांतर थइ गयां होय; कांइ न थइ गयां होय, वली पूर्ण संस्कार थयो नथी, अने कांइ काचो कांइ पाको, एवो आहार थयो होय, ते वखत साधु ते गृहस्थने घेर आहार लेवा आवे,त्यारें तेने ते आपे अथवा ते गृहस्थ दाताना घरमांना माणसो माहेला कोइकने आहार आपवानी रुचि थइछे अने कोइकने आपवानो भाव नथी, त्यारें जेने आपवानी रुचि थइ होय, ते दान आपे, तेवारें बीजाना दिलमां खेद उपजे. एवा बेउ गृहस्थने अपरिणत कहीयें. एवो आहार साधु ले, त्यारें अपरिणतदोष लागे.

ए नवमो लिप्तदोप. तेजे घरथी साधु आहार ले, ते आहार आपनार दातारना हाथ ते वखतें खरड्या होय, ते दान देवा माटे ते वखतें ते दातार, पोताना हाथ सचित्त पाणी प्रमुखथी धोइने पछी आहार वहोरावे अथवा वहोराव्या पछी हाथ धोइ नाखे त्यारें तेनें, साधुनिमित्त पश्चात् कर्मनो आरंभ लाग्यो. एवो आहार साधु ले, त्यारें लिप्तपिंमदोप लागे.

१० दशमो छर्दितदोष. ते जे साधुने आहार आपनारो माणस छे ते अन्न, भात, घृत, रस, दहीं, मछो, तथा रसवती शाक,भाजी, मांमा प्रमुख भूमि उपर वेरतो तथा ढोलतो थको आहार आपे, एटले थोडो भूमि उपर वेराय, थोडो वाशणमां रहे, तेवो आहार आपे अने ते साधु ले, त्यारें छर्दितदोष लागे. ए दश दोष जे ग्रहणना कह्या, ते साधु अने श्रावक बेहुना मलवाथी थायछे, अने पूर्वेना बत्रीश.एकंदर बेंतालीश दोष लागे.ए बेंतालीश दोष रहित आहार साधु लेइ आव्या पछी गुरुसमीपें आवीने गोचरी आलोवे. आवतां, जतां तथा आहार लेतां जे जे क्रिया थइ होय ते, तथा जे जे उत्तर प्रत्युत्तर थया होय ते, सर्व याद करीने गुरुने कहे,त्यारें

ते गुरु आहारने निर्दोष जाणी आज्ञा आपे. पछी गुरुजी तथा स्थविर, तथा बीजा जे साधु होय. तेमने निमंत्रणा करे, अने सर्वने कहे के हे साधुजी ! तमे पण आहार वावरो.त्यारें ते साधु आहार करवाने बेसे,त्यां आहार करती वखत पाच दोष लागेछे ते पांच दोषनां नाम लखेछे.

१ प्रथम सयोजनादोष ते आहार करतां साधु स्वादार्थे द्रव्य द्रव्यांतरथी मेलावी करीने खाय.जेम तरकारीमां लूण, मरीच,खटाइ प्रमुख मेलावे, सारी चीजमा मीठुं मेलावे. एवी रीतें स्वादिष्ट बनावीने खाय, तेने संयोजनादोष लागे साधुने तो पात्रमा जेवो आहार पड्यो होय, तेवो खावो, पण ते आहारने आगल पाछल करे नहीं तथा अहारनी प्रत्येक चीज जूदी जूदी खाधि जाय नहि तो सर्व चीज एकठी मेलवीने घोलीने खाइ जाय पण जे आहार थी रसगृद्धि वधे, ते न करे. कढी प्रमुख खातां थकां पण सबडका घणा थाय, ते न करे तथा पापड प्रमुख खातां थका घणा करड का थाय, ते न करे घणा करडका न करे तथा घणो बचबचाट शब्द थाय, ते न करे एवी रीतें साधु भोजन करे,तेम छता जे साधु द्रव्यांतर मेलवीने रससहित सरडका प्रमुख भरीने खाय, त्यारे तेने संयोजनादोष लागे.

२ बीजो प्रमाणातिक्रमदोष. ते पुरुषनो आहार बत्रीश को लीया प्रमाणनो छे, अने स्त्रीनो आहार अठावीश कोलीयानोछे. ए करता एक बे प्रमुख कवल वधारे जमे, तो प्रमाणातिक्रमदोष

३ त्रीजो अगारदोष ते साधु आहार करती वखतें आहारना देनारनी अथवा आहारनी तारीफ करतो खाय, ते एम के अ मुक आहारनो आपनार पण चतुरछे. अहो शी एनी चतुराइछे ? भोजन पण सर्व सरस अने सुस्वादछे. वली ए आहार आपनार गृहस्थ हाथनो पण उदारछे.जेने आपेछे तेनुं पात्र भरपूर करी

आपेछे. आहार वहोरवा फरी बीजाने घेर जवानी इच्छा रहेती न थी. तथा जे वस्तु वहोरावेछे, ते पण घणी स्वादिष्ट अने भावें करी वहोरावेछे. तेमां पण आजनो आहार तो घणो स्वादिष्टछे. एवी आहारना आपनारनी तारीफ करीने खाय, ते अंगारदोष.

४ चोथो धूम्रदोष. ते आहारना आपनारनी तथा आहारनी निंदा करतो थको खाय. ते एमके फलाणो दातार तो कोइ सारो न थी, हाथनो महा कृपणछे, वली एनामां कांइ चातुर्य पण नथी, सारी वस्तुने बगाडी नाखीने खायछे. एनो सदा सर्वदा एज ढंगछे. जूउ ! आ चीज बरोबर जो बनावी होय, तो केवी स्वादिष्ट थाय ? तेने केवी बेस्वाद करी नाखीछे ? एतो कमोदने कुशका करीने खाय छे. चतुर होय ते तो कुशकाने कमोद करीने खाय. आ आहार केवी रीतें खाधो जाय ? एमां कांइ स्वाद नथी. एतो गले पण उ तरतो नथी. एवां दूषणो देतो थको खाय, ते धूम्रदोष.

५ पांचमो अकारणदोष. ते जे साधु, विनय, वैयावच्च, संय मनिर्वाह, प्रबलक्षुधा, शुभध्यानस्थिरता. इत्यादिक कारण विना केवल शरीरनी पुष्टता निमित्तें सरस अने सुस्वाद आहारनुं भोज न करे, ते अकारणदोष. ए पांच मंमलिकदोष कह्या. ते आग ला बेंतालीश साथें मेलवतां सडतालीश दोष थया. ए सडताली श दोष रहित आहारना लेनारा जे साधु, तेमने अतिथि कहीयें. तेवा साधुने श्रावक, दोष टालीने आहार निमंत्रणा करे अने जे जे आहार साधुयें लीधो होय, तेमांनोज आहार पोतें पण ज मे. कदाचित् एवा साधुनो योग न मले, त्यारें शुद्ध श्रद्धावान् अने व्रत नियमादिकधारक, एवा सुश्रावकने अति घणा मान थी बोलावीने महोटा भक्तिभाव पूर्वक जमाडे अने जे आहार ते जमे, तेमांनोज पोतें पण खाय ; परंतु पंक्तिविच्छेद आहार न करे. प्रायें ए व्रतनी, पोसहनुं पारणुं करवामां मुख्यताछे. प्रवाह

थकी बीजा दिवसोमा पण व्रत प्रमुख करेजछे. तेना पाच अ तिचारछे, ते कहेछे.

१ प्रथम सचित्तनिक्षेप अतिचार ते सचित्त चीज माटी, पाणीनो घडो, बलतो चूलो अथवा अनाजनो ढगलो, अथवा सचित्त पान, तथा फल, एवी चीजना उपर, दान देवा लायक जे आहार होय, ते मूकी राखे एटले मनमां साधुने आहार नही देवानी तुछ बुद्धियें विचार करे जे, में तो अतिथिसविनागव्रत लीधुं छे, तेथी मारे तो साधुने सर्वे चीजनी निमंत्रणा अवश्य करवी पडशे, अने साधु पण लेवा लायक आहार जोइने लेशे माटे हमणांथीज आ युक्ति करु ने पछी जो हुं निमंत्रणा करीने आग्रह करीश, तो पण ते आहार साधु लेशे नही. एवो तुछबुद्धिये विचार करी आहारने सचित्त चीज उपर धरी राखे पछी साधुने आग्रह करी बोलावे, जूठी नावना नावे, पण साधु, सदोष आहार देखीने ते आहार लीधा विना पाछो फरे, त्यारे ते कुटिल बुद्धिवालो जाणे जे मे साधुने निमत्रणा सर्व चीजनी करी, माटे महारुं व्रत तो अखंम थयुं, अने आहारनो खरच पण न थयो! एवो फेल करे, ते प्रथम अतिचार एवु ते कुबुद्धि कुटिलताथी करे, का तो अज्ञानजडकनावथी करे.

२ बीजो सचित्तपिहिण अतिचार ते दान देवानी चीज सचित्त फल पत्रादिके करी ढाकी राखे ए पण न देवानी बुद्धिथी ढाकी राखे, अथवा अज्ञानताथी ढाकी राखे, ते बीजो अतिचार

३ त्रीजो अन्यव्यपदेश अतिचार. ते आहार नही देवाना निमित्ते ज्यारे साधु आवे, त्यारें महोटो नाव देखाडीने आहारनी चीज, पोताना हाथमा लेइने साधुना मुख आगल धरे त्यारें साधुना आचार प्रमाणे साधु पूछे के ए चीज कोण संबंधी छे? एटले ए चीज कोनी छे? ते सांजली ते दाता हे के कहे स्वामिजी!

ए चीज तमे लीयो. ए अमारी नथी पण अमारा भाइनीछे अ थवा संबंधीनी छे एटले ते अमारीज छे. ते अमारो भाइ पण बहु ज भाविकछे तथा धर्मरुचिछे. तमने आ चीज आपी सांभलीने बहुज खुशी थशे. ए माटे आप लेइयें; कशो खतरो नथी. एवी री तें बहु मान अने आग्रह करे, पण मनमां जाणे छे के आ पार की चीजछे ते साधु लेशे नहीं. माटे बहुज भाव देखाडे पण ते साधु, लीधा विनाज पाछो फरी जाय. त्यारें ते दाता विचारे के में तो मारुं व्रत पण साचव्युं अने कांइ खरच पण न थयुं! एवी कुबुद्धिनो फेलाव करें. तथा कोइ दृष्टिरागी दातार, दृष्टिरागथी देवा नी बुद्धियें बीजानी चीजने पोतानी कहीने आपे, ते पण एमांज आवे. श्रावकें तो शुद्धाहारार्थी साधु आगल याथातथ्य कहेवुं जोइयें, पण कपट न करवुं. ए प्रमाणे त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो समत्सरदान अतिचार. ते गृहस्थने घेर कोइ साधु गोचरी आवे थके कोइ छति चीज जूए, ने ते चीजनो साधुने ख प होय तेथी ते चीजनी याचना करे, त्यारें दातार होय ते तो छ ती चीजनी ना कही शके नहीं ; पण मनमां खीजाइने आपे, ते समत्सरदान कहीयें. अथवा कोइ सामान्य गृहस्थ सारी रीतेंथी परिगल दान आपेछे, तेनी तारीफ सांभलीने सहन करी न शके, तेवारें मनमां ईर्ष्या आणीने कहे के, ए सामान्य गरीब छतां दान सारी रीतें आपीने शुं माराथी पण महोटो थवानो चाह राखे छे ? तो हवे हुं एवुं दान आपुं, के तेवुं दान एनाथी दीधुं जाय नहीं. ए पोतानी मेलें थाकीने बेसी जशे. एवी रीतें पारका गुणनी ईर्ष्या धरीने जे दान आपे, ते पण समत्सरदान कहे वाय. ए चोथो अतिचार.

५ पांचमो कालातिक्रम अतिचार. ते साधुने गोचरीनो वखत थ यो जाणीने साधुनी गवेषणा न करे, अने जाणे के हवे ए साधुने

आहार लेइने पाछा पोताने स्थानके जवानो वखत थयो, साधु पण पोतानो खप जेटलो आहार लइ आव्या होय, बीजा आहारनो खप न होय, त्यारे ते गृहस्थ कुटिल पणाये विचारे के आहार तो साधु लइ आव्याछे. अने हवे आहारनो खप हशे तो थोडो ह शे ! एम विचारी गोचरीथी फरती वखतें साधुने जोवा नीकले. ए वामां कोइ साधु पोताना प्रयोजन मात्र आहार लेइने पोताना स्थानक प्रत्ये जता होय तेमनी कने जइने ते श्रावक महोटी मनु हार करे के हे स्वामिजी ! मारे घेर पधारीये, मारा मनोरथ सफल करीयें, महारी विनति दीलमां धरीये, कृपा करीने मने निस्तारिये, कांइक शुद्ध आहार लेइयें, जेम हुं पण पच्चखाण पालुं. एम वारंवार कहे. एवी तेनी विनति सांभली साधु कहे के हे महानुभाव ! अमा रे तो हवे आहारनो खप नथी. खप माफक तो अमे लाव्या छैये, वधारे आहार अमारे शा कामनो ? एवु कहीने ते साधु आगल चालता थाय, त्यारें फरी ते कुटिल दाता कहे के, हे स्वामिजी ! मा रे साधुने आहार वहोराव्या विना खावानो नियमछे तमे कांइक पण वहोरशो तो हुं खाइश, नहीं वहोरशो तो नहीं खाउं. ते सा भली साधु अंतरायना भयथी एवुं विचारे के एने घेर जइने थोडुं लेइ आवुं, बहु नहीं लउं. एवु विचारी तेने घेर जइने किंचित् मात्र आहार लइने जाय, त्यारें ते गृहस्थ, मनमा विचा रे के मारुं व्रत पण पल्युं अने खरच पण घणो न थयो ! अ थवा साधुने स्थण्डिल भूमि प्रत्ये जता देखीने कुटिलताथी ते श्रा वक, आडो फरीने भाव देखाडीने कहे के हे स्वामीजी ! घेर पधारो, अने शुद्धमान आहारनो अनुग्रह करो. ते सांभली साधु कहे के हे महानुभाव ! हमणा तो अमे आहार पाणी करी चूक्या, हवे निहारभूमि प्रत्ये जइएं छैये त्यारे ते मर्कट वैराग्य बतावे के हुं भाग्यहीन, मने घणा अंतरायनो उदयछे. हुउं घणो वखत थ

इ गयो !! तो पण म्हारो मनोरथ सफल थयो नहीं. साधुने गोचरीनो वखत पण जतो रह्यो. अमारे घेर असूर थइ गइ. ह वे शुं करुं? एवो देखाडवामात्र पश्चात्ताप करतो घेर जाय. ते पण पां चमो अतिचार. अथवा अणदेवाना निमित्तथी पहेलो पोतें जमे अने पछी साधुने बोलावे, तो कालातिक्रम थाय एटले साधु केम आवे? कदापि आवे तो वाकी वधेलो आहार साधुने आपे. सा धुने तो एवा आहारनो पण कशो हर्ष शोक नथी. शरीरने भा डुं आपवामाटे ए आहार पण सारोजछे परंतु दातारनी ए शुद्ध चाल नथी, दान आपीनेज जमवुं, ए चालछे. एम करी पछी पेलो गृहस्थ मनमां विचारे के में दान पण आप्युं अने बहु खरच प ण न थयुं! ए पांचमो अतिचार. ए पांच अतिचार मांहेला प हेला त्रण अने पांचमो, ए मलीने चार अतिचार दंभथी थायछे. अथवा अज्ञानपणायें भोलाभावथी थायछे. अने चोथो अति चार, द्वेषदोषथी थायछे. ए चोथा शिक्षाव्रतनी शैली कही.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे पंडित श्री उद्योतसागरगणिनाकृता द्वाद श अतिथिसंविभागनामक चतुर्थ शिक्षाव्रतकथने भाषा संपूर्णा॥१२

एटले अहीं श्रीसम्यक्त्वमूल बारे व्रतनी विगत संपूर्ण थइ.

हवे समकितमूल बार व्रतधारी श्रावकने एकशो चोवीश अ तिचारनी खबर राखवी, ए सर्वे अतिचार जाणपणामां राखवा, पण आदरवा नहीं. एटला माटे एकशो चोवीश अतिचारनो विचार लखीयें छैयें ॥

तेमां प्रथम समकितना पांच अतिचार, बार व्रतना प्रत्येकना पांच पांच अतिचार करतां शाठ अतिचार थया, अने कर्मा दानना पंदर अतिचार. ए प्रमाणे बधा मलीने एंशी अतिचारनां

स्वरूप तो व्रतनी विगतमा लखी गया ठेयें, वाकी संलेपणाना पा
च तथा ज्ञानाचारना आठ, दर्शनाचारना आठ, चारित्राचारना
आठ, तपाचारना वार, अने वीर्याचारना त्रण ए वधा मली चु
म्मालीश अतिचारठे, तेनुं स्वरूप कहीए ठेएं.

॥ अथ ॥

॥ श्रीसंलेपणाव्रतातिचारस्वरूप प्रारंभः ॥

त्या संलेपणाना वे नेदठे. एक इव्यसंलेपणा, वीजी नावस
लेपणा. तेमां प्रथम इव्यसंलेपणा. ते जे साधु तथा श्रावक
अनशननो मनोरथ करे. त्यारें प्रथम संलेपणातप करे ते तप,
आगमोक्त विधियें करे. ते सलेपणातप त्रण प्रकारनु ठे. उत्कृष्ट,
मध्यम, अने जघन्य. तेमा उत्कृष्ट वार वर्षनुं, मध्यम वार
मासनु, अने जघन्य वार पक्नु. तेमा उत्कृष्ट संलेपणातपवा
लो प्रथम चार वर्ष विचित्र तप करे,पठी फरी चार वर्ष पट् विगय
रहित विचित्र तप करे, पठी वली वे वर्ष एकातरें उपवास करे,
अने पारणे आंविल करे पठी ठ मास नानाविध विकृष्ट तप करे,
ऊपथी उंचु तप करे नहीं अने पारणे आंविल करे. वली ठ म
हीना अतिविकृष्ट तप करे परतु आगमथी उंचुं तप करे नहीं,
पारणे आंबील करे. तेवार पठी वली एक वर्ष निरतर आंबिल
करे ए रीतें वार वर्ष उत्कृष्ट तप पूर्ण थाय.

१ एज रीतें मध्यम तथा जघन्य तप पणठे जेवी वर्षनी सख्या
ठे तेवीज मासनी तथा पक्नी गणतरीजे आ सलेपणातप क
रतां शरीर गतरस, अने धातु सर्व शोषाय. अस्थिचर्मावशेष अ
णशण करवा योग्य शरीर करे, त्यारें तेने इव्यसलेपणा कहीयें.

२ वीजु नावसलेपणा ते अंतरमांथी विषय, कषाय, नोकषा
य, गारव, सज्ञा. इत्यादि अंतरदोषने अति क्षीण करे. एटले प्रन

ल कारणे पण विषय कषायादि उद्दीपन न थाय, विकार पामे न हीं, एटले मंदोदय करे. आपणी चेतना समतामग्न रहे. ते नाव संलेषणा कहियें.

पछी गुरुपासें आवे त्यारें ते गुरु, तेनी परीक्षा करे अने जुए जे, एने बाह्य अने अन्यंतरए बन्नेनी संलेषणा थइ के एकली बाह्यनी ज संलेषणा थइ! एवी परीक्षा करवा सारु ते समयें गुरु कोइक रीतनुं वचन बोले, जे वचन सांनलीनें अज्ञानथी तरत कपायोदय थाय. तेवारें जे साधुने अंतरनी अने बाह्यनी बन्ने संलेषणा थइ, होय ते साधु तो गुरुनां वचन सांनलीने नम्र थइने बोले के, श्री गुरुस्वामीजीनी करुणायें करी शुं न थाय? आपनी कृपायें करी व्यवहार रीतियें तो संलेषणा करी, परंतु तत्वार्थनी वातनुं रहस्य तो आप जाणो. एवी रीतें मार्दव कोमल वचन सांनलीने गुरु जाणे. जे ए साधुने तो बन्ने संलेषणा थइछे. त्यारें अणशण करवानी आज्ञा आपे. आगलथी अणशणनी क्रिया करावे.

तथा कोइ अयोग्य साधुयें पण संलेषणातप कर्युंछे, त्यारें ते साधु संलेषणातप पूरुं करीने गुरुपासें आवीने अणशण करवानी आज्ञा मागे, त्यारें ते गुरु, पूर्वोक्त रीतें विषम वचन कहे. त्यारें ते केवल द्रव्य संलेषणावंतछे, माटें ते गुरुनुं वचन सांनलीने तेने कषाय उद्दीपन थाय. त्यारें ते विकल्प करे ने कहे के जूउ! आवुं शुष्क लुष्क शरीर थयुंछे ते तो जोता नथी, ने वली एवी वक्रोक्तिथी फरी फरी पूछो छो? ए प्रमाणे दीलमां क्रोध उद्दीपन नाव करीने पोतानी एक आंगली तोडीने गुरुना मुख आगल नाखे ने कहेके, जूउ! आवी तो संलेषणा थइछे, फरी केवी चाहो छो? एवां शिष्यनां वचन, विनय, सहु सांनलीने तथा जोइने गुरु माथुं धूणावी कहेवा लाग्या जे हे साधो! तमारे तो एनो पहेलोज दिवसछे. तमे अमारे लेखे तो हजी कांइ कर्युं नथी. जे

दोष टाळवाने माटे तमे तप कर्यु हतु, ते दोष तो जेमनो तेम ज रह्योछे. अज्ञान कष्टथी आ शरीर दुर्बळ तो अनंतवार कर्यु हशे, पण काइ तेथी अर्थ सर्यो नहीं ; आ शरीरने क्षीण पाडवा थी अमे तो नही वखाणीयें अंतरंग शीतता प्रगट थइ नही; अने कषायादिक अग्नि तो उपशात न थयो. माटे नाव संलेषणा विना कोइ आराधक थइने मुक्ति पामे नहीं, ते माटे तमने अणशण नी योग्यता नथी. जो मुक्तिने इछो, तो कषाय,नोकषाय, पाच इंद्रियोना त्रेवीश विषयो. गारव, इत्यादि महा दोषोने मटाडो तो तमारो मोक्षनो मनोरथ सिद्ध थाय, एवी शुद्धि करो, एवी परीक्षा करे ए संलेषणातप ते मुख्यवृत्तिये पंडितमरणने निमित्तछे ए माटे वेउ संलेषणा करे, ते पाच अतिचारने वर्जे, तो आराधक थाय, तेने समाधिसहित पंडितमरण कहीये ते पांच अतिचारना नाम लखेछे

१ प्रथम आलोगासंसप्पउगे अतिचार. ते सलेषणादि धर्म भवावें फरी आर्यदेश, आर्यकुले उत्तम मनुष्यपणु पामवानी वाहना राखे, ते पहेलो अतिचार.

२ वीजो परलोगासंसप्पउगे अतिचार. ते अणशणी पुरुष. परलोके परभवें देवेंद्रादिक पदवीने इछे. ते वीजो अतिचार.

३ त्रीजो जीवियाससप्पउगे अतिचार. ते अणशण लीधे व हुविध सत्कार, सन्मान, स्तवनादिक साभळीने घणा लोकोना आगमन वदनानो महोटो उत्सव देखीने मनमा जाणे जे वे दिव स वधारे जीवीये तो सारुं. एवो विकल्प उठे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो मरणाससप्पउगे अतिचार. ते अणशण कीधे थ के क्षुधादि परीसहनी पीडायें पीड्यो थको मनमां विचारे जे, ह मे मरण वेहेलु थाय तो सारुं, कारण आ पीडा सहन करी ज

ती नथी. माटे पीडाथी वहेला पार उतरीयें! एवो विकल्प उठे, ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो विसयासंसप्पउंगे अतिचार. ते अणशण करीने अणशणनुं फल, काम जोगनी प्राप्ति इछे ; ते पांचमो अतिचार.

ए संलेषणाना पांचे अतिचार व्यवहार प्रसिद्धथी तो अणशण निष्ठाएं कहेवायछे. परंतु वस्तुगतें तो सर्वव्रतमां लागेछे.

१ जेम सर्वव्रत, सर्वनियम, दान, पूजा, विनय, वैयावच्च, अने प्रत्याख्यानादि क्रिया करीने आ लोकना सुखनी इछा न राखवी. तेम छतां जो राखे, तो पहेलो अतिचार लागे.

२ तथा परलोकें देवगत्यादिकनी इछा न राखवी, तेम छतां जो राखे, तो बीजो अतिचार लागे.

३ तथा आवो मनुष्यावतार पाम्या छैयें, धर्मनियमकरणी, जीवदया, जिनपूजा महोत्सव प्रमुख करीयें छैएं ; शास्त्र सांजलीएं छैयें, ए सारुंछे; ए माटे घणुं जीवीएं तो सारुं. रखे आयुष्यस्थिति पासें आवी जाय ? एहवो विकल्प न करे, अने करे, तो त्रीजो अतिचार.

४ वली धर्म करतां कोइ पूर्वसंचित पापकर्मना उदय थवाथी घणी अशाता पामवा लाग्यो. त्यारें मरणने इछे जे मरण पामीएं तो आ दुःखथी छूटीएं. पण ते एवुं न विचारे जे मरण पामवाथी कांइ कर्म छूटे नहीं. मुवाथकी पण बीजा जन्ममां अजुक्त कर्म आगलने आगल तैय्यारछे. "कृतकर्मक्षयोनास्ति" एम जाणवुं, उलटी मरणनी इछा राखवाथकी अशुजकर्मरसपोषण थायछे. कारण के नवा अशुज विकल्पें अशुजबंध थाय ; ए माटे साधक, मरणनी इछा न राखे. जो राखे, तो चोथो अतिचार लागे.

५ तथा धर्मफल तो निर्जराछे. ते निर्जरा साध्य धरीने जे जे धर्म करे, ते मार्गी जीव आराधक कहेवाय. त्यहां कामजोगनुं फल साध्य राखीने कर्म करे, त्यारें पांचमो अतिचार लागे. एम सर्व व्रतमां

संलेषणाना पांचे अतिचार लागे. ए माटे उपयोग संभालीने पांचे अतिचार त्यागवाथी साधकता समरे. इति संलेषणा पंच व्रतातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री ज्ञानाचारस्य अष्टातिचारस्वरूप प्रारंभः ॥

१ प्रथम अकालाध्ययन अतिचार. ते कालविना सूत्रसिद्धांत जणे गणे. त्यां अतिचार लागे, ते कालवेला कहेछे. प्रथम सवारमां एक घडी रात्रीनी अने एक घडी प्रातःकाल अरुणोदय थया पछीनी. ए बे घडी प्रभातनी कालवेला कहीयें. तथा एवीज रीतें बे घडी मध्यान्ह कालनी, तथा एज रीतें बे घडी संध्यानी, तथा बे घडी मध्यरात्रीनी ए चारेने कालवेला कहीएं. ए कालवेलामां नवुं भणवुं, गणवुं, सांभलवुं, ए कांइ पण करवुं नहीं. ए कालवखतें ए काळनी क्रिया जे पडिक्कमणादिकछे ते सुखें करे; पण बीजुं नवुं भणे गणे नहीं. ए कालनी वखतें मनोगत जप, ध्यान सुखें करे, पण वचनोच्चार करीने भणे नहीं. ए अतिचार, साधु अने श्रावक बन्नेने साचववो जो भणे, तो साधु अने श्रावक बन्नेने अतिचार लागे तथा साधुने कालिक सिद्धांत पहेले पहोर अथवा चोथा पहोर शिवाय शेष कालमां सिद्धांतसूत्र भणाय नहीं. रात्रिये पण एमज जाणवुं. वली बीजा, त्रीजा पोहोरमां अर्थचिंतवन करे तथा अकालें मेघवृष्टि थाय तथा त्रण चोमासाना मद्दा पडवाना अढी दिवस असज्झाइ, ते आवी रीतें के अर्द्धी चउदश, पूर्णिमा अने पडवो ए अढी दिवस तथा आशो अने चैत्र शुद पांचमथी ते वदि पडवा सुधी असज्झाइ. तथा बार गाउमां महासंग्राम थतो होय, त्यहां सुधी

असज्झाइ. तथा राजा, छत्रपति, महोटो देशाधिपति मरण पाम्यो होय तेना तखत उपर ज्यां सुधी नवो राजा न बेसे, त्यां सुधी ते देश मां असज्झाइ. इत्यादिक अनेक सिद्धांतमां असज्झाइकाल कह्योछे. तथा म्लेछना तहेवारकालें एटले बकरीइदें महाहिंसा थायछे. मा टे ते दिवसें केटलोएक कालरात्री प्रमुख, महा हिंसाना दिवस मां पण सिद्धांत जणवुं नहीं. तथा सो हाथमां पंचेंद्रिय जीवनुं क लेवर ज्यां सुधी पड्युं होय, त्यां सुधी सिद्धांत जे जिनप्रणीत सूत्र ते कांइ जणाय गणाय नहीं. ए क्षेत्रथी असज्झाइ कहीएं. इत्यादि असज्झाइना प्रकार आगममां घणा कह्याछे; तेमां सिद्धांत जण वुं तथा सांजलवुं पण नहीं. अने जो जणे तथा सांजले, तो ज्ञाननो कालातिचार लागे.

२ बीजो विनयहीनातिचार. ते गुरु, पुस्तक, तथा ज्ञान नां उपकरण जें पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, सांपडा, सांपडी, द सतरी, वही, नोकरवाली तथा अढार जातिनी लीपिना अक्षर स हित कागल प्रमुख उपकरणने पग लगाडे, पगथी दाबे, थूंक ल गाडे, थूंकथी अक्षर जूंसे, एठे हाथे स्पर्श करे, अक्षर उपर रेती नाखे, उपर बेसे, सूवे तथा फाडी नाखे, एठ मुखें एनो उच्चार क रे, कोइ द्रव्यना उपर अक्षर होय, तेने पासें राख्या थका त्यां व डीनीति, लघुनीति करे, लघुनीति, वडीनीति करतां उच्चार करे, अने स्नान, मैथुन, पूजा करतां बोले, पुस्तकने बाले, जलमां बू माडे, वेचे. इत्यादिक आशातना करे, अने गुरुनी तेत्रीश आशा तना न टालें, ते विनयहीनातिचार.

३ त्रीजो अबहुमानातिचार. ते गुरु तथा पुस्तकादिकनुं घणुं मान न करें, तेमनी अदब राखे नहीं. बहु मान ते जेम दरिद्री पुरुषने धनप्राप्ति थयाथी जेवो अति आनंद थाय अथवा कोइ सा मान्य पुरुषने घेर राजा पोतें चालीने आवे त्यारें ते पुरुष केवो

आनंद पामे? अने आश्चर्य पामे? तेम गुरु पुस्तकादिकनी नेट करवा वखतें तेथी पण विशेष आनंद पामे ते न करे तथा ज्ञानद्रव्य इंद्रिय सुखमां वापरे. अथवा कोइ द्रव्य खातो होय तेने जाणीने देखीने छति शक्तियें उवेखे नही तथा छति शक्तियें शिक्षा न आपे, कोइ उपर उग्रता करें नहीं , मनमां एवुं जाणे के आपणने शुं बे ? जे जेवुं करशे, ते तेवुं पामशे एवी रीतें गइ गुजरी करी जाय. तथा ज्ञानी पुरुष उपर द्वेष राखे, ज्ञानीनो अवर्णवाद बोले, ज्ञान नणनारने अंतराय करे, छति शक्तिएं ज्ञानने नणवा, गणवा, तथा सांनलवावालानी सहायता करे नही. ज्ञानना गंनीरनावमां असद्दहणा करे, शास्त्रोना अटपटा अक्षरनी मजाक करे, हसे, कुयुक्ति लगाडे, गुरु तथा सिद्धांतनी प्रत्यनीकता करे, अने मतिज्ञानादि पांच ज्ञाननी असद्दहणा करे. इत्यादि अतिचार लगावे, ते त्रीजो अबहुमानातिचार

४ चोथो उपधानहीनातिचार. ते श्रावक, उपधान वह्या विना षडावश्यकादि क्रिया करे, तथा साधु, योगनी तपक्रिया कीधा विना सिद्धांत नणे, नणावे, तथा संनलावे, त्यारें तेने चोथो उपधानहीनातिचार लागे

५ पाचमो गुरुनिन्हवण अतिचार ते कोइ अल्पश्रुत, अल्प विख्यात एवा साधु अथवा श्रावकनी पासे नण्यो होय, मूल उपकार तो तेनो होय, पठी नणवा वालो पोताना सारा क्षयोपशम उद्यमथी शास्त्रमा घणो हुशीआर, शाणो अने चतुर थयो , त्यारे कोइ नद्रक लोको, तेनी निपुणता, अने चमत्कारिक ज्ञान जोइने ते चमत्कार पामी बहुमान करी पूछे के, अहो स्वामिजी! तमे श्रुतमा सावधान छो, एवी श्रुतज्ञाननी चतुराइ, संपूर्णविद्या, कया गुरुनी पासे नण्या छो ? जो ते गुरु हाल अहीं विद्यमान होय, तो तेना अमे पण दर्शन करिये. हवे ते गुरु तो सुधो

गरीब, पण ज्ञानगुणसंयुक्त होय अने पोतें तो म्होटो भेगा जो होय अथवा श्रावक होय तो म्होटो तालेवर होय, पोषा क प्रमुख सारो होय, चाकर प्रमुख घणा होय, तेवारें ते उद्धता दोषथी मनमां विचारे के म्हारो विद्यागुरु तो घणो प्रख्यात न थी, माटे एनुं नाम लइश, तो म्हारी म्होटाइ थशे नहीं माटे ते वर्त्तमान कालमां कोइ म्होटो पंमित वृद्ध होय, जेनुं यश प्र ख्यात होय, तेनुं नाम लीये. एम करी पोताना मूल गुरुने छुपावे, ते गुरुलोपी, महापापीने पांचमो गुरुनिन्हवण अतिचार लागे.

६ छठ्ठो कूटसूत्रातिचार. ते सूत्रना अक्षर खोटा उच्चारे, ह्रस्व दीर्घनी खबर न राखे, अक्षर, मात्राहीन अथवा अधिक करीने जणे, छंदोभंग करी जणे, पद, संपदासहित न बोले, ते सूत्रकूटातिचार.

७ सातमो अर्थकूटातिचार. ते पोताना अज्ञानदोषथी अ थवा कोइ कुमति कदाग्रहना उदयथी अशुद्ध अर्थ करे, विपरी त प्ररुपे, ते सातमो अर्थकूटातिचार.

८ आठमो उभयकूटातिचार. ते सूत्र अने अर्थ ए बन्ने अ शुद्ध जणे, प्ररूपे, ते आठमो उभयकूटातिचार. इति ज्ञानाचार स्य अष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीदर्शनाचारस्य अष्टातिचारस्वरूप प्रारंभः ॥

१ प्रथम शंकातिचार. ते जे जिनागमना सूक्ष्म अतींद्रिय गंभीरभाव सांभलीने पोताना मंदक्षयोपशमना योगथी तथा मिथ्यात्वना प्रदेशोदयथी शंका धरें, जे ए वात केम घटशे? ए केम हशे? कांइ मनमां बेसती नथी. शुं जाणीयें जे केवी रीतेंछे? ए ते साचुं छे के जूठुंछे? एवो विकल्प उठे, ते प्रथम अतिचार.

अथवा जेने मंदक्षयोपशमछे, पण मिथ्यात्वना बहुप्रदेशोदय नथी समकितनुं स्थान उंचुंछे. ते पण गंभीरभाव सांभळतां बुद्धिमांतो एकाएक आवे नहीं. पण ते समकेती एम विचारे जे ए वात, मारी बुद्धिमां नथी आवती, ते मारा आत्मदोषथी मने आवरणो दय घणांछे; पण ए वात साचीछे, कारणके जे माटें ए सर्वजिन भाषितछे. अने श्री जिनेश्वरजी तो असत्यभाषी नथी. असत्य भाषणमां त्रणे दोष जे राग, द्वेष, अने अज्ञान, ते तो जेमना नाश पाम्याछे, अने ते दोषना सहचारी जे हास्य भयादिक ते पण जेमना नाश पाम्याछे, तो तेवा वीतराग परमेश्वर कोण कारणे जू ठुं बोले ? विना उद्देश कोइ कार्य प्रवर्त्ति छेज नही अने वीतराग कृतकृत्य ने तो कोइ कार्यनो उद्देश रह्यो नथी, ए माटें जे केवलि भाषित छे, ते सर्व सत्यजछे. एमां कांइ संदेह नथी. एवी निश्चल बुद्धि थइ, तेने समकितनी निर्मलता वधती जाय. अने जेने एवी निश्चल बुद्धि न होय, तेने अतिचारना सबबथी समकित, मली न थइ जाय ते प्रथमातिचार.

२ बीजो आकांक्षातिचार. ते जे दान, शील, तप प्रमुख ध र्मकरणी करीने पुण्यरूपी फलनी इच्छा राखे, अति आतुरता क रे, अथवा आकाङ्क्षा ते परमताभिलाष अन्यदर्शनीना धर्मनो उन्न तिभाव देखी, ते धर्मनी इच्छा राखे जे, आ पण धर्म सारोछे, आचरवा लायकछे, जुओ जुओ !! एमां पण केवा केवा प्राणीछे ? औदार्य, धैर्य, गांभीर्य, पूर्णभक्ति, परोपकार, अने निस्पृहता के वी धारण करेछे ? एवा धर्मने केम निंदीएं ? एवो विकल्प, ते बी जो आकांक्षातिचार

३ त्रीजो वितिगिच्छातिचार ते धर्म करणीना फलनो सं देह धरे अहींयां पोतानां पूर्वकृत पापना उदयथी कोइ उदयिक दुःख पामे,त्यारे शिथिल परिणामना योगथी अशुद्ध विकल्प उठे,

र्यीय प्रकाश करीने कहे नहीं. अथवा गुणवंतना गुण जाणे तो पण तारीफ करीने प्रकाशे नहीं. पांच लोकमां गुणीना गुण प्रस्ता वती वखतें तेना गुण प्रगट नांखे नहीं. प्रकाशे नहीं; मोढेथी कहे नहीं तथा रागद्वेषादिक, कर्मउपाधि संयोगिक भाव, सर्व दुःखनुं मूलछे. एम विशदरीतें प्रकाश करीने कहे नहीं, ते पांचमो अतिचारछे.

६ छट्टो अस्थिरीकरण अतिचार. ते जे आपणने कोइ पाप कर्मनो उदय थयो; त्यारें आपदा, रोग, शोक, आजीविका, दु र्लभता, कूडां आल, तेवी दिनपर दिन दुःखनी चढती जोइने कोइ मिथ्यात्वना प्रदेश उदयबलें करी जैनमार्गथी परिणाम खसता जा य. आचारमां शिथिल थाय, ते पोतेंज पोताना शास्त्र परिचयथी जाणे जे मारा परिणाम धर्ममार्गथी शिथिल थयाछे, पूर्वथी मा री श्रद्धा पण मलीन रहेछे. एवुं जाणे तो पण तेनी दृढतानां कारण जे सद्गुरुसेवन, शास्त्रश्रवण, दृढवृत्ति, महापुरुषचरित्रस्म रण, देवदर्शन, उत्सवादिगमन, कर्मग्रंथादिक अथवा अध्या त्मशास्त्रपठन, इत्यादि दृढतानां कारणछे, ते न सेवे; अने जाणतां छतां पण गुरुसंसर्ग, शास्त्रपठनादि उद्यम करे नहीं. अथवा कोइ अधर्मरुचि प्राणीथी परचो करे, अथवा कोइ बीजो धर्मरुचि जीव होय, तेने धर्मथी पडतो देखे, त्यारें कहे के फलाणो पुरुष, आगल धर्ममार्गमां घणोज दृढ थयो हतो; हवे तो दिव सें दिवसें एना शिथिलताना परिणाम नजरें वधारे आवेछे. एवुं पोतें जाणे अने पोतामां एवी शक्ति पणछे, के ते धर्म शिथि लने बहुविध हेतुयुक्ति देखाडीने धर्ममार्गमां स्थिर करे अने पड वा न दीए. एवी शक्ति छतां पण तेने उपकार बुद्धिएं करी शुद्धो पदेशें दुर्गतिपतनादि विपाकदर्शन. इत्यादि स्थिरीकरण न करे, अने मनमां जाणे जे आपणुं शुं बगडेछे? चेतना तो एनी बगडे

माटे जे करशे, ते पामशे. एवी उदासी करीने छति शक्तियें धर्मथी मगतो होय, तेने धर्ममार्गमां स्थिर न करे, तो तेने अ स्थिरीकरण छठो अतिचार लागे.

७ सातमो अवात्सल्यातिचार ते जे जे साधर्मी प्राणी, जेनी एक श्रद्धाछे, अने शास्त्रश्रवण, देवदर्शन, सामायक, पोसह प्रमुख करवुं, इत्यादिक धर्मकरणी, साथेंज करता होय, जेनी साथे धर्मनो महोटो संबंधछे अने जे एक गुरुना उपदेशित प्रमुख छे, तेने साधर्मी कहीये. ते साधर्मीनी छति शक्तियें नक्ति न करे, तेने कोइ रीतनुं संकट आवी पडयुं होय अने पोतानामां ते संकट टालवानी शक्ति छे, तो पण तेनो उद्धार न करे, ते संकटने मटाडे नहीं, ते साधर्मी उपर घणुं हेत न धरे, तेने जोइने खुशी न थाय संघमध्यें कोइ गुणवान् पुरुषनी शोना, यश, प्रतिष्ठा सानलीने अप्रीति उपजे तथा साधर्मीकनो समुदाय मले, त्यां कषाय करीने मांहो मांहे विरोध पेदा करावे साधर्मी साथें शत्रुतानी रीति राखे, तेनी उपर अशुन परिणाम चिंतवे, अथवा सर्वजीव सत्तामा सरखाछे, एकज जाति, समानगुणपर्यायी, अने तेउनुं वस्तुगतें एकज स्वरूपछे, ए माटे समानसाधर्मी थया, एवुं शास्त्रना उपकारथी जाण्युं, तो पण तेउनी रक्षा न करे, ते अवात्सल्यदोषछे अथवा स्वनिष्ठामां अंतर्गतमां पोताना ज्ञान दर्शनादि गुणपर्याय छे, ते निश्चें साधर्मी छे, एवुं गुरुकृपाथी जाणेछे तो पण तेने ज्ञान, ध्यान, संवर अने समता रमणें करी पोषे नहीं, अथवा जेम वार तहेवारे पोताना पाप कुटुंबने आदरथी अने नक्तिथी बोलावी विविध उपचारो करी हर्ष करी पोषेछे, तेम कोइ वार्षिक पर्वादि धर्मगत पर्व आवे थके, स्वामिवात्सल्यादिक नक्ति, छति शक्तिये करे नहीं, ते पण अवात्सल्यदोषरूप अतिचार छे अथवा देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, गुरुद्रव्य, अने

साधारणद्रव्य वावरे. कोइ देवद्रव्य नक्षण करतो होय, तेने छति शक्तियें शिक्षा न आपे. मनमां विचारे के आपणने शुंछे ? जे खाशे, ते डुर्गतिनो देखवा वालो थशे, संघमां शुं आपणे एक लाज छैयें !! बीजो तो कोइ बोलतो नथी, त्यारें हुं एकलो शा माटे कोइ नाइ कुटुंबीने मातुं मनावुं ? एवुं विचारे तथा छति श क्तियें देहेरा प्रमुख धर्मस्थानकना द्रव्यनी खबर राखे नहीं, अ थवा खंमित, फंमित, मेली, अशुद्ध, अपवित्र धोतीथी पूजा करे अ थवा पूजा करतां बीजाने एवीज रीतें, एवे वेषें जोइने तेने कांइ कहे नहीं, अथवा पूजा करतां मुखकोश बांधे नहीं, तेत्रीश आ शातना टालीने पूजा करे नहीं, अथवा पूजा करतां बिंबने हा थमांथी पाडी नाखे, बिंबने कलश प्रमुखनो धक्को लगाडे, देहेरा नी दश आशातना न साचवे, सामायक तथा पोसहमां थापना चार्यनी पडिलेहणा करतां हाथमांथी नूमि उपर गिरावे अने शुद्ध माननक्ति न राखे. ए सर्व सातमो अवात्सल्यातिचार जाणवो.

८ आठमो अप्रनावनातिचार. ते जे, छति शक्तियें धर्मनी उन्न तिनां जे जे कारणोछे; जेवां के स्नात्रपूजा, सत्तरप्रकारीपूजा, एक शो अष्टोत्तरीपूजा अने एकवीशप्रकारीपूजा ते मोहोटा हर्षथी क रावती, तथा थोडी शक्ति होय तो व्यवहारें अष्टप्रकारनी पूजा, प्र नावना, संघनक्ति, रथयात्रा, तीर्थयात्रा, संघसहित जवुं, महोत्सव, बिंबप्रतिष्ठा करावती, तीर्थोद्धार करावता, जीर्णोद्धार पोताथी क रावतां, अथवा अन्यने उपदेशप्ररूपक थइने नवां प्रासाद बीजाकने करावतां, अने सद्गुरु, आचार्य, नट्टारक प्रमुख आवे थके तेमने संपत्तियुक्त अवारित दान आपे. छति शक्तियें उंछुं न करे. सोना ना तथा रत्नना लुंछनां करतो थको तेने नगरप्रवेश करावे, ते समयें उदारचित्त वालो थइ जेवुं पोतानुं सामर्थ्य होय, ते प्रमाणे चौटा प्र मुखमां शोना करावे. प्रतोली प्रमुख विविध प्रकारें विनूषा बना

वे, उदारताथी दीनने दान आपे. ए सर्वे शासननी उन्नतिनां कारण छे. जेकारण माटे एवा उत्सव, महोत्सव, बहुमान अने अ वारित दाननी उदारता विगेरेने देखवाथी सर्व कोइ मिथ्यात्वी जीव, धर्मनी अनुमोदना करीने पुण्योपार्जन करे. सुलनबोधी पण थइ जाय, अने आपणा पण एवे कारणे करी परिणाम नि र्मल थाय. कोइ लेश्या एवी आवी जाय के, तेवी लेश्या वळी उ मरमां पण आवे नहीं एवो परिणाम समरी जाय शासननी प्र नावनाथी घणा जीवोने उपकार थाय , एवुं जाणतां छतां अने छति शक्तियें पण प्रनावना न करे, अथवा निश्चे प्रनावना अत गैतमां ज्यां ज्यां पुष्टनिमित्त जे देवगुरुदर्शन, शास्त्रश्रवण, साधु सेवन, जेनाथी आत्माना गुणनी वृद्धि थाय, घणी निर्जरा थाय, आत्मामां ज्ञानप्रकाश थाय. एवुं सर्व पोतें जाणेछे, पण ते प्रमा णे करे नहीं, ते अप्रनावनादोपातिचार आठमो जाणवो ॥ इति दर्शनाचारस्य अष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री चारित्राचारस्य अष्टातिचारस्वरूप प्रारंन. ॥

१ प्रथम अनुपयुक्तगमनातिचार. ते मार्गे चालतां मन, व चन, काया, एकत्र उपयोगीरूप प्रणिधानयुक्त गमन थाय, त्या साधु धूसर प्रमाण नूमिये दृष्टि पडिलेहणा करतो जाय एटले ईर्यासमितियुक्त गमन थाय त्या साधुने सदा काल होय अने श्रावकने सामायक पोसह कीधे होय अने ज्यारें ते अनुपयोगी योग चपलतासहित वर्त्ते, तोते प्रथम अनुपयुक्तगमनातिचार जाणवो

२ बीजो अनुपयुक्तनाषी अतिचार. ते जे साधु सदा सर्वका ल, अने श्रावक सामायक पोसहमां वेगो थको वे नाषा बोले.

त्यां नाषाना चार नेदछे. प्रथम सत्यनाषा. ते जेवुं होय, तेवुंज कहे, पण कम वेश न कहे, बीजी असत्यनाषा, ते कांइ कहेवानुं होय तेने बदले कांइ कहे. त्रीजी मिश्रनाषा. ते कांइक जूतुं अने कांइक साचुं, जेम के आजे नगरमां दशनो जन्म थयो. एवुं कहे, ते मिश्रनाषा. चोथी अनुनयनाषा. ते साचुं पण नहीं अने जूतुं पण नहीं, पण जे लोकव्यवहारें बोलवुं. ते जेम गाम आव्युं रात्री पडी, वली कोइनुं नाम कहेवुं. जेम के जगत्पाल, लक्ष्मीधर, देवदत्त, अमर इत्यादि व्यवहारनाषा चोथी. त्यां साधु सदाकाल, अने श्रावक सामायक पोसहमां पहेली अने चोथी ए बन्ने नाषा बोले; ते पण प्रणिधानयुक्त उपयोगी अने जयणायुक्त बोले. ते अहींयां विना उपयोगें अशुद्ध बोले, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो अनुपयुक्तएषणातिचार. ते जे पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त बेंतालीश दोष टालीने निक्षा ले. पांच दोष टालीने आहार करे, ते चारित्राचारछे; पण उपयोग विना एथकी विपरीत पणे आहार ले, ते त्रीजो अतिचार. अहींयां एषणाशुद्धिमां बीजुं पण वस्त्र, पात्र, शय्या, संथारक, वसती प्रमुख जे जे चीज चारित्रने उपकारी होय, ते चीज जो निर्दोष ले, तो आचार जाणवो अने जो सदोष ले, तो अतिचार लागे. ए पण अतिचार साधुने सर्वदा, अने गृहस्थने पोसह सामायक लीधे लागे. एम पोतानी दशा माफक पाले, तेमां जो अनुपयुक्त प्रवर्त्ते, तो ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो अनुपयुक्तआदानमोचनातिचार. ते जे साधु सदाकाल, अने श्रावक सामायक पोसहमां जे जे चीज ले, तथा मूके, ते चीज पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त उपयोगी थको दृष्टिपडिलेहणा पूर्वक ले, फरी एवी रीतेंज मूके, एवो आचारछे. अने जे अनुपयुक्त अवधिथी आदान मोचन करे, ते चोथो अतिचार कहीयें.

५ पांचमो अनुपयुक्तपरिष्ठापन अतिचार. ते जे साधु सर्व

काल, अने श्रावक सामायक पोसहमां लघुनीति, वडीनीति, मे ल, श्लेष्मादि जे परठवणा लायक वस्तु, ते शुद्ध निर्जीव भूमि ना स्थानकमा दृष्टिपडिलेहणापूर्वक, पुजन प्रमार्जन करीने परठवे, एवो आचारछे. तेथी विपरीत, प्रणिधान रहित अनुपयोगी थको परठवे, तो पाचमो अतिचार लागे. अहीया पहेली बे स मिति, पोसह सामायकमां तो अवश्य साचववी. कदापि न सच वाय, तो पण ए बेनो जैनधर्मीने उपयोग राखवो कारण ए ध र्मनो मूलमार्गछे.

६ छठो अनुपयुक्तमनप्रवर्त्तनातिचार. ते जे साधु सर्व काले अने श्रावक सामायकादिक धर्मकरणीना अवसरे पूर्वोक्त प्रणि धानपूर्वक सर्व कुविकल्प छोडीने सूत्रार्थ चितवन प्रमुख आलं बनयुक्त उपयोगी थको मनने स्थिर राखे, ते मनगुप्ति आचार, अने एनाथी विपरीत आर्त्तध्यानादिके करी कुविकल्पमां मन दो डावे, ते छठो अतिचार

७ सातमो अनुपयुक्तअकारणवचनातिचार. तेजे साधु सर्व काल अने श्रावक सामायक पोसहमा प्रायें मौनज रहे. अने बोले, तो पण उपयोगी, पूर्वोक्तप्रणिधानयुक्त अवश्य कारण योगें जिनाज्ञायुक्त सर्व जीवने हितकारक, एवु शुद्ध भागे सांभल वामा मधुर एवु वचन कहे, ते वचनगुप्ति आचारछे अने एनाथी विपरीत निष्कारणे जेवु तेवु बोले, ते सातमो अतिचार

८ आठमो अनुपयुक्तनिष्कारणकाययोगचपलतातिचार ते जे साधु सर्वकाल अने श्रावक पोसह सामायकमा इंद्रिउने गुप्त क री राखे. अने अवश्य कारण योगे उपयोगी थको प्रणिधान यु क्त आज्ञापूर्वक जयणाथी हस्त पादादिक आकुचन प्रसारण क रे, अथवा उठे, बेसे, ते कायगुप्ति आचार. पण निष्कारण, अनुपयुक्त, अने अविधिपूर्वक जे हस्त पादादिक योगचपल

ता करे, ते आठमो अतिचार जाणवो. ए अतिचार जाणवामां राखे, पण आदरे नहीं. अहिंयां गुप्तिधर्म ते उत्सर्गधर्म छे अने समिति ईर्यादिक जे पांचेछे, ते अपवादधर्मछे. ए आठे धर्मनी माता कहेवाय, जे जे धर्म करणीछे, ते ए आठें करी युक्तछे, ते आचारछे. अने ए विना जे करे, ते अतिचारजाणवो ॥ इति चारित्राचारस्य अष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री तपाचारस्य द्वादशातिचार स्वरूप प्रारंभः ॥

त्यां तपनुं मूल लक्षण एछे जे, श्री जिनेश्वरें बार प्रकारना तपनी प्ररूपणा कीधी, ते तप, परम निर्जरानुं कारणछे. पण इच्छा निरोध करीने मनमां ग्लानपणुं नहीं, मन हारे नहीं, अग्लानी आतुरता रहित, विषयानुष्ठान, गरलानुष्ठान रहित, अन्योन्यानुष्ठानरहित एटले आ लोकने विषे आजीविका हेतुयें अथवा माननें अर्थें, तथा पूजाने अर्थें, अने परलोकें देवादिक पदवीना हेतुयें ए त्रण अनुष्ठान छे, इत्यादिक आशयरहित, क्रोधमानादि कषायरहित, उमंगसहित, समतासहित, अने चित्तनी प्रसन्नतायें करी, केवल कर्मक्षयना निमित्तें करे, तेने शुद्धतप कहीयें. ते तपना बार भेद छे, माटे बार अतिचार लागे, ते लखेछे.

१ प्रथम अणशणतप. ते जे जे उपवासादिक विविध प्रकारनाछे, ते करीने पछी पूर्वे भोगवेला आहारने याद करे, भक्तकथा करे, आगला दिवसें पारणानी चिंता करे के आवी रीतें रसोइ बनावीने खाइश. एवो मनमां विकल्प करे. आ संसारमां आहार संज्ञादि दोषछे, ते मोहोटुं लांछनछे; अने सर्व आरंभनुं मूल छे. "छए कायनो थाय ज्यारें उंटो, त्यारें बने एक रोटो" एवो अनादि दोष जिनवचन सांभलवाथी जाण्यो पण ते दोष सर्व प्रका

रें परित्यागवाने तो लाचारछे, त्यारें मोक्षार्थी जीव, पोतानी श
क्ति मुजब योग्य परिमित काल कवलाहार त्रिविध योगें त्यागरू
प पच्चखाण करे, एटले धारणापरिमाणकाल सुधी छकायने
अनयदान थयुं. अने रसनेंद्रियादिक मार्गी थया. त्यारें सकल
लब्धि प्रमुख आत्मिक संपत्तिनुं बीज रोप्युं. एम सकल मनःकाम
ना पूर्ण करवाने समर्थ एवुं तप करीने आगला पाछला दिवसनी
चिंता, अनुमोदना करे, ते तपफल व्यर्थ करे अथवा मनग्लान
करे जे, उपवास महोटो कठिन थयो? आ शुं कर्युं? एवो पश्चा
त्ताप करे ए सर्व, तपना अतिचारछे॥ इति अणशण तपातिचार.

२ बीजो ऊणोदरीतप अतिचार. ते जे पुरुषनो पूर्ण आहार
बत्रीश कवलप्रमाण, अने स्त्रीनो अठावीश कवल प्रमाण आ
हार. ए नीरोगी शुद्धकायानुं लक्षणछे. एमां जो कमी जास्ती आ
हार थाय, ते प्राये रोग औषधादिकना प्रनावथी थइ जाय तो
लाचारीछे, पण प्रमाण तो बत्रीश कवलनुं छे. अने एक कव
लनुं प्रमाण मुरगीनुं इंडु अथवा जेवडुं आंवलुं तेवडुं, अथवा आप
णा मोढानी फाडमां जेवडो कवल सुखे आवे एटलो ग्रास जेवो
तेने पणकवलप्रमाण कहीये. अथवा आपणो जेटलो आहार हो
य, तेना बत्रीश नाग करीएं तेमांना एक नागने पण कवल क
हीयें. एवा बत्रीश कवलनो जे आहार करे, ते पूर्णाहारी कहेवा
य. ते पूर्ण आहारमांथी इछारोध करीने क्षुधा छते संतोष धरीने बे
अथवा चार अथवा आठ कोलीया ऊंणा खाय ; तेने ऊणोदरी तप
कहीये त्यां ऊणोदरीतप करीने कवल परिमाणमां महोटा महो
टा कोलीया गणतरीमां राखीने खाय अथवा सरस आहार जे मो
दक प्रमुख चीज घणी चीकणीछे, तेना कोलीया खावामा पण ऊं
ग आवे. कारण तेना थोडा कोलीयामांज तृप्ति थाय. ते थोडा को
लीया गणतरीमां राखे, अथवा विशेष स्वादथी घणुं खाय. एवुं

करीने विचारे जे आहार प्रमाण तो बत्रीश कोलीयानुंछे; अने में तो चोवीश कोलीया खाधा ; माटे मारे पण ऊणोदरी तप थयुं. पण एम न विचारे जे, बत्रीश कोलीयामां मोदक प्रमुख चीकणी वस्तुनी गणतरी नहीं जाणवी. तेम छतां अज्ञानदोषथी समजीनें ते एवो मनमां विकल्प करे, ते ऊणोदरी तप अतिचार.

३ त्रीजुं वृत्तिसंक्षेपतप. ते विविध प्रकारना अभिग्रह धरे, अने श्रावक चौद नियम धरे. अथवा आहारनी चीज होय तेनी द्रव्य द्वारायें संख्या राखे,ते वृत्तिसंक्षेपतप कहीयें. ते तप करीने साधु वार्त्तामां अथवा उपदेश देतां थकां पोताना अभिग्रहनी वात पण गृहस्थना आगल कही दे ; त्यारें ते सांभलीने गृहस्थ जाणे जे अहो !! साधुयें केवा केवा अभिग्रह लीधाछे. तेथी विवेकी अने चतुर श्रावक होय, तें पोतानी बुद्धिथकी अवसर थये थके अभिग्रह पूरे. तथा गृहस्थ द्रव्यपरिमाणादि नियम धरतो होय, ते पोताना घरमां संकेत शिक्षारूप करे. जे तमे तो स्नेहग्रथिल छो तेथी हरेक चीज लावीने भोजन करती वखतें भोजनमां नाखशो ; अने अमें तो वृत्तिसंक्षेप छैयें, तेथी द्रव्य अधिक थइ जाय त्यारें व्रत खंडन थाय. माटे अमने जूदी जूदी चीज आपवी नहीं. अमाराथी एकठी करेली चीज लीधी जाय, जेनुं एक द्रव्य गणुं जाय माटे हलफल करीने विना खबरथी कोइ चीज जूदी आपशो नहीं. एवी शिक्षा कहे त्यारें ते रसोइदार तुरत रहस्य पामी जाय अने पछी पोतानी निपुणताथी लूण, मरचुं, जीरुं, हिंग संयुक्त व्यंजनादिक मीठी चीज प्रमुख आगलथी एकठी मेलवीने राखे अने ते सौ चीज सुस्वाद होय ते पीरसे अने ते चीज आरोगे. मनमां जाणे के, मारुं द्रव्यपरिमाण हुं शुद्ध राखुंछुं. पण पूर्वें एवी संज्ञा करी, तेथी व्रत तो मलिन थयुं. एवो कुविकल्प, ते वृत्तिसंक्षेपतपअतिचार.

४ चोथो रसत्यागतप अतिचार. ते रस जे ठ विगय, ते वि कारना हेतुठे. अने रसगृद्धिना बहु कटु विपाक ठे; एवु जाणीने त्याग कर्यो पठी कोइ कारण विना अने गुरुआज्ञा विना निविआता करी खाय अथवा अन्य द्र्व्यांतरसयोग मेलावी घणी रीतें अग्निसं स्कार करीने तेनी मजा आवे, एवी गुणवान् चीज करी खाय. एटले जिव्हानी रसगृद्धि मटाडवा सारु ए तप कीधुं हतुं ते तो थयुं नहीं, ते चोथो अतिचार

५ पांचमो कायक्लेशतप अतिचार ते जे साधु, मुनीश्वर लोच करावे. तडकामां ताप सहन करे, शीत सहन करे, मांस, मछर, कुतरा प्रमुखना परिसह सहन करे,विकटासने स्थिर थइने ध्यान करे, विकटासनें सझाय करे, ए तप साधुने तो हररोजठे अने श्रावकने तो सामायक, पोसह अथवा जाप, नवकरवाली, पंचपरमेष्टिना ध्याननना अवसरमां कायक्लेश सहन करवानोठे त्यां ठति शक्तिये आगलथी वस्त्रादिक लपेटी सर्व शरीर, आवृत करीने क्रिया करे, अथवा कोमल आसने बेशीने जपादिक करे, ते कायक्लेशतप अतिचार

६ ठठो संलीनतातप अतिचार. ते जे साधुने तो सदा संलीनता तपठे तेथी सदा पोताना अंगोपाग संवरी राखे विना कारणें ह लावे नही अने श्रावक पण सामायक पोसहमा, अथवा पूजा ज पादिक अवसरें पोतानुं अंग संवरी विनयगुणयुक्त राखे एटले गप लांबा करवा अवष्टंन लेवो, गले हाथ देवो अने अंगोपाग मोडवादिक न करे एक शुद्ध उपयोगी अगोपाग सवरी जयणापू र्वक विनयगुणयुक्त प्रवर्त्तन करे, ते संलीनतातप कहीये. त्यां एवु तप करीने पूर्वोक्त दूषण लगाडे, तेने संलीनतातप अतिचार ठठो लागे. ए ठ प्रकारनां बाह्य तपना ठ अतिचार कह्या.

हवे ७ प्रकारनां अभ्यंतर तपनां ७ अतिचार कहेछे.

१ त्यां प्रथम प्रायश्चित्ततप अतिचार. ते जे साधु अथवा श्राव क, पोतपोताना व्रतमां दूषण लाग्युं जाणे, त्यारें ज्ञानी गुरुपासें आलोयणा ले. त्यां आलोयणा बे प्रकारनीछे. एक स्वल्पविषयी स्व ल्पकालीन. ते कोइएक नियमनो तथा व्रतादिकनो अतिचार लाग्यो जाणे, त्यारें तरत गुरुने पूछीने तेनुं प्रायश्चित्त लीये. बीजी बहुविषयी, बहुकालीन, उमरगत दूषणनी आलोयणा. तेमां जे एकाद नियमना दूषणनी आलोयणा तो, जे वर्त्तमानें शाणो हो य, तेने पूछी ले; पण ज्यारें आखी उमरनी महोटी आलोयणा लेवा ने चहाय, त्यारें शुद्धगुरु जे ज्ञान अने क्रिया ए बन्ने गुणोयें युक्त होय, तेनी पासें आलोयणा ले. कदापि ए बन्ने गुणोयें युक्त एवो शुद्धगुरु न मले, तो बहुश्रुत, ज्ञानवान्, शुद्ध नाषी, एवो पासत्थो प्रमुख होय, तेनी पासेंथी आलोयणा ले; पण जे उत्कृष्ट क्रियावंतज होय परंतु सिद्धांतना रहस्यने न जाणे तो तेनी पासेंथी न ले. कदापि ज्ञानवंत पासत्थो पण न मले तो बे गुणें युक्त अथवा एक गुणें युक्त शुद्धप्ररूपक ज्यां होय, त्यां तेनो शोध करीने तेने माटे बीजे गाम बीजे देश जाय. एवी रीतें खोज करतां पोताना निवासक्षेत्रथी सातशें योजन सुधी गुरुनी गवेष णा करे, तथा कालथी बार वर्ष पर्यंत गवेषणा करे. एम शोधतां शो धतां कदापि तेनुं आयुष्य पूर्ण थाय ; तो पण तेने आराधक कही यें. तथा गवेषणा करतामां ज्यां गुणवंत गुरु मले, त्यां ते गुरुनी पासें आलोयणा ले. एम करतां बे गुणयुक्त अथवा एक गुणयुक्त पण गुरु साधु पासत्थो अथवा ज्ञानवान् होय तेनी खबर, बार वर्ष सुधी खोज करतां न मली, त्यारें पछी कोइएक ठेकाणेथी एवी खबर मली के एक साधु, बहुश्रुत अने क्रियावंत हतो, ते साधु कोइ पापकर्मना उदयथी प्रतिपाति थइने अहींयांथी कोइ दूर देशांतर

जइने त्यां ते वेष छोडीने गृहस्थ थयोछे, तेनुं नाम पच्छाकडो श्रा
वक कहीये ते फलाणा गाममा छे. एवुं सांभलीने प्रायश्चित्ती त्या
जाय अने ते पच्छाकडाने एवो प्रतिबोध आपे के हे महानुभाव !
तमे तो रत्नत्रयिनी महोटी पदवी पामी करीने छोडी दीधी, ते सारुं
नही कर्युं. पण तेमां तमे शुं करो ? उदय छे ते महाबलवान्
छे तेना जोरथी तमारा परिणाम शिथिल थइ गया ते तो जे
थवानुं हतु ते थइ गयुं, ते माटे हवे काइ चेतो अने फरी पराक्र
मनें फोरवो. हमणां अशुभ कर्मना उदयनी अशाता पाछी हठ
वानो समय थयो जणायछे तेथी करीअमारो पण तमारी सार्थे
मेलाप थयोछे. वली तमोने तो महाज्ञाननो आधारछे तो
तमे देखी पेखीने केम भूलमा पडोछो ? ए माटे फरीथी खब
रदार थइ चारित्ररत्नने अंगीकार करो अने आत्माने तारो. आ
गल पण घणा पतित थइने फरी जागृत थयाछे,सर्व कर्मनो क्षय
करीने मुक्तिसुखने पाम्याछे ए माटे तमे पण चारित्र ल्यो, ढील
करो नही. एवो सारो उपदेश सांभलीने ते पच्छाकडा श्रावकना
परिणाम सुधरे, तो तेने चारित्र लेवरावी, पछी तेनी पासेथी प्रा
यश्चित्त ले. एम करतां पण ते भारे कर्मीछे, तेथी एम कहे के
भाइ साहेब ! गजपाखर ते रासभथी केम उछावी शकाशे ?
तेम माराथी आ निष्कलंक चारित्ररत्न न पले तो तेने जूठुं लीधा
थी शो गुण थाय ? जो ते विधि माफक निर्वहे नही तो हुं उलटो
महापापी अने अघोरी थाउं एकवार तो थयो छउं अने ए भाथ
लागी चूक्योछे. हवे एवी हकीकत कही अने ते भाइये सांभली
ते समये ते, ते पच्छाकडाने जिनमंदिरमा लेइ जाय अने त्यां तेने
सामायक लेवरावे पछी तेने वदन करीने तेनी पासेथी आलोय
णा ले, पण अज्ञानी पासेथी आलोयणा ले नही एवी रीते गुरुनी
गवेषणा करीने पण आलोयणा ले, ते एवी रीतें के जेम पोतानी

माता कने बालक पोताना मननी वात कहे; तेमांनी कांइ पण छुपावे नहीं, कोइ वात कहेतां लाजे पण नहीं, तेम साधक पण गुरुनी आगल जेवी वीती होय तेवी, निष्कपटी थइ करीने त्रणे योग जे मन,वचन,अने काया तेणे करी जे नूल थइ होय ते कही आपे. कोइ जाणीती वातमां छुपावे नहीं, तेने आलोयणा कही यें. पण जो कांइ छानुं राखीने कहे, तो ते तत्वदंनी थयो, तेथी तेनी शुद्धि थाय नहीं. एवा विधिपूर्वक साधकें गुरु आगल, सर्व पाप प्रगट करी दीधां; गुरुयें पण सर्व जाणी लीधुं. त्यार पछी गुरु, आगमना ज्ञाताछे ते विचारे के पापकर्म, चार रीतें लागेछे. १ आकुट्टी, २ दर्प्प, ३ कल्प, अने ४ प्रमाद. एवा चार प्रकारना पापमां आ आलोयणा लेनार कया पापना प्रायश्चित्तने लायक छे? एवो विवेक करीने यथायोग्य प्रायश्चित्ततप, गुरु आपे, ते शिष्य प्रसन्न थइने ले अने एवुं जाणे के गुरुजीयें मारा उपर महोटी कृपा करीने संकष्टमांथी छोडाव्यो अने मने घणो सुखी कर्यो. मने घणो शुद्ध उपाय बताव्यो. ए गुणना उपकारने कोण वि सरे? एवी रीतें हर्षित चित्तथी गुरुदत्त प्रायश्चित्ततप ले. पछी गुरुयें उपदिष्टकालने विषे जे तप आप्युं छे, ते तप लेखा शुद्ध पूरुं करी पहोचाडे. ते प्रायश्चित्ततपाचार कहीयें. अने जे गुरुयें आपेला मार्गने छोडीने पोतानी मतिकल्पनापूर्वक करे, अथवा प्रतिज्ञात कालथी वधारे काल,विना कारणे लगाडे, अथवा कमवेश करे अथवा प्रतिज्ञा, राजवेठ समान करे, पांच लोकमां अण छूटतुं करे अथवा शून्यचित्तथी करे अथवा फरी तेवुंज आश्रवसेवन करे, ते प्रायश्चित्ततप अतिचार कहीयें.

२ बीजो विनयतप अतिचार.ते जे साधु तथा श्रावक सहु पो त पोतानी दशा माफक विनयपूर्वक आगममां "आयरियउवज्झाए" इत्यादिक गुणवंत प्रत्यें विनय जे वंदन, नमन, अभ्युत्थानादि

भक्तिनक्तिक्रियारूप, ते आगमशैली प्रमाणे करे, ते विनयत पाचार कहीयें; अने जे आगमोक्तिथी कमवेश करे अथवा विपरीत करे अथवा अण ऊटतो करे अथवा दंनथी करे, ते विनयतप अतिचार कहीयें.

३ त्रीजो वैयावच्चतप अतिचार. ते जे साधु तथा श्रावकने, कुल, गण, चैत्य, संघ इत्यादिकनु जेनुं जेनुं जेवुं जेवुं वैयावच्च करवुं आगममां कह्युं छे, ते प्रमाणे तेनुं वैयावच्च करे त्यहां वै यावच्च ते रोगादिक विघ्न उपजे थके तेनो प्रतिकार जे उपाय वि विध औषध, अंगमर्दन, पथ्य, नक्तादि योगमां तत्पर थइ नक्तिपू र्वक करे, ते वैयावच्चतपाचार कहीये अने जे ते वैयावच्चनी वख ते काइ बानुं काढी टली जाय अथवा वैयावच्च खोटुं करे अने जे नक्ति विना अणऊटते करे अथवा दंनथी करे अथवा आचा र्यादिकना नयथी करे अथवा पोताने करवानुं, ते बीजा पासे करावे, तेने वैयावच्चतप अतिचार कहीये.

४ चोथो सज्झायतप अतिचार ते जे साधु तथा श्रावक पोत पोतानी योग्यता प्रमाणे श्रुतज्ञाननो अन्यास करे, ते सज्झायत पाचार कहीयें ते सज्झायतप, पाच प्रकारनुछे. १ वांचवु, २ पू छवुं, ३ परावर्त्तवु, ४ अनुप्रेक्षा, ५ धर्मकथा.

१ त्यां प्रथम वाचनसज्झाय. ते जे श्रुतनु नणवुं, नणा ववुं, ते वाचनसज्झाय कहीयें.

२ बीजी प्रछणासज्झाय ते जे नणवामा संदेह थयो, तेनुं शिष्यें पूछवुं अथवा गुरुये शिष्यने कहेवु ते प्रछणानामें बीजी सज्झाय

३ त्रीजी परावर्त्तनासज्झाय. ते जे पूर्वे नणेला श्रुतनु गणवु अथवा गुरुये शिष्यनी परावर्त्तना सानलवी अथवा परावर्त्तना करवानी प्रेरणा करवी, ते परावर्त्तनासज्झाय कहीये.

४ चोथी अनुप्रेक्षासज्झाय. ते जे पवित्रश्रुतना अर्थनुं चिंतव

न करवुं, अथवा परस्पर साधु श्रावकें मलीने चर्चा करवी अथवा गुरु, स्याद्वादशैलीपूर्वक उक्ति युक्तियें करी शिष्यनो संशय टाळे, ते अनुप्रेक्षासज्झाय.

५ पांचमी धर्मकथासज्झाय. ते जे रुचिवंत जीवने नाव करुणापूर्वक धर्मोपदेश कहे; धर्म प्रत्यें पमाडे, तेने धर्मकथासज्झाय कहीयें. ए पांचे प्रकारनी सज्झाय, शिष्य अथवा गुरु पोतानी दशा माफक यथागम करे, ते सज्झायतप कहीएं.

१ अथवा शिष्य विनयसहित हर्षित थको, गुरु आशय अटकल करतो, अनुकूल पणे आसनस्थ प्रशांत इत्यादि विधिपूर्वक वांचना ले तथा गुरु पण प्रसन्नचित्तथी तेनी योग्यता माफक प्रमाद तजीने अग्लानपणे वांचना आपे, ते बेउने वांचनासज्झाय तप.

२ तथा प्रछणासज्झाय. ते आसनस्थ गुरु जोइने शिष्य विनयादि गुणयुक्त आशय अनुकूल थइने पूछे. गुरु पण नाव दया धरीने धर्मरागथी घणी बुद्धिनो खरच करीने स्याद्वादशैली अनुसरतो, एवो जवाब आपे के, तेणे करी शिष्यना चित्तनो संशय तरत मटी जाय, ते बेउने प्रछणासज्झायतप कहीयें.

३ तथा परावर्त्तनासज्झाय. ते जे शिष्य, तीव्र उपयोगी थको पूर्व पठितशास्त्रने गुणे, तथा गुरु पण तीव्र उपयोगी थका सांनले, नून चूक कही दीए, ते बन्नेने परावर्त्तनासज्झायतप कहीयें.

४ अनुप्रेक्षासज्झाय. ते जे अर्थनी चर्चा, शिष्य सहाध्यायी अने बीजा पण निपुण साधु मलीने विविधयुक्ति जैनशैलीपूर्वक करे, त्यांक्यारेंक चर्चा करतां उक्ति युक्तिपूर्वक निर्णय थाय अने क्यारेंक निर्णय न थाय, त्यारें गुरु पण आगमानुकूल उपयोगी थइने विशद रीतें चर्चानो निर्णय करी आपे, ते बन्नेने पूर्वोक्त अनुप्रेक्षासज्झाय तप कहीयें.

५ तथा धर्मोपदेशसज्झाय. ते बन्नेने पूर्वोक्तविधिपूर्वक उपकार बुद्धिथी धर्मोपदेश आपे. त्यां जो पोताने उपदेश आप

वानी योग्यता होय, तो आगमशैलीपूर्वक उपदेश आपे, अने जो आगमशैलीना नय, निक्षेप, प्रमाण, सप्तभंगी प्रमुखमां तथा विध क्षयोपशम न होय, त्यारे जे बहुश्रुत उपदेश आपे, ते क्वचित् हर्षित अने विस्मय स्मेरमुख थको सांभळे. ते धर्मकथासज्झाय तप कहीयें. ए पाचे सज्झाय, कहेली रीतिथी विपरीत करे अथवा दंभथी करे, अथवा शिरबोजनिर्वाहन्याये करे, अथवा अभि मान धरीने करे, बीजानी ईर्ष्याथी करे, अथवा उतावळो उताव ळो गडबड करीने पूरी करे, अथवा पोतानी मरजी माफक करे, अथवा यश अर्थें करे, ते सज्झायतप अतिचार कहिये

५ पांचमो ध्यानतप अतिचार ते जे धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बन्ने मुक्तिदायकछे. त्यां प्रथम साधुने धर्मध्यानना चारे पाद ध्याववानाछे ते धर्मध्यानने ध्यावता ध्यावतां, ज्यारें परिपूर्ण अप्र मत्त नामे उत्कृष्ट स्थाने पहोंचे, त्यार पछी आठमा गुणस्थानक ने पामे. त्यां शुक्लध्यानना प्रथम पादनुं ध्यान करे, ते ध्यावतां थकां आगळ बारमुं गुणस्थानक पामे, तेवारे शुक्लध्यानना बीजा पादनुं ध्यान करे, ते ध्यावता थका बारमुं गुणस्थानक ज्यारें पूरुं थइ रहे, त्यारे चारे घनघातीकर्म क्षय थइ जाय, एटले केवलज्ञान पामे, तेर मुं गुणस्थानक पामे अने त्यार पछी पोताना आयुष्यनी स्थिति मा फक तेरमे गुणस्थानकें रहे. पछी जेवारे तेरमा गुणस्थानकनो शेष अं तरमुहूर्त्त काल रहे, ते वारें शुक्लध्यानना शेष बे पाद ध्यावे, त्यां चउ दमा गुणस्थानके पहोचे, ते स्थलें सर्वकर्मनो क्षय करीने मुक्ति सुख पामे, ए साधुना ध्याननी पद्धति छे तथा श्रावकने तो धर्म ध्यान अने शुक्लध्यानने ध्याववानी योग्यता नथी जे कारणे मूल घाती चार कषाय उदयवंत सरुछे, ए माटे ते श्रावक, अनित्य अशरणादि बारे भावनाने एक चित्ते शुभ आर्त्तरूपें ध्यावे. ते भा वना करतां, कोइ उत्तम जीवने उपयोगनी निर्मलताथी जयती

नता थाय, तेनाथी धर्मध्याननी समाप्ति थाय. समाप्ति ते एम के, जेम सूर्योदय पहेलां अरुणोदय आन्नास मात्र होय, ते सूर्य नथी पण एथी सूर्योदयजन्य कार्य, घट पटादि सर्वनो अनुन्नव थइ जाय. तेम श्रावकने पण न्नावनाजन्य शुद्धोपयोगथी धर्मध्याननी समाप्ति फलनकरूप धर्मध्यानसरखो अनुन्नव थाय. मुनिन्नावनो आस्वादमात्र पामे, पण ध्यानपदनी पूर्णता पामे नहीं, ए जे ध्यानयोग, ते ध्यानतप कहीयें. अने जे ए ध्यानमां बीजो विकल्प, योगचपलतादिक करें, ते ध्यानतपअतिचार कहीयें.

६ बछो त्यागतप अतिचार. त्यां त्यागतपना बे न्नेदछे. एक इव्यत्याग, अने बीजो न्नावत्याग. त्यां इव्यत्याग, ते साधु तथा श्रावकने पोत पोतानी दशा माफक आहार उपधि तथा नवविध परिग्रहरूप इंडियसुखनो तथा अवस्थाविशेषें देहनो पण त्याग करे, वोसरावे, ते इव्यथी त्यागतप कहीयें. अने जे विषयतृष्णा तथा कषाय जे क्रोधमानादिक, तेनो जे त्याग करे, तेने न्नावत्यागतप कहियें. ए रीतें जिनागममां न्नावत्याग तप कह्युंछे. तेनो बति शक्तियें त्याग न करे, अथवा विधिरहित करे, अथवा तत्वप्रतीति धरी करे नहीं, अथवा पांच माणसमां अणबूटते करे, अथवा निदान धरी करे, ते त्यागतप अतिचार कहीयें ॥ इति तपाचारस्य द्वादशातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री वीर्याचारातिचारत्रय प्रारंन्नः ॥

१ त्यहां वीर्याचार. ते जीवने मन, वचन अने काया, ए त्रणे योगनुं सामर्थ्य जे शक्तिविशेष, ते वीर्य कहीयें. त्यां साधु तथा श्रावक, पोत पोताना गुण स्थानक माफक तथा पोत पोतानी द

शा माफक जे जे धर्मकरणी करे, ते मनादि त्रणे योगनुं वीर्य फोरवीने करे, सर्व धर्मकरणीमां जेवो जेवो वीर्योल्लास होय, ते वुं तेवु ते फल पामे जे माटे गुणस्थान, योगस्थान अने संय मस्थानना भेद पडे ते वीर्यनी प्रबलता अने मंदताथी चढवु अ ने पडवुं थायछे. त्यां प्रथम काययोगथी सर्वधर्मकरणीमा पोताना अंगनुं बल, वीर्य, फोरववामां जूल न करे तथा मनोयोगथी उ त्साह, भक्ति, उमंग तथा प्यार, बहु धरतो करे अने वचनयोगथी धर्मकरणीनी प्रशंसा घणा मानथी करे; धर्मनी उन्नति, उपमा आपी आपीने करे अने घणा जीवने धर्मसन्मुख करे, पोता ना आत्माने धर्मप्राप्ति सराहे, एटले वखाणे के, धन्य मारुं भा ग्य, के मने श्री जिनेश्वरजीना मार्गनी धर्मप्रवृत्ति मली! हवे मने जवडु खनो भय नथी इत्यादि त्रिकरण योगशक्ति धर्मकरणी मां वीर्योल्लास फोरवे, ते वीर्याचारनो आराधक थोडा कालमा अ क्षय लीला पामे. जो थोडी पण दानादि करणीमा वीर्योल्लास घणो होय तो, महोटी करणीथी पण वधारे फल पामे.

अने धर्मकरणीमा जे छति शक्तिये काययोगे आलस्य करे, का यबल फोरवे नहीं अथवा राजवेठ समान करे, काइ पण भक्ति विना भयादि कारणे करे अथवा अभिमानथी करे अथवा देखा देखीये करे अथवा ते लालची, अनुष्ठानादिक वांछाथी करे, ते काययोगवीर्याचारातिचार प्रथम जाणवो

२ तथा वचनयोगें उत्साहथी सज्झाय स्तवनादि करे नहीं, मंद मंद जाषाथी गडबड करीने गणगणानी रीतें कहे,तथा बीजो कोइ धर्मकार्य करतो होय, तेने दुष्करता कही देखाडे. जे ए धर्म काम छे, ते घणुं मुश्केल छे, तमाराथी पूरुं पडशे नहीं माटे प्र थमथीज जोइ विचारीने करजो ए प्रमाणे कहीने समजीने पण उत्साहभंग करे तथा धर्मकार्य करता अथवा करीने पछी खेदना

वचन कहे जे, ए धर्मकार्य कर्युं, पण ए धर्मकार्य करतां महोटी तस्दी पाम्या. ए काम घणुंज कठिन छे. करशो, तेज जाणशो. मने वीती ते मारुं मन जाणेछे, कोइ सहाय पण न थयुं, एने कोइयें उपाडयुं नहीं. त्यारें शुं करीयें ? अमे कोने कहीयें. अधिकारी थया त्यारें सर्व अमोने करवुं पड्युं, बीजुं शुं कहीयें? आ धर्मकार्य करतामां आ शरीर, दुर्बल थइ गयुंछे, ते हजी सुधी ठेकाणे आव्युं नथी. एवां वचन कहीने घणानां चित्त, भंग करे. इत्यादि हीन तानां वचन कहे, ते वचनयोगवीर्याचारातिचार बीजो जाणवो.

३ तथा मनोयोगें सीदातो थको करे अथवा उत्साह विना करे, जे आ कामनी वेठ क्यारें उतरशे ? ए काम हाथमां नहीं लेत तो सारुं थात. नाहक आ काम में उपाड्युं तो खरुं, पण हवे कोइ बीजो माथे ले, तो हुं मूकी आपुं. कोइ रीतें छूटे तो सारुं थइ जाय अथवा ए काममां महेनत घणी थशे, पैशो घणो खरचा शे, शुं करीयें ? वगर विचारे कर्युं तो आवी फसाया ; हवे फरी एवी वातमां पडशुं नहीं अथवा आ तप, क्रियादिक, कठिन थयां. हवे फरी जोइने आदर करशुं ! इत्यादिक कुविकल्प मनमां करे, ते मनोयोगवीर्याचारातिचार त्रीजो जाणवो ॥ इति वीर्याचा रातिचारत्रयस्वरूपं संपूर्णम् ॥

ए प्रमाणे सर्व साधु अने श्रावकना धर्मना सर्व मली एक शो चोवीश अतिचारनुं विवरण कह्युं. इति श्री सम्यक्त्वमूल बा दशव्रतविवरणं समाप्तम् ॥ एवी विगतथी दोष मटाडीने जे व्रत पाले, ते परमकल्याणमाला वरे ॥

॥ दोहा ॥

शत अढारे उपरें, वीते वर्ष छवीश ;
मगशिर शुदि पंचमि गुरु, पूरण भई जगीश ॥ १ ॥

सुरसरिताके तट वसे, पामज्ञिपुर शुजथान ;
जिहां सुदर्शन साधुवर, पाया केवलज्ञान ॥ २ ॥
ब्रह्मचारि शिर सेहरो, थूलिजद्र गुणधाम ,
जिण कोश्या प्रतिबूझवी, जिणपुर राख्यु नाम ॥ ३ ॥
तिण पुर साह शिरोमणि, सोमचद अनिधान ,
दाता जुक्ता शुजमति, चातुरजन परधान ॥ ४ ॥
तसु सुत जद्रक व्रतरुचि, धर्में दृढमतिमान् ,
हेमचंद नामें निपुण, हाटक सम गुणवान् ॥ ५ ॥
धर्मकथा सुणिने जद्र, व्रतरुचि तव कहे साह :
लिख दीजें व्रतकी विगत, विस्तरसे हम चाह ॥ ६ ॥
समकित सु व्रत वारकी, विगत पुनी अतिचार ,
वृद्धपरपर शास्त्र बहु, लिखि कीनो विस्तार ॥ ७ ॥
आगमजलधि अपार हे, मुज मति नौका तुछ ,
कौं निवहे जारों नदी, पकरे जेडी पुछ ॥ ८ ॥
आगे वहुश्रुतने लिखे, विरतो वात विशेष ,
वाकू दिख जापा लिखूं, जनमे कौन विशेष ॥ ९ ॥
तौजी तसु आसय अगम, जो विन पाय अशुद्ध ,
लिखिउं मिछा डुक्कडं, साखी गुरुजन वुद्ध ॥ १० ॥
अल्पमती अज्ञान हूं, जाणुं न वहुत रहस्य ,
कृपा करी मोपरि कृती, करजो शुद्ध अवश्य ॥ ११ ॥
विगत एह व्रत वारकी, लिखी यथामति योग ;
व्रतरुचि विविध अज्यास करि, करजो तसु परिजोग ॥ १२ ॥
काल अनत अनंतमय, जो पुग्गल परिअट्ट ,
सोजी अनँतानत गये, जनम मरण संघट्ट ॥ १३ ॥
परमरिपू परमाद हे, तसु जय करण उपाय ,
निधियुत मानव जव लह्यो, तौजि न चेतो काय ॥ १४ ॥

भूले भव जो एह तुम, बहुरि न आवे हह ;
तौ चेतो चितमें चतुर ! निसुणी श्रुत परमह ॥ १५ ॥
सुविहित सूरि सिरोमणि, नागरवंदित पाय ;
(श्री) पुण्यसागर सूरिंद ते, तपगछपति सुखदाय ॥ १६ ॥
तसु आणा सिर धारतां, वारतां विषय कषाय ;
श्रुतधारी उपगारि बहु, (श्री) ज्ञान सागर उवझाय ॥ १७ ॥
तासु शिष्य पूरव तणा, तीरथ भेटण काज ;
किय प्रयाण शुभ दिन घडी, शुभ शकुनें शुभ साज ॥ १८ ॥
तीरथ फरसत आविया, पटणा नयर सुगाय ;
परमानँद भयो वंदतां, शेठ मुनीसर पाय ॥ १९ ॥
दिन केताइक तिहां रहि, लिख्यो सुव्रतविस्तार ;
वज्रोत्कीर्णमणिसूत परि, बहु श्रुतके उपगार ॥ २० ॥
इह विधि जो व्रत धारशे, वारशे विषयकषाय ;
विलसे ज्ञान उद्योतमय, आनँदघन सुखदाय ॥ २१ ॥